

॥ श्री राम चरित मानस ॥

.. Shri Ram Charit Manas ..

sanskritdocuments.org

August 12, 2016

.. Shri Ram Charit Manas ..

॥ श्री राम चरित मानस ॥

Document Information

Text title : Shri Ram Charit Manas - Balkand

File name : manas1_i.itx

Location : doc_z_otherlang_hindi

Author : Goswami Tulasidas

Language : Hindi

Subject : philosophy/hinduism/religion

Transliterated by : Mr. Balram J. Rathore, Ratlam, M.P., a retired railway driver

Description-comments : Awadhi, Converted from ISCII to ITRANS

Acknowledge-Permission: Dr. Vineet Chaitanya, vc@iiit.net

Latest update : March 12, 2015

Send corrections to : Sanskrit@cheerful.com

Site access : <http://sanskritdocuments.org>

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted for promotion of any website or individuals or for commercial purpose without permission.

Please help to maintain respect for volunteer spirit.

August 12, 2016

sanskritdocuments.org

॥ श्री राम चरित मानस ॥

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

श्रीजानकीवल्लभो विजयते

श्री रामचरित मानस

प्रथम सोपान

(बालकाण्ड)

श्लोक

वर्णानामर्थसंघानां रसानां छन्दसामपि।

मङ्गलानां च कर्त्तारौ वन्दे वाणीविनायकौ ॥ १ ॥

भवानीशङ्करौ वन्दे श्रद्धाविश्वासरूपिणौ।

याभ्यां विना न पश्यन्ति सिद्धाःस्वान्तःस्थमीश्वरम् ॥ २ ॥

वन्दे बोधमयं नित्यं गुरुं शङ्कररूपिणम्।

यमाश्रितो हि वक्रोऽपि चन्द्रः सर्वत्र वन्द्यते ॥ ३ ॥

सीतारामगुणग्रामपुण्यारण्यविहारिणौ।

वन्दे विशुद्धविज्ञानौ कवीश्वरकपीश्वरौ ॥ ४ ॥

उद्भवस्थितिसंहारकारिणीं क्लेशहारिणीम्।

सर्वश्रेयस्करीं सीतां नतोऽहं रामवल्लभाम् ॥ ५ ॥

यन्मायावशवर्ति विश्वमखिलं ब्रह्मादिदेवासुरा

यत्सत्त्वादमृषैव भाति सकलं रज्जौ यथाहेर्भ्रमः।

यत्पादप्लवमेकमेव हि भवाम्भोधेस्तितीर्षावतां

वन्देऽहं तमशेषकारणपरं रामारव्यमीशं हरिम् ॥ ६ ॥

नानापुराणनिगमागमसम्मतं यद्

रामायणे निगदितं क्वचिदन्यतोऽपि।

स्वान्तःसुखाय तुलसी रघुनाथगाथा-

भाषानिबन्धमतिमञ्जुलमातनोति ॥ ७ ॥

सो. जो सुमिरत सिधि होइ गन नायक करिबर बदन।

करउ अनुग्रह सोइ बुद्धि रासि सुभ गुन सदन ॥ १ ॥

मूक होइ बाचाल पंगु चढइ गिरिबर गहन।

जासु कृपाँ सो दयाल द्रवउ सकल कलि मल दहन ॥ २ ॥

नील सरोरुह स्याम तरुन अरुन बारिज नयन।

करउ सो मम उर धाम सदा छीरसागर सयन ॥ ३ ॥

कुंद इंदु सम देह उमा रमन करुना अयन।

जाहि दीन पर नेह करउ कृपा मर्दन मयन ॥ ४ ॥

बंदउ गुरु पद कंज कृपा सिंधु नररूप हरि।

महामोह तम पुंज जासु बचन रवि कर निकर ॥ ५ ॥

बंदउ गुरु पद पदुम परागा। सुरुचि सुवास सरस अनुरागा ॥

अमिय मूरिमय चूरन चारू। समन सकल भव रुज परिवारू ॥

सुकृति संभु तन विमल विभूती। मंजुल मंगल मोद प्रसूती ॥

जन मन मंजु मुकुर मल हरनी। किँ तिलक गुन गन बस करनी ॥

श्रीगुर पद नख मनि गन जोती। सुमिरत दिव्य दृष्टि हियँ होती ॥

दलन मोह तम सो सप्रकासू। बडे भाग उर आवइ जासू ॥

उघरहिँ विमल बिलोचन ही के। मिटहिँ दोष दुख भव रजनी के ॥

सूझहिँ राम चरित मनि मानिक। गुपुत प्रगट जहँ जो जेहि खानिक ॥

दो. जथा सुअंजन अंजि दृग साधक सिद्ध सुजान।

कौतुक देखत सैल बन भूतल भूरि निधान ॥ १ ॥

गुरु पद रज मृदु मंजुल अंजन। नयन अमिअ दृग दोष विभंजन ॥

तेहिँ करि विमल विवेक बिलोचन। बरनउँ राम चरित भव मोचन ॥

बंदउँ प्रथम महीसुर चरना। मोह जनित संसय सब हरना ॥

सुजन समाज सकल गुन खानी। करउँ प्रनाम सप्रेम सुबानी ॥

साधु चरित सुभ चरित कपासू। निरस बिसद गुनमय फल जासू ॥

जो सहि दुख परछिद्र दुरावा। बंदनीय जेहिँ जग जस पावा ॥

मुद मंगलमय संत समाजू। जो जग जंगम तीरथराजू ॥

राम भक्ति जहँ सुरसरि धारा। सरसइ ब्रह्म बिचार प्रचारा ॥

विधि निषेधमय कलि मल हरनी। करम कथा रबिनंदनि बरनी ॥

हरि हर कथा बिराजति बेनी। सुनत सकल मुद मंगल देनी ॥

बटु बिस्वास अचल निज धरमा। तीरथराज समाज सुकरमा ॥

सबहिँ सुलभ सब दिन सब देसा। सेवत सादर समन कलेसा ॥

अकथ अलौकिक तीरथराऊ। देइ सद्य फल प्रगट प्रभाऊ ॥

दो. सुनि समुझहिं जन मुदित मन मज्जहिं अति अनुराग।
लहहिं चारि फल अछत तनु साधु समाज प्रयाग ॥ २ ॥

मज्जन फल पेखिअ ततकाला। काक होहिं पिक बकउ मराला ॥
सुनि आचरज करै जनि कोई। सतसंगति महिमा नहिं गोई ॥
बालमीक नारद घटजोनी। निज निज मुखनि कही निज होनी ॥
जलचर थलचर नभचर नाना। जे जड चेतन जीव जहाना ॥
मति कीरति गति भूति भलाई। जब जेहिं जतन जहाँ जेहिं पाई ॥
सो जानब सतसंग प्रभाऊ। लोकहुँ बेद न आन उपाऊ ॥
बिनु सतसंग बिबेक न होई। राम कृपा बिनु सुलभ न सोई ॥
सतसंगत मुद मंगल मूला। सोइ फल सिधि सब साधन फूला ॥
सठ सुधरहिं सतसंगति पाई। पारस परस कुघात सुहाई ॥
बिधि बस सुजन कुसंगत परहीं। फनि मनि सम निज गुन अनुसरहीं ॥
बिधि हरि हर कबि कोबिद बानी। कहत साधु महिमा सकुचानी ॥
सो मो सन कहि जात न कैसैं। साक बनिक मनि गुन गन जैसैं ॥

दो. बंदउँ संत समान चित हित अनहित नहिं कोइ।
अंजलि गत सुभ सुमन जिमि सम सुगंध कर दोइ ॥ ३(क) ॥

संत सरल चित जगत हित जानि सुभाउ सनेहु।
बालबिनय सुनि करि कृपा राम चरन रति देहु ॥ ३(ख) ॥

बहुरि बंदि खल गन सतिभाएँ। जे बिनु काज दाहिनेहु वाएँ ॥
पर हित हानि लाभ जिन्ह करैं। उजरैं हरष विषाद बसेरैं ॥
हरि हर जस राकेस राहु से। पर अकाज भट सहसबाहु से ॥
जे पर दोष लखहिं सहसाखी। पर हित घृत जिन्ह के मन माखी ॥
तेज कृसानु रोष महिषेसा। अघ अवगुन धन धनी धनेसा ॥
उदय केत सम हित सबही के। कुंभकरन सम सोवत नीके ॥
पर अकाजु लागि तनु परिहरहीं। जिमि हिम उपल कृषी दलि गरहीं ॥
बंदउँ खल जस सेष सरोषा। सहस बदन बरनइ पर दोषा ॥
पुनि प्रनवउँ पृथुराज समाना। पर अघ सुनइ सहस दस काना ॥
बहुरि सक्र सम बिनवउँ तेही। संतत सुरानीक हित जेही ॥

बचन बज्र जेहि सदा पिआरा। सहस नयन पर दोष निहारा ॥

दो. उदासीन अरि मीत हित सुनत जरहिं खल रीति।

जानि पानि जुग जोरि जन विनती करइ सप्रीति ॥ ४ ॥

मैं अपनी दिसि कीन्ह निहोरा। तिन्ह निज ओर न लाउब भोरा ॥
बायस पलिअहिं अति अनुरागा। होहिं निरामिष कबहुँ कि कागा ॥
बंदउँ संत असज्जन चरना। दुखप्रद उभय बीच कछु बरना ॥
बिछुरत एक प्रान हरि लेहीं। मिलत एक दुख दारुन देहीं ॥
उपजहिं एक संग जग माहीं। जलज जोंक जिमि गुन बिलगाहीं ॥
सुधा सुरा सम साधू असाधू। जनक एक जग जलधि अगाधू ॥
भल अनभल निज निज करतूती। लहत सुजस अपलोक विभूती ॥
सुधा सुधाकर सुरसरि साधू। गरल अनल कलिमल सरि व्याधू ॥
गुन अवगुन जानत सब कोई। जो जेहि भाव नीक तेहि सोई ॥

दो. भलो भलाइहि पै लहइ लहइ निचाइहि नीचु।

सुधा सराहिअ अमरताँ गरल सराहिअ मीचु ॥ ५ ॥

खल अघ अगुन साधू गुन गाहा। उभय अपार उदधि अवगाहा ॥
तेहि तें कछु गुन दोष बखाने। संग्रह त्याग न विनु पहिचाने ॥
भलेउ पोच सब विधि उपजाए। गनि गुन दोष बेद बिलगाए ॥
कहहिं बेद इतिहास पुराना। विधि प्रपंचु गुन अवगुन साना ॥
दुख सुख पाप पुन्य दिन राती। साधु असाधु सुजाति कुजाती ॥
दानव देव ऊँच अरु नीचू। अमिअ सुजीवनु माहुरु मीचू ॥
माया ब्रह्म जीव जगदीसा। लच्छि अलच्छि रंक अवनीसा ॥
कासी मग सुरसरि क्रमनासा। मरु मारव महिदेव गवासा ॥
सरग नरक अनुराग विरागा। निगमागम गुन दोष विभागा ॥

दो. जड चेतन गुन दोषमय बिस्व कीन्ह करतार।

संत हंस गुन गहहिं पय परिहरि बारि बिकार ॥ ६ ॥

अस विवेक जब देइ बिधाता। तब तजि दोष गुनहिं मनु राता ॥
काल सुभाउ करम बरिआई। भलेउ प्रकृति बस चुकइ भलाई ॥
सो सुधारि हरिजन जिमि लेहीं। दलि दुख दोष बिमल जसु देहीं ॥
खलउ करहिं भल पाइ सुसंगू। मिटइ न मलिन सुभाउ अभंगू ॥

लखि सुबेष जग बंचक जेऊ। बेष प्रताप पूजिअहिं तेऊ ॥
उधरहिं अंत न होइ निबाहू। कालनेमि जिमि रावन राहू ॥
किएहुँ कुबेष साधु सनमानू। जिमि जग जामवंत हनुमानू ॥
हानि कुसंग सुसंगति लाहू। लोकहुँ बेद विदित सब काहू ॥
गगन चढइ रज पवन प्रसंगा। कीचहिं मिलइ नीच जल संग्गा ॥
साधु असाधु सदन सुक सारीं। सुमिरहिं राम देहि गनि गारी ॥
धूम कुसंगति कारिख होई। लिखिअ पुरान मंजु मसि सोई ॥
सोइ जल अनल अनिल संघाता। होइ जलद जग जीवन दाता ॥

दो. ग्रह भेषज जल पवन पट पाइ कुजोग सुजोग।

होहि कुबस्तु सुबस्तु जग लखहिं सुलच्छन लोग ॥ ७(क) ॥

सम प्रकास तम पाख दुहुँ नाम भेद विधि कीन्ह।

ससि सोषक पोषक समुझि जग जस अपजस दीन्ह ॥ ७(ख) ॥

जड चेतन जग जीव जत सकल राममय जानि।

बंदउँ सब के पद कमल सदा जोरि जुग पानि ॥ ७(ग) ॥

देव दनुज नर नाग खग प्रेत पितर गंधर्व।

बंदउँ किंनर रजनिचर कृपा करहु अब सर्व ॥ ७(घ) ॥

आकर चारि लाख चौरासी। जाति जीव जल थल नभ बासी ॥

सीय राममय सब जग जानी। करउँ प्रनाम जोरि जुग पानी ॥

जानि कृपाकर किंकर मोहू। सब मिलि करहु छाडि छल छोहू ॥

निज बुधि बल भरोस मोहि नाहीं। तातें विनय करउँ सब पाही ॥

करन चहउँ रघुपति गुन गाहा। लघु मति मोरि चरित अवगाहा ॥

सूझ न एकउ अंग उपाऊ। मन मति रंक मनोरथ राऊ ॥

मति अति नीच ऊँचि रुचि आछी। चहिअ अमिअ जग जुरइ न छाछी ॥

छमिहहिं सज्जन मोरि ठिठाई। सुनिहहिं बालबचन मन लाई ॥

जौ बालक कह तोतरि बाता। सुनहिं मुदित मन पितु अरु माता ॥

हँसिहहिं कूर कुटिल कुबिचारी। जे पर दूषन भूषनधारी ॥

निज कवित केहि लाग न नीका। सरस होउ अथवा अति फीका ॥

जे पर भनिति सुनत हरषाही। ते वर पुरुष बहुत जग नाहीं ॥

जग बहु नर सर सरि सम भाई। जे निज बाढि बढहिं जल पाई ॥

सज्जन सकृत सिंधु सम कोई। देखि पूर बिधु बाढइ जोई ॥

दो. भाग छोट अभिलाषु बड करउँ एक बिस्वास।

पैहहिं सुख सुनि सुजन सब खल करहहिं उपहास ॥ ८ ॥

खल परिहास होइ हित मोरा। काक कहहिं कलकंठ कठोरा ॥
 हंसहि बक दादुर चातकही। हँसहिं मलिन खल बिमल बतकही ॥
 कवित रसिक न राम पद नेहू। तिन्ह कहँ सुखद हास रस एहू ॥
 भाषा भनिति भोरि मति मोरी। हँसिबे जोग हँसें नहिं खोरी ॥
 प्रभु पद प्रीति न सामुझि नीकी। तिन्हहि कथा सुनि लागहि फीकी ॥
 हरि हर पद रति मति न कुतरकी। तिन्ह कहुँ मधुर कथा रघुवर की ॥
 राम भगति भूषित जियँ जानी। सुनिहहिं सुजन सराहि सुबानी ॥
 कवि न होउँ नहिं बचन प्रवीनू। सकल कला सब बिद्या हीनू ॥
 आखर अरथ अलंकृति नाना। छंद प्रबंध अनेक विधाना ॥
 भाव भेद रस भेद अपारा। कवित दोष गुन बिबिध प्रकारा ॥
 कवित बिबेक एक नहिं मोरें। सत्य कहउँ लिखि कागद कोरे ॥

दो. भनिति मोरि सब गुन रहित बिस्व विदित गुन एक।

सो विचारि सुनिहहिं सुमति जिन्ह कें बिमल बिबेक ॥ ९ ॥

एहि महँ रघुपति नाम उदारा। अति पावन पुरान श्रुति सारा ॥
 मंगल भवन अमंगल हारी। उमा सहित जेहि जपत पुरारी ॥
 भनिति बिचित्र सुकवि कृत जोऊ। राम नाम बिनु सोह न सोऊ ॥
 बिधुबदनी सब भाँति सँवारी। सोन न बसन बिना बर नारी ॥
 सब गुन रहित कुकवि कृत बानी। राम नाम जस अंकित जानी ॥
 सादर कहहिं सुनिहँ बुध ताही। मधुकर सरिस संत गुनग्राही ॥
 जदपि कवित रस एकउ नाही। राम प्रताप प्रकट एहि माहीं ॥
 सोइ भरोस मोरें मन आवा। केहिं न सुसंग बडप्पनु पावा ॥
 धूमउ तजइ सहज करुआई। अगरु प्रसंग सुगंध बसाई ॥
 भनिति भदेस बस्तु भलि बरनी। राम कथा जग मंगल करनी ॥

छं. मंगल करनि कलि मल हरनि तुलसी कथा रघुनाथ की ॥

गति कूर कविता सरित की ज्यों सरित पावन पाथ की ॥

प्रभु सुजस संगति भनिति भलि होइहि सुजन मन भावनी ॥

भव अंग भूति मसान की सुमिरत सुहावनि पावनी ॥

दो. प्रिय लागिहि अति सबहि मम भनिति राम जस संग।
दारु बिचारु कि करइ कोउ बंदिअ मलय प्रसंग ॥ १०(क) ॥

स्याम सुरभि पय बिसद अति गुनद करहिं सब पान।
गिरा ग्राम्य सिय राम जस गावहिं सुनहिं सुजान ॥ १०(ख) ॥

मनि मानिक मुकुता छवि जैसी। अहि गिरि गज सिर सोह न तैसी ॥
नृप किरिट तरुनी तनु पाई। लहहिं सकल सोभा अधिकाई ॥
तैसेहिं सुकवि कवित बुध कहहीं। उपजहिं अनत अनत छवि लहहीं ॥
भगति हेतु विधि भवन बिहाई। सुमिरत सारद आवति धाई ॥
राम चरित सर बिनु अन्हवाएँ। सो श्रम जाइ न कोटि उपाएँ ॥
कवि कोविद अस हृदयँ बिचारी। गावहिं हरि जस कलि मल हारी ॥
कीन्हें प्राकृत जन गुन गाना। सिर धुनि गिरा लगत पछिताना ॥
हृदय सिंधु मति सीप समाना। स्वाति सारदा कहहिं सुजाना ॥
जौं बरषइ बर बारि बिचारू। होहिं कवित मुकुतामनि चारू ॥

दो. जुगुति बेधि पुनि पोहिअहिं रामचरित बर ताग।
पहिरहिं सज्जन बिमल उर सोभा अति अनुराग ॥ ११ ॥

जे जनमे कलिकाल कराला। करतब बायस बेष मराला ॥
चलत कुपंथ बेद मग छाँडै। कपट कलेवर कलि मल भाँडै ॥
बंचक भगत कहाइ राम के। किंकर कंचन कोह काम के ॥
तिन्ह महँ प्रथम रेख जग मोरी। धींग धरमध्वज धंधक धोरी ॥
जौं अपने अवगुन सब कहऊँ। बाढइ कथा पार नहिं लहऊँ ॥
ताते मै अति अलप बखाने। थोरे महुँ जानिहहिं सयाने ॥
समुझि विविधि विधि बिनती मोरी। कोउ न कथा सुनि देखि खोरी ॥
एतेहु पर करिहहिं जे असंका। मोहि ते अधिक ते जड मति रंका ॥
कवि न होऊँ नहिं चतुर कहावउँ। मति अनुरूप राम गुन गावउँ ॥
कहँ रघुपति के चरित अपारा। कहँ मति मोरि निरत संसारा ॥
जेहिं मारुत गिरि मेरु उडाहीं। कहहु तूल केहि लेखे माहीं ॥
समुझत अमित राम प्रभुताई। करत कथा मन अति कदराई ॥

दो. सारद सेस महेस विधि आगम निगम पुरान।

नेति नेति कहि जासु गुन करहि निरंतर गान ॥ १२ ॥

सब जानत प्रभु प्रभुता सोई। तदपि कहें बिनु रहा न कोई ॥
 तहाँ बेद अस कारन राखा। भजन प्रभाउ भाँति बहु भाषा ॥
 एक अनीह अरूप अनामा। अज सच्चिदानंद पर धामा ॥
 व्यापक बिस्वरूप भगवाना। तेहि धरि देह चरित कृत नाना ॥
 सो केवल भगतन हित लागी। परम कृपाल प्रनत अनुरागी ॥
 जेहि जन पर ममता अति छोहू। जेहि करुना करि कीन्ह न कोहू ॥
 गई बहोर गरीब नेवाजू। सरल सबल साहिब रघुराजू ॥
 बुध बरनहि हरि जस अस जानी। करहि पुनीत सुफल निज बानी ॥
 तेहि बल मैं रघुपति गुन गाथा। कहिहउँ नाइ राम पद माथा ॥
 मुनिन्ह प्रथम हरि कीरति गाई। तेहि मग चलत सुगम मोहि भाई ॥

दो. अति अपार जे सरित बर जौं नृप सेतु कराहि।

चढि पिपीलिकउ परम लघु बिनु श्रम पारहि जाहिं ॥ १३ ॥

एहि प्रकार बल मनहि देखी। करिहउँ रघुपति कथा सुहाई ॥
 व्यास आदि कवि पुंगव नाना। जिन्ह सादर हरि सुजस बखाना ॥
 चरन कमल बंदउँ तिन्ह केरे। पुरवहुँ सकल मनोरथ मेरे ॥
 कलि के कबिन्ह करउँ परनामा। जिन्ह बरने रघुपति गुन ग्रामा ॥
 जे प्राकृत कवि परम सयाने। भाषाँ जिन्ह हरि चरित बखाने ॥
 भए जे अहिहि जे होइहहिं आगें। प्रनवउँ सबहिं कपट सब त्यागें ॥
 होहु प्रसन्न देहु बरदानू। साधु समाज भनिति सनमानू ॥
 जो प्रबंध बुध नहिं आदरहीं। सो श्रम बादि बाल कवि करहीं ॥
 कीरति भनिति भूति भलि सोई। सुरसरि सम सब कहँ हित होई ॥
 राम सुकीरति भनिति भदेसा। असमंजस अस मोहि अँदेसा ॥
 तुम्हरी कृपा सुलभ सोउ मोरे। सिअनि सुहावनि टाट पटोरे ॥

दो. सरल कबित कीरति बिमल सोइ आदरहिं सुजान।

सहज बयर विसराइ रिपु जो सुनि करहिं बखान ॥ १४(क) ॥

सो न होइ बिनु बिमल मति मोहि मति बल अति थोर।

करहु कृपा हरि जस कहउँ पुनि पुनि करउँ निहोर ॥ १४(ख) ॥

कवि कोबिद रघुबर चरित मानस मंजु मराल।

बाल विनय सुनि सुरुचि लखि मोपर होहु कृपाल ॥ १४(ग) ॥

सो. बंदउँ मुनि पद कंजु रामायन जेहिं निरमयउ ।

सरखर सुकोमल मंजु दोष रहित दूषन सहित ॥ १४(घ) ॥

बंदउँ चारिउ बेद भव बारिधि बोहित सरिस ।

जिन्हहि न सपनेहुँ खेद बरनत रघुवर बिसद जसु ॥ १४(ङ) ॥

बंदउँ विधि पद रेनु भव सागर जेहि कीन्ह जहँ ।

संत सुधा ससि धेनु प्रगटे खल विष बारुनी ॥ १४(च) ॥

दो. विबुध बिप्र बुध ग्रह चरन बंदि कहउँ कर जोरि ।

होइ प्रसन्न पुरवहु सकल मंजु मनोरथ मोरि ॥ १४(छ) ॥

पुनि बंदउँ सारद सुरसरिता । जुगल पुनीत मनोहर चरिता ॥

मज्जन पान पाप हर एका । कहत सुनत एक हर अबिबेका ॥

गुर पितु मातु महेस भवानी । प्रनवउँ दीनबंधु दिन दानी ॥

सेवक स्वामि सखा सिय पी के । हित निरुपधि सब विधि तुलसीके ॥

कलि बिलोकि जग हित हर गिरिजा । सावर मंत्र जाल जिन्ह सिरिजा ॥

अनमिल आखर अरथ न जापू । प्रगट प्रभाउ महेस प्रतापू ॥

सो उमेस मोहि पर अनुकूला । करिहिं कथा मुद मंगल मूला ॥

सुमिरि सिवा सिव पाइ पसाऊ । बरनउँ रामचरित चित चाऊ ॥

भनिति मोरि सिव कृपाँ बिभाती । ससि समाज मिलि मनहुँ सुराती ॥

जे एहि कथहि सनेह समेता । कहिहहिं सुनिहहिं समुझि सचेता ॥

होइहहिं राम चरन अनुरागी । कलि मल रहित सुमंगल भागी ॥

दो. सपनेहुँ साचेहुँ मोहि पर जौँ हर गौरि पसाउ ।

तौ फुर होउ जो कहेउँ सब भाषा भनिति प्रभाउ ॥ १५ ॥

बंदउँ अवध पुरी अति पावनि । सरजू सरि कलि कलुष नसावनि ॥

प्रनवउँ पुर नर नारि बहोरी । ममता जिन्ह पर प्रभुहि न थोरी ॥

सिय निंदक अघ ओघ नसाए । लोक बिसोक बनाइ बसाए ॥

बंदउँ कौसल्या दिसि प्राची । कीरति जासु सकल जग माची ॥

प्रगटेउ जहँ रघुपति ससि चारू । बिस्व सुखद खल कमल तुसारू ॥

दसरथ राउ सहित सब रानी । सुकृत सुमंगल मूरति मानी ॥

करउँ प्रनाम करम मन बानी । करहु कृपा सुत सेवक जानी ॥

जिन्हहि बिरचि बड़ भयउ बिधाता। महिमा अवधि राम पितु माता ॥

सो. बंदउँ अवध भुआल सत्य प्रेम जेहि राम पद।

बिछुरत दीनदयाल प्रिय तनु तुन इव परिहरेउ ॥ १६ ॥

प्रनवउँ परिजन सहित बिदेहू। जाहि राम पद गूढ सनेहू ॥

जोग भोग महँ राखेउ गोई। राम बिलोकत प्रगटेउ सोई ॥

प्रनवउँ प्रथम भरत के चरना। जासु नेम ब्रत जाइ न बरना ॥

राम चरन पंकज मन जासू। लुबुध मधुप इव तजइ न पासू ॥

बंदउँ लछिमन पद जलजाता। सीतल सुभग भगत सुख दाता ॥

रघुपति कीरति बिमल पताका। दंड समान भयउ जस जाका ॥

सेष सहस्रसीस जग कारन। जो अवतरेउ भूमि भय टारन ॥

सदा सो सानुकूल रह मो पर। कृपासिंधु सौमित्रि गुनाकर ॥

रिपुसूदन पद कमल नमामी। सूर सुसील भरत अनुगामी ॥

महावीर बिनवउँ हनुमाना। राम जासु जस आप बखाना ॥

सो. प्रनवउँ पवनकुमार खल बन पावक ग्यानधन।

जासु हृदय आगार बसहिँ राम सर चाप धर ॥ १७ ॥

कपिपति रीछ निसाचर राजा। अंगदादि जे कीस समाजा ॥

बंदउँ सब के चरन सुहाए। अधम सरीर राम जिन्ह पाए ॥

रघुपति चरन उपासक जेते। खग मृग सुर नर असुर समेते ॥

बंदउँ पद सरोज सब केरे। जे बिनु काम राम के चेरे ॥

सुक सनकादि भगत मुनि नारद। जे मुनिबर विग्यान बिसारद ॥

प्रनवउँ सबहिँ धरनि धरि सीसा। करहु कृपा जन जानि मुनीसा ॥

जनकसुता जग जननि जानकी। अतिसय प्रिय करुना निधान की ॥

ताके जुग पद कमल मनावउँ। जासु कृपाँ निरमल मति पावउँ ॥

पुनि मन बचन कर्म रघुनायक। चरन कमल बंदउँ सब लायक ॥

राजिवनयन धरें धनु सायक। भगत बिपति भंजन सुख दायक ॥

दो. गिरा अरथ जल बीचि सम कहिअत भिन्न न भिन्न।

बदउँ सीता राम पद जिन्हहि परम प्रिय खिन्न ॥ १८ ॥

बंदउँ नाम राम रघुवर को। हेतु कृसानु भानु हिमकर को ॥

बिधि हरि हरमय वेद प्रान सो। अगुन अनूपम गुन निधान सो ॥

महामंत्र जोइ जपत महेसू। कासीं मुकुति हेतु उपदेसू ॥
महिमा जासु जान गनराउ। प्रथम पूजिअत नाम प्रभाऊ ॥
जान आदिकवि नाम प्रतापू। भयउ सुद्ध करि उलटा जापू ॥
सहस नाम सम सुनि सिव बानी। जपि जेई पिय संग भवानी ॥
हरषे हेतु हेरि हर ही को। किय भूषन तिय भूषन ती को ॥
नाम प्रभाउ जान सिव नीको। कालकूट फलु दीन्ह अमी को ॥

दो. बरषा रितु रघुपति भगति तुलसी सालि सुदास ॥

राम नाम बर बरन जुग सावन भादव मास ॥ १९ ॥

आखर मधुर मनोहर दोऊ। बरन बिलोचन जन जिय जोऊ ॥
सुमिरत सुलभ सुखद सब काहू। लोक लाहु परलोक निबाहू ॥
कहत सुनत सुमिरत सुठि नीके। राम लखन सम प्रिय तुलसी के ॥
बरनत बरन प्रीति बिलगाती। ब्रह्म जीव सम सहज सँघाती ॥
नर नारायन सरिस सुभ्राता। जग पालक बिसेषि जन त्राता ॥
भगति सुतिय कल करन बिभूषन। जग हित हेतु बिमल बिधु पूषन ॥
स्वाद तोष सम सुगति सुधा के। कमठ सेष सम धर बसुधा के ॥
जन मन मंजु कंज मधुकर से। जीह जसोमति हरि हलधर से ॥

दो. एकु छत्रु एकु मुकुटमनि सब बरननि पर जोउ।

तुलसी रघुबर नाम के बरन विराजत दोउ ॥ २० ॥

समुझत सरिस नाम अरु नामी। प्रीति परसपर प्रभु अनुगामी ॥
नाम रूप दुइ ईस उपाधी। अकथ अनादि सुसामुझि साधी ॥
को बड छोट कहत अपराधू। सुनि गुन भेद समुझिहहिं साधू ॥
देखिअहिं रूप नाम आधीना। रूप ग्यान नहिं नाम बिहीना ॥
रूप बिसेष नाम विनु जानें। करतल गत न परहिं पहिचानें ॥
सुमिरिअ नाम रूप विनु देखें। आवत हृदयँ सनेह बिसेषें ॥
नाम रूप गति अकथ कहानी। समुझत सुखद न परति बखानी ॥
अगुन सगुन विच नाम सुसाखी। उभय प्रबोधक चतुर दुभाषी ॥

दो. राम नाम मनिदीप धरु जीह देहरी द्वार।

तुलसी भीतर बाहेरहुँ जौं चाहसि उजिआर ॥ २१ ॥

नाम जीहँ जपि जागहिं जोगी। विरति विरंचि प्रपंच बियोगी ॥

ब्रह्मसुरवहि अनुभवहिं अनूपा। अकथ अनामय नाम न रूपा ॥
जाना चहहिं गूढ गति जेऊ। नाम जीहँ जपि जानहिं तेऊ ॥
साधक नाम जपहिं लय लाएँ। होहिं सिद्ध अनिमादिक पाएँ ॥
जपहिं नामु जन आरत भारी। मिटहिं कुसंकट होहिं सुखारी ॥
राम भगत जग चारि प्रकारा। सुकृती चारिउ अनघ उदारा ॥
चहू चतुर कहूँ नाम अधारा। ग्यानी प्रभुहि बिसेषि पिआरा ॥
चहूँ जुग चहूँ श्रुति ना प्रभाऊ। कलि बिसेषि नहिं आन उपाऊ ॥

दो. सकल कामना हीन जे राम भगति रस लीन।

नाम सुप्रेम पियूष हृद तिन्हहूँ किए मन मीन ॥ २२ ॥

अगुन सगुन दुइ ब्रह्म सरूपा। अकथ अगाध अनादि अनूपा ॥
मोरें मत बड नामु दुहू तें। किए जेहिं जुग निज बस निज बूतें ॥
प्रोढि सुजन जनि जानहिं जन की। कहउँ प्रतीति प्रीति रुचि मन की ॥
एकु दारुगत देखिअ एकू। पावक सम जुग ब्रह्म बिबेकू ॥
उभय अगम जुग सुगम नाम तें। कहेउँ नामु बड ब्रह्म राम तें ॥
व्यापक एकु ब्रह्म अविनासी। सत चेतन धन आनँद रासी ॥
अस प्रभु हृदयँ अछत अविकारी। सकल जीव जग दीन दुखारी ॥
नाम निरूपन नाम जतन तें। सोउ प्रगटत जिमि मोल रतन तें ॥

दो. निरगुन तें एहि भाँति बड नाम प्रभाउ अपार।

कहउँ नामु बड राम तें निज बिचार अनुसार ॥ २३ ॥

राम भगत हित नर तनु धारी। सहि संकट किए साधु सुखारी ॥
नामु सप्रेम जपत अनयासा। भगत होहिं मुद मंगल बासा ॥
राम एक तापस तिय तारी। नाम कोटि खल कुमति सुधारी ॥
रिषि हित राम सुकेतुसुता की। सहित सेन सुत कीन्ह बिबाकी ॥
सहित दोष दुख दास दुरासा। दलइ नामु जिमि रवि निसि नासा ॥
भंजेउ राम आपु भव चापू। भव भय भंजन नाम प्रतापू ॥
दंडक बनु प्रभु कीन्ह सुहावन। जन मन अमित नाम किए पावन ॥ ।
निसिचर निकर दले रघुनंदन। नामु सकल कलि कलुष निकंदन ॥

दो. सबरी गीध सुसेवकनि सुगति दीन्हि रघुनाथ।

नाम उधारे अमित खल वेद विदित गुन गाथ ॥ २४ ॥

राम सुकंठ विभीषण दोऊ। राखे सरन जान सबु कोऊ ॥
नाम गरीब अनेक नेवाजे। लोक बेद बर बिरिद बिराजे ॥
राम भालु कपि कटकु बटोरा। सेतु हेतु श्रमु कीन्ह न थोरा ॥
नामु लेत भवसिंधु सुखाहीं। करहु विचारु सुजन मन माहीं ॥
राम सकुल रन रावनु मारा। सीय सहित निज पुर पगु धारा ॥
राजा रामु अवध रजधानी। गावत गुन सुर मुनि बर बानी ॥
सेवक सुमिरत नामु सप्रीती। बिनु श्रम प्रबल मोह दलु जीती ॥
फिरत सनेहँ मगन सुख अपने। नाम प्रसाद सोच नहिँ सपनें ॥
दो. ब्रह्म राम तें नामु बड बर दायक बर दानि।

रामचरित सत कोटि महँ लिय महेश जियँ जानि ॥ २५ ॥

मासपारायण, पहला विश्राम

नाम प्रसाद संभु अबिनासी। साजु अमंगल मंगल रासी ॥
सुक सनकादि सिद्ध मुनि जोगी। नाम प्रसाद ब्रह्मसुख भोगी ॥
नारद जानेउ नाम प्रतापू। जग प्रिय हरि हरि हर प्रिय आपू ॥
नामु जपत प्रभु कीन्ह प्रसादू। भगत सिरोमनि भे प्रह्लादू ॥
ध्रुवँ सगलानि जपेउ हरि नाऊँ। पायउ अचल अनूपम ठाऊँ ॥
सुमिरि पवनसुत पावन नामू। अपने बस करि राखे रामू ॥
अपतु अजामिलु गजु गनिकाऊ। भए मुकुत हरि नाम प्रभाऊ ॥
कहाँ कहाँ लगि नाम बडाई। रामु न सकहिँ नाम गुन गाई ॥

दो. नामु राम को कलपतरु कलि कल्याण निवासु।

जो सुमिरत भयो भाँग तें तुलसी तुलसीदासु ॥ २६ ॥

चहुँ जुग तीनि काल तिहुँ लोका। भए नाम जपि जीव बिसोका ॥
बेद पुरान संत मत एहू। सकल सुकृत फल राम सनेहू ॥
ध्यानु प्रथम जुग मखबिधि दूजें। द्वापर परितोषत प्रभु पूजें ॥
कलि केवल मल मूल मलीना। पाप पयोनिधि जन जन मीना ॥
नाम कामतरु काल कराला। सुमिरत समन सकल जग जाला ॥
राम नाम कलि अभिमत दाता। हित परलोक लोक पितु माता ॥
नहिँ कलि करम न भगति बिबेकू। राम नाम अवलंबन एकू ॥
कालनेमि कलि कपट निधानू। नाम सुमति समरथ हनुमानू ॥

दो. राम नाम नरकेसरी कनककसिपु कलिकाल।

जापक जन प्रह्लाद जिमि पालिहि दलि सुरसाल ॥ २७ ॥

भार्यँ कुभार्यँ अनख आलसहूँ। नाम जपत मंगल दिसि दसहूँ ॥
सुमिरि सो नाम राम गुन गाथा। करउँ नाइ रघुनाथहि माथा ॥
मोरि सुधारिहि सो सब भाँती। जासु कृपा नहिँ कृपाँ अघाती ॥
राम सुस्वामि कुसेवकु मोसो। निज दिसि दैखि दयानिधि पोसो ॥
लोकहूँ बेद सुसाहिब रीती। विनय सुनत पहिचानत प्रीती ॥
गनी गरीब ग्रामनर नागर। पंडित मूढ मलीन उजागर ॥
सुकवि कुकवि निज मति अनुहारी। नृपहि सराहत सब नर नारी ॥
साधु सुजान सुसील नृपाला। ईस अंस भव परम कृपाला ॥
सुनि सनमानहिँ सबहि सुबानी। भनिति भगति नति गति पहिचानी ॥
यह प्राकृत महिपाल सुभाऊ। जान सिरोमनि कोसलराऊ ॥
रीझत राम सनेह निसोतेँ। को जग मंद मलिनमति मोतेँ ॥

दो. सठ सेवक की प्रीति रुचि रखिहहिँ राम कृपालु।

उपल किए जलजान जेहिँ सचिव सुमति कपि भालु ॥ २८(क) ॥

हौहु कहावत सबु कहत राम सहत उपहास।

साहिब सीतानाथ सो सेवक तुलसीदास ॥ २८(ख) ॥

अति बडि मोरि ढिठाई खोरी। सुनि अघ नरकहूँ नाक सकोरी ॥
समुझि सहम मोहि अपडर अपनेँ। सो सुधि राम कीन्हि नहिँ सपनेँ ॥
सुनि अवलोकि सुचित चख चाही। भगति मोरि मति स्वामि सराही ॥
कहत नसाइ होइ हियँ नीकी। रीझत राम जानि जन जी की ॥
रहत न प्रभु चित चूक किए की। करत सुरति सय बार हिए की ॥
जेहिँ अघ बधेउ व्याध जिमि बाली। फिरि सुकंठ सोइ कीन्ह कुचाली ॥
सोइ करतूति विभीषन केरी। सपनेहूँ सो न राम हियँ हेरी ॥
ते भरतहि भेंटत सनमाने। राजसभाँ रघुबीर बखाने ॥

दो. प्रभु तरु तर कपि डार पर ते किए आपु समान ॥

तुलसी कहूँ न राम से साहिब सीलनिधान ॥ २९(क) ॥

राम निकाई रावरी है सबही को नीक।

जों यह साँची है सदा तौ नीको तुलसीक ॥ २९(ख) ॥

एहि विधि निज गुन दोष कहि सबहि बहुरि सिरु नाइ।
बरनउँ रघुवर बिसद जसु सुनि कलि कलुष नसाइ ॥ २९(ग) ॥

जागबलिक जो कथा सुहाई। भरद्वाज मुनिबरहि सुनाई ॥
कहिहउँ सोइ संवाद बखानी। सुनहुँ सकल सज्जन सुखु मानी ॥
संभु कीन्ह यह चरित सुहावा। बहुरि कृपा करि उमहि सुनावा ॥
सोइ सिव कागभुसुंढिहि दीन्हा। राम भगत अधिकारी चीन्हा ॥
तेहि सन जागबलिक पुनि पावा। तिन्ह पुनि भरद्वाज प्रति गावा ॥
ते श्रोता बकता समसीला। सर्वदरसी जानहिं हरिलीला ॥
जानहिं तीनि काल निज ग्याना। करतल गत आमलक समाना ॥
औरउ जे हरिभगत सुजाना। कहहिं सुनहिं समुझहिं विधि नाना ॥

दो. मै पुनि निज गुर सन सुनी कथा सो सूकरखेत।
समुझी नहि तसि बालपन तब अति रहेउँ अचेत ॥ ३०(क) ॥

श्रोता बकता ग्याननिधि कथा राम कै गूढ।
किमि समुझौं मै जीव जड कलि मल ग्रसित बिमूढ ॥ ३०(ख)

तदपि कही गुर बारहिं बारा। समुझि परी कछु मति अनुसारा ॥
भाषाबद्ध करवि मै सोई। मोरें मन प्रबोध जेहि होई ॥
जस कछु बुधि विवेक बल मेरें। तस कहिहउँ हियँ हरि के प्रेरें ॥
निज संदेह मोह भ्रम हरनी। करउँ कथा भव सरिता तरनी ॥
बुध विश्राम सकल जन रंजनि। रामकथा कलि कलुष विभंजनि ॥
रामकथा कलि पंनग भरनी। पुनि विवेक पावक कहूँ अरनी ॥
रामकथा कलि कामद गाई। सुजन सजीवनि मूरि सुहाई ॥
सोइ बसुधातल सुधा तरंगिनि। भय भंजनि भ्रम भेक भुअंगिनि ॥
असुर सेन सम नरक निकंदिनि। साधु बिबुध कुल हित गिरिर्नदिनि ॥
संत समाज पयोधि रमा सी। बिस्व भार भर अचल छमा सी ॥
जम गन मुहँ मसि जग जमुना सी। जीवन मुकुति हेतु जनु कासी ॥
रामहि प्रिय पावनि तुलसी सी। तुलसिदास हित हियँ हुलसी सी ॥
सिवप्रय मेकल सैल सुता सी। सकल सिद्धि सुख संपति रासी ॥
सदगुन सुरगन अंब अदिति सी। रघुवर भगति प्रेम परमिति सी ॥

दो. राम कथा मंदाकिनी चित्रकूट चित चारु।

तुलसी सुभग सनेह बन सिय रघुबीर बिहारु ॥ ३१ ॥

राम चरित चिंतामनि चारू। संत सुमति तिय सुभग सिंगारू ॥
जग मंगल गुन ग्राम राम के। दानि मुकुति धन धरम धाम के ॥
सद्गुर ग्यान विराग जोग के। विबुध बैद भव भीम रोग के ॥
जननि जनक सिय राम प्रेम के। बीज सकल व्रत धरम नेम के ॥
समन पाप संताप सोक के। प्रिय पालक परलोक लोक के ॥
सचिव सुभट भूपति विचार के। कुंभज लोभ उदधि अपार के ॥
काम कोह कलिमल करिगन के। केहरि सावक जन मन बन के ॥
अतिथि पूज्य प्रियतम पुरारि के। कामद घन दारिद दवारि के ॥
मंत्र महामनि विषय ब्याल के। मेटत कठिन कुअंक भाल के ॥
हरन मोह तम दिनकर कर से। सेवक सालि पाल जलधर से ॥
अभिमत दानि देवतरु बर से। सेवत सुलभ सुखद हरि हर से ॥
सुकवि सरद नभ मन उडगन से। रामभगत जन जीवन धन से ॥
सकल सुकृत फल भूरि भोग से। जग हित निरुपधि साधु लोग से ॥
सेवक मन मानस मराल से। पावक गंग तरंग माल से ॥

दो. कुपथ कुतरक कुचालि कलि कपट दंभ पाषंड।

दहन राम गुन ग्राम जिमि इंधन अनल प्रचंड ॥ ३२(क) ॥

रामचरित राकेस कर सरिस सुखद सब काहु।

सज्जन कुमुद चकोर चित हित बिसेषि बड लाहु ॥ ३२(ख) ॥

कीन्हि पस्त्र जेहि भाँति भवानी। जेहि विधि संकर कहा बखानी ॥
सो सब हेतु कहव मैं गाई। कथाप्रबंध विचित्र बनाई ॥
जेहि यह कथा सुनी नहि होई। जनि आचरजु करैं सुनि सोई ॥
कथा अलौकिक सुनहिं जे ग्यानी। नहिं आचरजु करहिं अस जानी ॥
रामकथा कै मिति जग नाही। असि प्रतीति तिन्ह के मन माहीं ॥
नाना भाँति राम अवतारा। रामायन सत कोटि अपारा ॥
कलपभेद हरिचरित सुहाए। भाँति अनेक मुनीसन्ह गाए ॥
करिअ न संसय अस उर आनी। सुनिअ कथा सारद रति मानी ॥

दो. राम अनंत अनंत गुन अमित कथा बिस्तार।

सुनि आचरजु न मानिहहिं जिन्ह के विमल विचार ॥ ३३ ॥

एहि विधि सब संसय करि दूरी। सिर धरि गुर पद पंकज धूरी ॥
पुनि सबही बिनवउँ कर जोरी। करत कथा जेहिं लाग न खोरी ॥
सादर सिवहि नाइ अब माथा। बरनउँ बिसद राम गुन गाथा ॥
संवत सोरह सै एकतीसा। करउँ कथा हरि पद धरि सीसा ॥
नौमी भौम बार मधु मासा। अवधपुरीं यह चरित प्रकासा ॥
जेहि दिन राम जनम श्रुति गावहिं। तीरथ सकल तहाँ चलि आवहिं ॥
असुर नाग खग नर मुनि देवा। आइ करहिं रघुनायक सेवा ॥
जन्म महोत्सव रचहिं सुजाना। करहिं राम कल कीरति गाना ॥

दो. मज्जहि सज्जन वृंद बहु पावन सरजू नीर।

जपहिं राम धरि ध्यान उर सुंदर स्याम सरीर ॥ ३४ ॥

दरस परस मज्जन अरु पाना। हरइ पाप कह बेद पुराना ॥
नदी पुनीत अमित महिमा अति। कहि न सकइ सारद बिमलमति ॥
राम धामदा पुरी सुहावनि। लोक समस्त विदित अति पावनि ॥
चारि खानि जग जीव अपारा। अवध तजे तनु नहि संसारा ॥
सब विधि पुरी मनोहर जानी। सकल सिद्धिप्रद मंगल खानी ॥
बिमल कथा कर कीन्ह अरंभा। सुनत नसाहिं काम मद दंभा ॥
रामचरितमानस एहि नामा। सुनत श्रवन पाइअ विश्रामा ॥
मन करि विषय अनल बन जरई। होइ सुखी जौ एहिं सर परई ॥
रामचरितमानस मुनि भावन। बिरचेउ संभु सुहावन पावन ॥
त्रिविध दोष दुख दारिद दावन। कलि कुचालि कुलि कलुष नसावन ॥
रचि महेस निज मानस राखा। पाइ सुसमउ सिवा सन भाषा ॥
तातें रामचरितमानस बर। धरेउ नाम हियँ हेरि हरषि हर ॥
कहउँ कथा सोइ सुखद सुहाई। सादर सुनहु सुजन मन लाई ॥

दो. जस मानस जेहि विधि भयउ जग प्रचार जेहि हेतु।

अब सोइ कहउँ प्रसंग सब सुमिरि उमा वृषकेतु ॥ ३५ ॥

संभु प्रसाद सुमति हियँ हुलसी। रामचरितमानस कवि तुलसी ॥
करइ मनोहर मति अनुहारी। सुजन सुचित सुनि लेहु सुधारी ॥
सुमति भूमि थल हृदय अगाधू। बेद पुरान उदधि घन साधू ॥
बरषहिं राम सुजस बर बारी। मधुर मनोहर मंगलकारी ॥
लीला सगुन जो कहहिं बखानी। सोइ स्वच्छता करइ मल हानी ॥

प्रेम भगति जो बरनि न जाई। सोइ मधुरता सुसीतलताई ॥
सो जल सुकृत सालि हित होई। राम भगत जन जीवन सोई ॥
मेधा महि गत सो जल पावन। सकिलि श्रवन मग चलेउ सुहावन ॥
भरेउ सुमानस सुथल थिराना। सुखद सीत रुचि चारु चिराना ॥

दो. सुठि सुंदर संवाद बर बिरचे बुद्धि बिचारि।

तेइ एहि पावन सुभग सर घाट मनोहर चारि ॥ ३६ ॥

सप्त प्रबन्ध सुभग सोपाना। ग्यान नयन निरखत मन माना ॥
रघुपति महिमा अगुन अबाधा। बरनब सोइ बर बारि अगाधा ॥
राम सीय जस सलिल सुधासम। उपमा बीचि विलास मनोरम ॥
पुरइनि सघन चारु चौपाई। जुगुति मंजु मनि सीप सुहाई ॥
छंद सोरठा सुंदर दोहा। सोइ बहुरंग कमल कुल सोहा ॥
अरथ अनूप सुमाव सुभासा। सोइ पराग मकरंद सुबासा ॥
सुकृत पुंज मंजुल अलि माला। ग्यान बिराग बिचार मराला ॥
धुनि अवरेब कवित गुन जाती। मीन मनोहर ते बहुभाँती ॥
अरथ धरम कामादिक चारी। कहब ग्यान बिग्यान बिचारी ॥
नव रस जप तप जोग बिरागा। ते सब जलचर चारु तडागा ॥
सुकृती साधु नाम गुन गाना। ते बिचित्र जल बिहग समाना ॥
संतसभा चहुँ दिसि अवर्राई। श्रद्धा रितु बसंत सम गाई ॥
भगति निरुपन बिबिध बिधाना। छमा दया दम लता बिताना ॥
सम जम नियम फूल फल ग्याना। हरि पत रति रस बेद बखाना ॥
औरउ कथा अनेक प्रसंगा। तेइ सुक पिक बहुवरन बिहंगा ॥

दो. पुलक बाटिका बाग बन सुख सुबिहंग बिहारु।

माली सुमन सनेह जल सींचत लोचन चारु ॥ ३७ ॥

जे गावहिं यह चरित सँभारे। तेइ एहि ताल चतुर रखवारे ॥
सदा सुनहिं सादर नर नारी। तेइ सुरबर मानस अधिकारी ॥
अति खल जे बिषई बग कागा। एहिं सर निकट न जाहिं अभागा ॥
संबुक भेक सेवार समाना। इहाँ न बिषय कथा रस नाना ॥
तेहि कारन आवत हियँ हारे। कामी काक बलाक बिचारे ॥
आवत एहिं सर अति कठिनाई। राम कृपा बिनु आइ न जाई ॥
कठिन कुसंग कुपंथ कराला। तिन्ह के बचन बाघ हरि ब्याला ॥

गृह कारज नाना जंजाला। ते अति दुर्गम सैल विसाला ॥
बन बहु विषम मोह मद माना। नदीं कुतर्क भयंकर नाना ॥

दो. जे श्रद्धा संबल रहित नहि संतन्ह कर साथ।

तिन्ह कहूँ मानस अगम अति जिन्हहि न प्रिय रघुनाथ ॥ ३८ ॥

जौं करि कष्ट जाइ पुनि कोई। जातहि नींद जुडाई होई ॥
जड़ता जाड विषम उर लागा। गणहुँ न मज्जन पाव अभागा ॥
करि न जाइ सर मज्जन पाना। फिरि आवइ समेत अभिमाना ॥
जौं बहोरि कोउ पूछन आवा। सर निंदा करि ताहि बुझावा ॥
सकल विघ्न व्यापहि नहिं तेही। राम सुकृपाँ बिलोकहिं जेही ॥
सोइ सादर सर मज्जनु करई। महा घोर त्रयताप न जरई ॥
ते नर यह सर तजहिं न काऊ। जिन्ह के राम चरन भल भाऊ ॥
जो नहाइ चह णहिं सर भाई। सो सतसंग करउ मन लाई ॥
अस मानस मानस चख चाही। भइ कवि बुद्धि विमल अवगाही ॥
भयउ हृदयँ आनंद उछाहू। उमगेउ प्रेम प्रमोद प्रबाहू ॥
चली सुभग कविता सरिता सो। राम विमल जस जल भरिता सो ॥
सरजू नाम सुमंगल मूला। लोक बेद मत मंजुल कूला ॥
नदी पुनीत सुमानस नंदिनि। कलिमल तृन तरु मूल निकंदिनि ॥

दो. श्रोता त्रिविध समाज पुर ग्राम नगर दुहुँ कूल।

संतसभा अनुपम अवध सकल सुमंगल मूल ॥ ३९ ॥

रामभगति सुरसरितहि जाई। मिली सुकीरति सरजू सुहाई ॥
सानुज राम समर जसु पावन। मिलेउ महानदु सोन सुहावन ॥
जुग बिच भगति देवधुनि धारा। सोहति सहित सुबिरति बिचारा ॥
त्रिविध ताप त्रासक तिमुहानी। राम सरूप सिंधु समुहानी ॥
मानस मूल मिली सुरसरिही। सुनत सुजन मन पावन करिही ॥
बिच बिच कथा बिचित्र बिभागा। जनु सरि तीर तीर बन बागा ॥
उमा महेस बिबाह बराती। ते जलचर अगनित बहुभाँती ॥
रघुबर जनम अनंद बधाई। भवँर तरंग मनोहरताई ॥

दो. बालचरित चहु बंधु के बनज बिपुल बहुरंग।

नृप रानी परिजन सुकृत मधुकर वारिविहंग ॥ ४० ॥

सीय स्वयंवर कथा सुहाई। सरित सुहावनि सो छवि छाई ॥
 नदी नाव पटु प्रस्न अनेका। केवट कुसल उतर सविवेका ॥
 सुनि अनुकथन परस्पर होई। पथिक समाज सोह सरि सोई ॥
 घोर धार भृगुनाथ रिसानी। घाट सुबद्ध राम बर बानी ॥
 सानुज राम बिवाह उछाहू। सो सुभ उमग सुखद सब काहू ॥
 कहत सुनत हरषहिं पुलकाहीं। ते सुकृती मन मुदित नहाहीं ॥
 राम तिलक हित मंगल साजा। परब जोग जनु जुरे समाजा ॥
 काई कुमति केकई केरी। परी जासु फल बिपति घनेरी ॥

दो. समन अमित उतपात सब भरतचरित जपजाग।

कलि अघ खल अवगुन कथन ते जलमल बग काग ॥ ४१ ॥

कीरति सरित छहूँ रितु रूरी। समय सुहावनि पावनि भूरी ॥
 हिम हिमसैलसुता सिव ब्याहू। सिसिर सुखद प्रभु जनम उछाहू ॥
 बरनब राम बिवाह समाजू। सो मुद मंगलमय रितुराजू ॥
 ग्रीषम दुसह राम बनगवनू। पंथकथा खर आतप पवनू ॥
 बरषा घोर निसाचर रारी। सुरकुल सालि सुमंगलकारी ॥
 राम राज सुख बिनय बडाई। विसद सुखद सोइ सरद सुहाई ॥
 सती सिरोमनि सिय गुनगाथा। सोइ गुन अमल अनूपम पाथा ॥
 भरत सुभाउ सुसीतलताई। सदा एकरस बरनि न जाई ॥

दो. अवलोकनि बोलनि मिलनि प्रीति परसपर हास।

भायप भलि चहु बंधु की जल माधुरी सुवास ॥ ४२ ॥

आरति बिनय दीनता मोरी। लघुता ललित सुवारि न थोरी ॥
 अदभुत सलिल सुनत गुनकारी। आस पिआस मनोमल हारी ॥
 राम सुप्रेमहि पोषत पानी। हरत सकल कलि कलुष गलानौ ॥
 भव श्रम सोषक तोषक तोषा। समन दुरित दुख दारिद दोषा ॥
 काम कोह मद मोह नसावन। बिमल बिबेक बिराग बढावन ॥
 सादर मज्जन पान किए तें। मिटहिं पाप परिताप हिए तें ॥
 जिन्ह एहि बारि न मानस धोए। ते कायर कलिकाल बिगोए ॥
 तृषित निरखि रवि कर भव बारी। फिरिहहि मृग जिमि जीव दुखारी ॥

दो. मति अनुहारि सुवारि गुन गनि मन अन्हवाइ।

सुमिरि भवानी संकरहि कह कवि कथा सुहाइ ॥ ४३(क) ॥

अब रघुपति पद पंकरुह हियँ धरि पाइ प्रसाद ।

कहउँ जुगल मुनिवर्ज कर मिलन सुभग संवाद ॥ ४३(ख) ॥

भरद्वाज मुनि बसहिं प्रयागा। तिन्हहि राम पद अति अनुरागा ॥

तापस सम दम दया निधाना। परमारथ पथ परम सुजाना ॥

माघ मकरगत रवि जब होई। तीरथपतिहिं आव सब कोई ॥

देव दनुज किंनर नर श्रेणी। सादर मज्जहिं सकल त्रिवेनी ॥

पूजहिं माधव पद जलजाता। परसि अख्य बटु हरषहिं गाता ॥

भरद्वाज आश्रम अति पावन। परम रम्य मुनिवर मन भावन ॥

तहाँ होइ मुनि रिषय समाजा। जाहिं जे मज्जन तीरथराजा ॥

मज्जहिं प्रात समेत उछाहा। कहहिं परसपर हरि गुन गाहा ॥

दो. ब्रह्म निरूपम धरम विधि बरनहिं तत्त्व विभाग।

कहहिं भगति भगवंत कै संजुत ग्यान बिराग ॥ ४४ ॥

एहि प्रकार भरि माघ नहाहीं। पुनि सब निज निज आश्रम जाहीं ॥

प्रति संबत अति होइ अनंदा। मकर मज्जि गवनहिं मुनिवृंदा ॥

एक बार भरि मकर नहाए। सब मुनीस आश्रमन्ह सिधाए ॥

जगबालिक मुनि परम विवेकी। भरद्वाज राखे पद टेकी ॥

सादर चरन सरोज पखारे। अति पुनीत आसन बैठारे ॥

करि पूजा मुनि सुजस बखानी। बोले अति पुनीत मृदु बानी ॥

नाथ एक संसु उ बड मोरें। करगत वेदतत्व सबु तोरें ॥

कहत सो मोहि लागत भय लाजा। जौ न कहउँ बड होइ अकाजा ॥

दो. संत कहहि असि नीति प्रभु श्रुति पुरान मुनि गाव।

होइ न विमल विवेक उर गुर सन किएँ दुराव ॥ ४५ ॥

अस बिचारि प्रगटउँ निज मोहू। हरहु नाथ करि जन पर छोहू ॥

रास नाम कर अमित प्रभावा। संत पुरान उपनिषद गावा ॥

संतत जपत संभु अबिनासी। सिव भगवान ग्यान गुन रासी ॥

आकर चारि जीव जग अहहीं। कासीं मरत परम पद लहहीं ॥

सोपि राम महिमा मुनिराया। सिव उपदेसु करत करि दाया ॥

रामु कवन प्रभु पूछउँ तोही। कहिअ बुझाइ कृपानिधि मोही ॥

एक राम अवधेस कुमारा। तिन्ह कर चरित बिदित संसारा ॥
नारि बिरहँ दुखु लहेउ अपारा। भयहु रोषु रन रावनु मारा ॥

दो. प्रभु सोइ राम कि अपर कोउ जाहि जपत त्रिपुरारि।
सत्यधाम सर्वग्य तुम्ह कहहु बिबेकु बिचारि ॥ ४६ ॥

जैसे मिटै मोर भ्रम भारी। कहहु सो कथा नाथ बिस्तारी ॥
जागबलिक बोले मुसुकाई। तुम्हहि बिदित रघुपति प्रभुताई ॥
राममगत तुम्ह मन क्रम बानी। चतुराई तुम्हारी मैं जानी ॥
चाहहु सुनै राम गुन गूढा। कीन्हिहु पन्न मनहुँ अति मूढा ॥
तात सुनहु सादर मनु लाई। कहउँ राम कै कथा सुहाई ॥
महामोहु महिषेसु बिसाला। रामकथा कालिका कराला ॥
रामकथा ससि किरन समाना। संत चकोर करहिं जेहि पाना ॥
ऐसेइ संसय कीन्ह भवानी। महादेव तब कहा बखानी ॥

दो. कहउँ सो मति अनुहारि अब उमा संभु संबाद।
भयउ समय जेहि हेतु जेहि सुनु मुनि मिटिहि बिषाद ॥ ४७ ॥

एक बार त्रेता जुग माहीं। संभु गए कुंभज रिषि पाहीं ॥
संग सती जगजननि भवानी। पूजे रिषि अखिलेस्वर जानी ॥
रामकथा मुनीवर्ज बखानी। सुनी महेस परम सुखु मानी ॥
रिषि पूछी हरिभगति सुहाई। कही संभु अधिकारी पाई ॥
कहत सुनत रघुपति गुन गाथा। कछु दिन तहाँ रहे गिरिनाथा ॥
मुनि सन बिदा मागि त्रिपुरारी। चले भवन सँग दच्छकुमारी ॥
तेहि अवसर भंजन महिभारा। हरि रघुवंस लीन्ह अवतारा ॥
पिता बचन तजि राजु उदासी। दंडक बन बिचरत अबिनासी ॥

दो. हृदयँ बिचारत जात हर केहि विधि दरसनु होइ।
गुप्त रूप अवतरेउ प्रभु गएँ जान सबु कोइ ॥ ४८(क) ॥

सो. संकर उर अति छोभु सती न जानहिं मरमु सोइ ॥
तुलसी दरसन लोभु मन डरु लोचन लालची ॥ ४८(ख) ॥

रावन मरन मनुज कर जाचा। प्रभु बिधि बचनु कीन्ह चह साचा ॥
जौं नहिं जाउँ रहइ पछितावा। करत बिचारु न बनत बनावा ॥
एहि विधि भए सोचवस ईसा। तेहि समय जाइ दससीसा ॥

लीन्ह नीच मारीचहि संग्गा। भयउ तुरत सोइ कपट कुरंग्गा ॥
करि छलु मूढ हरी बैदेही। प्रभु प्रभाउ तस बिदित न तेही ॥
मृग बधि बन्धु सहित हरि आए। आश्रमु देखि नयन जल छाए ॥
बिरह विकल नर इव रघुराई। खोजत विपिन फिरत दोउ भाई ॥
कवहूँ जोग बियोग न जाकें। देखा प्रगट बिरह दुख ताकें ॥

दो. अति विचित्र रघुपति चरित जानहिँ परम सुजान।

जे मतिमंद बिमोह बस हृदयँ धरहिँ कछु आन ॥ ४९ ॥

संभु समय तेहि रामहि देखा। उपजा हियँ अति हरपु बिसेषा ॥
भरि लोचन छबिसिंधु निहारी। कुसमय जानिन कीन्हि चिन्हारी ॥
जय सच्चिदानंद जग पावन। अस कहि चलेउ मनोज नसावन ॥
चले जात सिव सती समेता। पुनि पुनि पुलकत कृपानिकेता ॥
सती सो दसा संभु कै देखी। उर उपजा संदेहु बिसेषी ॥
संकरु जगतबंध जगदीसा। सुर नर मुनि सब नावत सीसा ॥
तिन्ह नृपसुतहि नह परनामा। कहि सच्चिदानंद परधमा ॥
भए मगन छवि तासु बिलोकी। अजहुँ प्रीति उर रहति न रोकी ॥

दो. ब्रह्म जो व्यापक बिरज अज अकल अनीह अभेद।

सो कि देह धरि होइ नर जाहि न जानत वेद ॥ ५० ॥

बिष्नु जो सुर हित नरतनु धारी। सोउ सर्वग्य जथा त्रिपुरारी ॥
खोजइ सो कि अग्य इव नारी। ग्यानधाम श्रीपति असुरारी ॥
संभुगिरा पुनि मृषा न होई। सिव सर्वग्य जान सबु कोई ॥
अस संसय मन भयउ अपारा। होई न हृदयँ प्रबोध प्रचारा ॥
जद्यपि प्रगट न कहेउ भवानी। हर अंतरजामी सब जानी ॥
सुनहि सती तव नारि सुभाऊ। संसय अस न धरिअ उर काऊ ॥
जासु कथा कुभंज रिषि गाई। भगति जासु मैं मुनिहि सुनाई ॥
सोउ मम इष्टदेव रघुबीरा। सेवत जाहि सदा मुनि धीरा ॥

छं. मुनि धीर जोगी सिद्ध संतत बिमल मन जेहि ध्यावहीं।

कहि नेति निगम पुरान आगम जासु कीरति गावहीं ॥

सोइ रामु व्यापक ब्रह्म भुवन निकाय पति माया धनी।

अवतरेउ अपने भगत हित निजतंत्र नित रघुकुलमनि ॥

सो. लाग न उर उपदेसु जदपि कहेउ सिवैं बार बहु।
बोले बिहसि महेसु हरिमाया बलु जानि जियँ ॥ ५१ ॥

जौं तुम्हरें मन अति संदेहू। तौ किन जाइ परीछा लेहू ॥
तब लगि बैठ अहउँ बटछाहिं। जब लगि तुम्ह ऐहहु मोहि पाही ॥
जैसें जाइ मोह भ्रम भारी। करेहु सो जतनु बिबेक बिचारी ॥
चलीं सती सिव आयसु पाई। करहिं विचारु करौं का भाई ॥
इहाँ संभु अस मन अनुमाना। दच्छसुता कहूँ नहिं कल्याना ॥
मोरेहु कहें न संसय जाहीं। बिधी बिपरीत भलाई नाहीं ॥
होइहि सोइ जो राम रचि राखा। को करि तर्क बढावै साखा ॥
अस कहि लगे जपन हरिनामा। गई सती जहँ प्रभु सुखधामा ॥

दो. पुनि पुनि हृदयँ विचारु करि धरि सीता कर रूप।
आगें होइ चलि पंथ तेहि जेहि आवत नरभूप ॥ ५२ ॥

लछिमन दीख उमाकृत बेषा चकित भए भ्रम हृदयँ बिसेषा ॥
कहि न सकत कछु अति गंभीरा। प्रभु प्रभाउ जानत मतिधीरा ॥
सती कपटु जानेउ सुरस्वामी। सबदरसी सब अंतरजामी ॥
सुमिरत जाहि मिटइ अग्याना। सोइ सरबग्य रामु भगवाना ॥
सती कीन्ह चह तहँहुँ दुराऊ। देखहु नारि सुभाव प्रभाऊ ॥
निज माया बलु हृदयँ बखानी। बोले बिहसि रामु मृदु बानी ॥
जोरि पानि प्रभु कीन्ह प्रनामू। पिता समेत लीन्ह निज नामू ॥
कहेउ बहोरि कहाँ वृषकेतू। बिपिन अकेलि फिरहु केहि हेतू ॥

दो. राम बचन मृदु गूढ सुनि उपजा अति संकोचु।
सती सभीत महेस पहि चलीं हृदयँ बड सोचु ॥ ५३ ॥

मैं संकर कर कहा न माना। निज अग्यानु राम पर आना ॥
जाइ उतरु अब देहउँ काहा। उर उपजा अति दारुन दाहा ॥
जाना राम सतीं दुखु पावा। निज प्रभाउ कछु प्रगटि जनावा ॥
सतीं दीख कौतुकु मग जाता। आगें रामु सहित श्री भ्राता ॥
फिरि चितवा पाछें प्रभु देखा। सहित बंधु सिय सुंदर वेषा ॥
जहँ चितवहिं तहँ प्रभु आसीना। सेवहिं सिद्ध मुनीस प्रबीना ॥
देखे सिव विधि बिष्नु अनेका। अमित प्रभाउ एक तें एका ॥

बंदत चरन करत प्रभु सेवा। बिबिध बेष देखे सब देवा ॥

दो. सती बिधात्री इंदिरा देखीं अमित अनूप।

जेहिं जेहिं बेष अजादि सुर तेहि तेहि तन अनुरूप ॥ ५४ ॥

देखे जहँ तहँ रघुपति जेते। सक्तिन्ह सहित सकल सुर तेते ॥

जीव चराचर जो संसारा। देखे सकल अनेक प्रकारा ॥

पूजहिं प्रभुहि देव बहु बेषा। राम रूप दूसर नहिं देखा ॥

अवलोकै रघुपति बहुतेरे। सीता सहित न बेष घनेरे ॥

सोइ रघुबर सोइ लछिमनु सीता। देखि सती अति भई सभिता ॥

हृदय कंप तन सुधि कछु नाहीं। नयन मूदि बैठीं मग माहीं ॥

बहुरि बिलोकेउ नयन उधारी। कछु न दीख तहँ दच्छकुमारी ॥

पुनि पुनि नाइ राम पद सीसा। चलीं तहाँ जहँ रहे गिरीसा ॥

दो. गई समीप महेस तब हँसि पूछी कुसलात।

लीन्ही परीछा कवन बिधि कहहु सत्य सब बात ॥ ५५ ॥

मासपारायण, दूसरा विश्राम

सतीं समुझि रघुवीर प्रभाऊ। भय बस सिव सन कीन्ह दुराऊ ॥

कछु न परीछा लीन्हि गोसाईं। कीन्ह प्रनामु तुम्हारिहि नाई ॥

जो तुम्ह कहा सो मृषा न होई। मोरें मन प्रतीति अति सोई ॥

तब संकर देखेउ धरि ध्याना। सतीं जो कीन्ह चरित सब जाना ॥

बहुरि राममायहि सिरु नावा। प्रेरि सतिहि जेहिं झूठ कहावा ॥

हरि इच्छा भावी बलवाना। हृदयँ बिचारत संभु सुजाना ॥

सतीं कीन्ह सीता कर बेषा। सिव उर भयउ बिषाद बिसेषा ॥

जौं अब करउँ सती सन प्रीती। मिटइ भगति पथु होइ अनीती ॥

दो. परम पुनीत न जाइ तजि किँ प्रेम बड पापु।

प्रगटि न कहत महेसु कछु हृदयँ अधिक संतापु ॥ ५६ ॥

तब संकर प्रभु पद सिरु नावा। सुमिरत रामु हृदयँ अस आवा ॥

एहिं तन सतिहि भेट मोहि नाहीं। सिव संकल्पु कीन्ह मन माहीं ॥

अस बिचारि संकरु मतिधीरा। चले भवन सुमिरत रघुवीरा ॥

चलत गगन भै गिरा सुहाई। जय महेस भलि भगति दृढाई ॥

अस पन तुम्ह विनु करइ को आना। रामभगत समरथ भगवाना ॥

सुनि नभगिरा सती उर सोचा। पूछा सिवहि समेत सकोचा ॥
कीन्ह कवन पन कहहु कृपाला। सत्यधाम प्रभु दीनदयाला ॥
जदपि सतीं पूछा बहु भाँती। तदपि न कहेउ त्रिपुर आराती ॥

दो. सतीं हृदय अनुमान किय सबु जानेउ सर्वग्य।

कीन्ह कपटु मैं संभु सन नारि सहज जड अग्य ॥ ५७क ॥

हृदयँ सोचु समुझत निज करनी। चिंता अमित जाइ नहि बरनी ॥
कृपासिंधु सिव परम अगाधा। प्रगट न कहेउ मोर अपराधा ॥
संकर रुख अवलोकि भवानी। प्रभु मोहि तजेउ हृदयँ अकुलानी ॥
निज अघ समुझि न कछु कहि जाई। तपइ अवाँ इव उर अधिकार्ई ॥
सतिहि ससोच जानि वृषकेतू। कहीं कथा सुंदर सुख हेतू ॥
बरनत पंथ विविध इतिहासा। बिस्वनाथ पहुँचे कैलासा ॥
तहँ पुनि संभु समुझि पन आपन। बैठे बट तर करि कमलासन ॥
संकर सहज सरूप संहारा। लागि समाधि अखंड अपारा ॥

दो. सती बसहि कैलास तब अधिक सोचु मन माहिं।

मरमु न कोऊ जान कछु जुग सम दिवस सिराहिं ॥ ५८ ॥

नित नव सोचु सतीं उर भारा। कब जैहउँ दुख सागर पारा ॥
मैं जो कीन्ह रघुपति अपमाना। पुनिपति बचनु मृषा करि जाना ॥
सो फलु मोहि विधाताँ दीन्हा। जो कछु उचित रहा सोइ कीन्हा ॥
अब विधि अस बूझिअ नहि तोही। संकर विमुख जिआवसि मोही ॥
कहि न जाई कछु हृदय गलानी। मन महुँ रामाहि सुमिर सयानी ॥
जौ प्रभु दीनदयालु कहावा। आरती हरन बेद जसु गावा ॥
तौ मैं बिनय करउँ कर जोरी। छूटउ बेगि देह यह मोरी ॥
जौं मोरे सिव चरन सनेहू। मन क्रम बचन सत्य ब्रतु पहू ॥

दो. तौ सबदरसी सुनिअ प्रभु करउ सो बेगि उपाइ।

होइ मरनु जेही बिनहिं श्रम दुसह बिपत्ति बिहाइ ॥ ५९ ॥

सो. जलु पय सरिस बिकाइ देखहु प्रीति कि रीति भलि।

बिलग होइ रसु जाइ कपट खटाई परत पुनि ॥ ५७ख ॥

एहि विधि दुखित प्रजेसकुमारी। अकथनीय दारुन दुखु भारी ॥
बीतैं संबत सहस सतासी। तजी समाधि संभु अबिनासी ॥

राम नाम सिव सुमिरन लागे। जानेउ सतीं जगतपति जागे ॥
जाइ संभु पद बंदनु कीन्ही। सनमुख संकर आसनु दीन्हा ॥
लगे कहन हरिकथा रसाला। दच्छ प्रजेस भए तेहि काला ॥
देखा विधि विचारि सब लायक। दच्छहि कीन्ह प्रजापति नायक ॥
बड अधिकार दच्छ जब पावा। अति अभिमानु हृदयँ तब आवा ॥
नहिं कोउ अस जनमा जग माहीं। प्रभुता पाइ जाहि मद नाहीं ॥

दो. दच्छ लिए मुनि बोलि सब करन लगे बड जाग।
नेवते सादर सकल सुर जे पावत मख भाग ॥ ६० ॥

किंनर नाग सिद्ध गंधर्वा। बधुन्ह समेत चले सुर सर्वा ॥
बिष्नु विरंचि महेसु बिहाई। चले सकल सुर जान बनाई ॥
सतीं बिलोके ब्योम विमाना। जात चले सुंदर विधि नाना ॥
सुर सुंदरी करहिं कल गाना। सुनत श्रवन छूटहिं मुनि ध्याना ॥
पूछेउ तब सिवँ कहेउ बखानी। पिता जग्य सुनि कछु हरषानी ॥
जौं महेसु मोहि आयसु देहीं। कुछ दिन जाइ रहौं मिस एहीं ॥
पति परित्याग हृदय दुखु भारी। कहइ न निज अपराध विचारी ॥
बोली सती मनोहर बानी। भय संकोच प्रेम रस सानी ॥

दो. पिता भवन उत्सव परम जौं प्रभु आयसु होइ।
तौ मै जाऊँ कृपायतन सादर देखन सोइ ॥ ६१ ॥

कहेहु नीक मोरेहुँ मन भावा। यह अनुचित नहिं नेवत पठावा ॥
दच्छ सकल निज सुता बोलाई। हमरें बयर तुम्हउ बिसराई ॥
ब्रह्मसभाँ हम सन दुखु माना। तेहि तें अजहुँ करहिं अपमाना ॥
जौं बिनु बोलेँ जाहु भवानी। रहइ न सीलु सनेहु न कानी ॥
जदपि मित्र प्रभु पितु गुर गेहा। जाइअ बिनु बोलेहुँ न सँदेहा ॥
तदपि विरोध मान जहँ कोई। तहाँ गएँ कल्यानु न होई ॥
भाँति अनेक संभु समझावा। भावी बस न ग्यानु उर आवा ॥
कह प्रभु जाहु जो विनहिं बोलाएँ। नहिं भलि बात हमारे भाएँ ॥

दो. कहि देखा हर जतन बहु रहइ न दच्छकुमारि।
दिए मुख्य गन संग तब बिदा कीन्ह त्रिपुरारि ॥ ६२ ॥

पिता भवन जब गई भवानी। दच्छ त्रास काहुँ न सनमानी ॥

सादर भलेहिं मिली एक माता। भगिनीं मिलीं बहुत मुसुकाता ॥
दच्छ न कछु पूछी कुसलाता। सतिहि बिलोकि जरे सब गाता ॥
सतीं जाइ देखेउ तब जागा। कतहुँ न दीख संभु कर भागा ॥
तब चित चढेउ जो संकर कहेऊ। प्रभु अपमानु समुझि उर दहेऊ ॥
पाछिल दुखु न हृदयँ अस ब्यापा। जस यह भयउ महा परितापा ॥
जद्यपि जग दारुन दुख नाना। सब तें कठिन जाति अवमाना ॥
समुझि सो सतिहि भयउ अति क्रोधा। बहु विधि जननीं कीन्ह प्रबोधा ॥

दो. सिव अपमानु न जाइ सहि हृदयँ न होइ प्रबोध।

सकल सभहिं हठि हटकि तब बोलीं बचन सक्रोध ॥ ६३ ॥

सुनहु सभासद सकल मुनिंदा। कही सुनी जिन्ह संकर निंदा ॥
सो फलु तुरत लहब सब काहूँ। भली भाँति पछिताब पिताहूँ ॥
संत संभु श्रीपति अपबादा। सुनिअ जहाँ तहँ असि मरजादा ॥
काटिअ तासु जीभ जो बसाई। श्रवन मूदि न त चलिअ पराई ॥
जगदातमा महेसु पुरारी। जगत जनक सब के हितकारी ॥
पिता मंदमति निंदत तेही। दच्छ सुक्र संभव यह देही ॥
तजिहउँ तुरत देह तेहि हेतू। उर धरि चंद्रमौलि बृषकेतू ॥
अस कहि जोग अगिनि तनु जारा। भयउ सकल मख हाहाकारा ॥

दो. सती मरनु सुनि संभु गन लगे करन मख खीस।

जग्य बिधंस बिलोकि भृगु रच्छा कीन्ह मुनीस ॥ ६४ ॥

समाचार सब संकर पाए। बीरभद्रु करि कोप पठाए ॥
जग्य बिधंस जाइ तिन्ह कीन्हा। सकल सुरन्ह विधिवत फलु दीन्हा ॥
भे जगविदित दच्छ गति सोई। जसि कछु संभु बिमुख कै होई ॥
यह इतिहास सकल जग जानी। ताते मै संछेप बखानी ॥
सतीं मरत हरि सन बरु मागा। जनम जनम सिव पद अनुरागा ॥
तेहि कारन हिमगिरि गृह जाई। जनमीं पारबती तनु पाई ॥
जब तें उमा सैल गृह जाई। सकल सिद्धि संपति तहँ छाई ॥
जहँ तहँ मुनिन्ह सुआश्रम कीन्हे। उचित बास हिम भूधर दीन्हे ॥

दो. सदा सुमन फल सहित सब द्रुम नव नाना जाति।

प्रगटीं सुंदर सैल पर मनि आकर बहु भाँति ॥ ६५ ॥

सरिता सब पुनित जलु बहहीं। खग मृग मधुप सुखी सब रहहीं ॥
सहज बयरु सब जीवन्ह त्यागा। गिरि पर सकल करहि अनुरागा ॥
सोह सैल गिरिजा गृह आएँ। जिमि जनु रामभगति के पाएँ ॥
नित नूतन मंगल गृह तासू। ब्रह्मादिक गावहिँ जसु जासू ॥
नारद समाचार सब पाए। कौतुकहीं गिरि गेह सिधाए ॥
सैलराज बड आदर कीन्हा। पद परखारि बर आसनु दीन्हा ॥
नारि सहित मुनि पद सिरु नावा। चरन सलिल सबु भवनु सिंचावा ॥
निज सौभाग्य बहुत गिरि बरना। सुता बोलि मेली मुनि चरना ॥

दो. त्रिकालग्य सर्वग्य तुम्ह गति सर्वत्र तुम्हारि ॥

कहहु सुता के दोष गुन मुनिबर हृदयँ बिचारि ॥ ६६ ॥

कह मुनि बिहसि गूढ मूढु बानी। सुता तुम्हारि सकल गुन खानी ॥
सुंदर सहज सुसील सयानी। नाम उमा अंबिका भवानी ॥
सब लच्छन संपन्न कुमारी। होइहि संतत पियहि पिआरी ॥
सदा अचल एहि कर अहिवाता। एहि तें जसु पैहहिँ पितु माता ॥
होइहि पूज्य सकल जग माहीं। एहि सेवत कछु दुर्लभ नाहीं ॥
एहि कर नामु सुमिरि संसारा। त्रिय चढहहिँ पतिव्रत असिधारा ॥
सैल सुलच्छन सुता तुम्हारी। सुनहु जे अब अवगुन दुइ चारी ॥
अगुन अमान मातु पितु हीना। उदासीन सब संसय छीना ॥

दो. जोगी जटिल अकाम मन नगन अमंगल बेष ॥

अस स्वामी एहि कहँ मिलिहि परी हस्त असि रेख ॥ ६७ ॥

सुनि मुनि गिरा सत्य जियँ जानी। दुख दंपतिहि उमा हरषानी ॥
नारदहुँ यह भेदु न जाना। दसा एक समुझब बिलगाना ॥
सकल सखीं गिरिजा गिरि मैना। पुलक सरीर भरे जल नैना ॥
होइ न मृषा देवरिषि भाषा। उमा सो बचनु हृदयँ धरि राखा ॥
उपजेउ सिव पद कमल सनेहू। मिलन कठिन मन भा संदेहू ॥
जानि कुअवसरु प्रीति दुराई। सखी उछँग बैठी पुनि जाई ॥
झूठि न होइ देवरिषि बानी। सोचहि दंपति सखीं सयानी ॥
उर धरि धीर कहइ गिरिराऊ। कहहु नाथ का करिअ उपाऊ ॥

दो. कह मुनीस हिमवंत सुनु जो बिधि लिखा लिलार।

देव दनुज नर नाग मुनि कोउ न मेटनिहार ॥ ६८ ॥

तदपि एक मैं कहउँ उपाई। होइ करै जौं दैउ सहाई ॥
जस बरु मैं बरनेउँ तुम्ह पाहीं। मिलहि उमहि तस संसय नाहीं ॥
जे जे बर के दोष बखाने। ते सब सिव पहि मैं अनुमाने ॥
जौं बिबाहु संकर सन होई। दोषउ गुन सम कह सबु कोई ॥
जौं अहि सेज सयन हरि करहीं। बुध कछु तिन्ह कर दोषु न धरहीं ॥
भानु कृसानु सर्व रस खाहीं। तिन्ह कहँ मंद कहत कोउ नाहीं ॥
सुभ अरु असुभ सलिल सब बहई। सुरसरि कोउ अपुनीत न कहई ॥
समरथ कहँ नहिँ दोषु गोसाई। रवि पावक सुरसरि की नाई ॥

दो. जौं अस हिसिषा करहिं नर जडि बिबेक अभिमान।

परहिं कल्प भरि नरक महुँ जीव कि ईस समान ॥ ६९ ॥

सुरसरि जल कृत बारुनि जाना। कबहुँ न संत करहिं तेहि पाना ॥
सुरसरि मिलें सो पावन जैसें। ईस अनीसहि अंतरु तैसें ॥
संभु सहज समरथ भगवाना। एहि बिबाहँ सब बिधि कल्याना ॥
दुराराध्य पै अहहिं महेसू। आसुतोष पुनि किएँ कलेसू ॥
जौं तपु करै कुमारी तुम्हारी। भाविउ मेटि सकहिं त्रिपुरारी ॥
जद्यपि बर अनेक जग माहीं। एहि कहँ सिव तजि दूसर नाहीं ॥
बर दायक प्रनतारति भंजन। कृपासिंधु सेवक मन रंजन ॥
इच्छित फल बिनु सिव अवराधे। लहिअ न कोटि जोग जप साधे ॥

दो. अस कहि नारद सुमिरि हरि गिरिजहि दीन्हि असीस।

होइहि यह कल्यान अब संसय तजहु गिरीस ॥ ७० ॥

कहि अस ब्रह्मभवन मुनि गयऊ। आगिल चरित सुनहु जस भयऊ ॥
पतिहि एकांत पाइ कह मैना। नाथ न मैं समुझे मुनि बैना ॥
जौं घर बरु कुलु होइ अनूपा। करिअ बिबाहु सुता अनुरुपा ॥
न त कन्या बरु रहउ कुआरी। कंत उमा मम प्रानपिआरी ॥
जौं न मिलहि बरु गिरिजहि जोगू। गिरि जड सहज कहिहि सबु लोगू ॥
सोइ बिचारि पति करेहु बिबाहू। जेहिं न बहोरि होइ उर दाहू ॥
अस कहि परि चरन धरि सीसा। बोले सहित सनेह गिरीसा ॥
बरु पावक प्रगतै ससि माहीं। नारद बचनु अन्यथा नाहीं ॥

दो. प्रिया सोचु परिहरहु सबु सुमिरहु श्रीभगवान।

पारबतिहि निरमयउ जेहिं सोइ करिहि कल्यान ॥ ७१ ॥

अब जौ तुम्हहि सुता पर नेहू। तौ अस जाइ सिखावन देहू ॥
करै सो तपु जेहिं मिलहिं महेसू। आन उपायँ न मिटहि कलेसू ॥
नारद बचन सगर्भ सहेतू। सुंदर सब गुन निधि वृषकेतू ॥
अस बिचारि तुम्ह तजहु असंका। सबहि भाँति संकरु अकलंका ॥
सुनि पति बचन हरषि मन माहीं। गई तुरत उठि गिरिजा पाहीं ॥
उमहि बिलोकि नयन भरे बारी। सहित सनेह गोद बैठारी ॥
बारहिं बार लेति उर लाई। गदगद कंठ न कछु कहि जाई ॥
जगत मातु सर्वग्य भवानी। मातु सुखद बोलीं मृदु बानी ॥

दो. सुनहि मातु मै दीख अस सपन सुनावउँ तोहि।

सुंदर गौर सुविप्रवर अस उपदेसेउ मोहि ॥ ७२ ॥

करहि जाइ तपु सैलकुमारी। नारद कहा सो सत्य बिचारी ॥
मातु पितहि पुनि यह मत भावा। तपु सुखप्रद दुख दोष नसावा ॥
तपबल रचइ प्रपंच बिधाता। तपबल बिष्नु सकल जग त्राता ॥
तपबल संभु करहिं संघारा। तपबल सेषु धरइ महिभारा ॥
तप आधार सब सृष्टि भवानी। करहि जाइ तपु अस जियँ जानी ॥
सुनत बचन बिसमित महतारी। सपन सुनायउ गिरिहि हँकारी ॥
मातु पितुहि बहुविधि समुझाई। चलीं उमा तप हित हरषाई ॥
प्रिय परिवार पिता अरु माता। भए बिकल मुख आव न बाता ॥

दो. बेदसिरा मुनि आइ तब सबहि कहा समुझाइ ॥

पारबती महिमा सुनत रहे प्रबोधहि पाइ ॥ ७३ ॥

उर धरि उमा प्रानपति चरना। जाइ विपिन लागीं तपु करना ॥
अति सुकुमार न तनु तप जोगू। पति पद सुमिरि तजेउ सबु भोगू ॥
नित नव चरन उपज अनुरागा। बिसरी देह तपहिं मनु लागा ॥
संबत सहस मूल फल खाए। सागु खाइ सत बरष गवाँए ॥
कछु दिन भोजनु बारि बतासा। किए कठिन कछु दिन उपवासा ॥
बेल पाती महि परइ सुखाई। तीनि सहस संबत सोई खाई ॥
पुनि परिहरे सुखानेउ परना। उमहि नाम तब भयउ अपरना ॥

देखि उमहि तप खीन सरीरा। ब्रह्मगिरा भै गगन गभीरा ॥

दो. भयउ मनोरथ सुफल तव सुनु गिरिजाकुमारि।

परिहरु दुसह कलेस सब अब मिलिहहि त्रिपुरारि ॥ ७४ ॥

अस तपु काहुँ न कीन्ह भवानी। भउ अनेक धीर मुनि ग्यानी ॥

अब उर धरहु ब्रह्म बर बानी। सत्य सदा संतत सुचि जानी ॥

आवै पिता बोलावन जबहीं। हठ परिहरि घर जाएहु तबहीं ॥

मिलिहैं तुम्हहि जब सप्त रिषीसा। जानेहु तब प्रमान बागीसा ॥

सुनत गिरा बिधि गगन बखानी। पुलक गात गिरिजा हरषानी ॥

उमा चरित सुंदर मैं गावा। सुनहु संभु कर चरित सुहावा ॥

जब तें सती जाइ तनु त्यागा। तब सें सिव मन भयउ बिरागा ॥

जपहिं सदा रघुनायक नामा। जहँ तहँ सुनहिं राम गुन ग्रामा ॥

दो. चिदानन्द सुखधाम सिव बिगत मोह मद काम।

बिचरहिं महि धरि हृदयँ हरि सकल लोक अभिराम ॥ ७५ ॥

कतहुँ मुनिन्ह उपदेसहिं ग्याना। कतहुँ राम गुन करहिं बखाना ॥

जदपि अकाम तदपि भगवाना। भगत बिरह दुख दुखित सुजाना ॥

एहि बिधि गयउ कालु बहु बीती। नित नै होइ राम पद प्रीती ॥

नैमु प्रेमु संकर कर देखा। अबिचल हृदयँ भगति कै रेखा ॥

प्रगटै रामु कृतग्य कृपाला। रूप सील निधि तेज बिसाला ॥

बहु प्रकार संकरहि सराहा। तुम्ह बिनु अस ब्रतु को निरवाहा ॥

बहुबिधि राम सिवहि समुझावा। पारवती कर जन्मु सुनावा ॥

अति पुनीत गिरिजा कै करनी। बिस्तर सहित कृपानिधि बरनी ॥

दो. अब बिनती मम सुनेहु सिव जौं मो पर निज नेहु।

जाइ विवाहहु सैलजहि यह मोहि मार्गें देहु ॥ ७६ ॥

कह सिव जदपि उचित अस नाहीं। नाथ बचन पुनि मोटि न जाहीं ॥

सिर धरि आयसु करिअ तुम्हारा। परम धरमु यह नाथ हमारा ॥

मातु पिता गुर प्रभु कै बानी। बिनहिं बिचार करिअ सुभ जानी ॥

तुम्ह सब भौंति परम हितकारी। अग्या सिर पर नाथ तुम्हारी ॥

प्रभु तोषेउ सुनि संकर बचना। भक्ति बिबेक धर्म जुत रचना ॥

कह प्रभु हर तुम्हार पन रहेऊ। अब उर राखेहु जो हम कहेऊ ॥

अंतरधान भए अस भाषी। संकर सोइ मूरति उर राखी ॥
तबहिं सप्तरीषि सिव पहिं आए। बोले प्रभु अति बचन सुहाए ॥

दो. पारवती पहिं जाइ तुम्ह प्रेम परिच्छा लेहु।
गिरिहि प्रेरि पठएहु भवन दूरि करेहु संदेहु ॥ ७७ ॥

रिषिन्ह गौरि देखी तहँ कैसी। मूरतिमंत तपस्या जैसी ॥
बोले मुनि सुनु सैलकुमारी। करहु कवन कारन तपु भारी ॥
केहि अवराधहु का तुम्ह चहहू। हम सन सत्य मरमु किन कहहू ॥
कहत बचत मनु अति सकुचार्ई। हँसिहहु सुनि हमारि जडतार्ई ॥
मनु हठ परा न सुनइ सिखावा। चहत बारि पर भीति उठावा ॥
नारद कहा सत्य सोइ जाना। बिनु पंखन्ह हम चहहिं उडाना ॥
देखहु मुनि अबिवेकु हमारा। चाहिअ सदा सिवहि भरतारा ॥

दो. सुनत बचन बिहसे रिषय गिरिसंभव तब देह।
नारद कर उपदेसु सुनि कहहु बसेउ किसु गेह ॥ ७८ ॥

दच्छसुतन्ह उपदेसेन्हि जाई। तिन्ह फिरि भवनु न देखा आई ॥
चित्रकेतु कर घरु उन घाला। कनककसिपु कर पुनि अस हाला ॥
नारद सिख जे सुनहिं नर नारी। अवसि होहिं तजि भवनु भिखारी ॥
मन कपटी तन सज्जन चीन्हा। आपु सरिस सबही चह कीन्हा ॥
तेहि कें बचन मानि बिस्वासा। तुम्ह चाहहु पति सहज उदासा ॥
निर्गुन निलज कुबेष कपाली। अकुल अगेह दिगंबर ब्याली ॥
कहहु कवन सुखु अस बरु पाएँ। भल भूलिहु ठग के बौराएँ ॥
पंच कहें सिवँ सती बिवाही। पुनि अवडेरि मराएन्हि ताही ॥

दो. अब सुख सोवत सोचु नहि भीख मागि भव खाहिं।
सहज एकाकिन्ह के भवन कबहुँ कि नारि खटाहिं ॥ ७९ ॥

अजहुँ मानहु कहा हमारा। हम तुम्ह कहुँ बरु नीक बिचारा ॥
अति सुंदर सुचि सुखद सुसीला। गावहिं वेद जासु जस लीला ॥
दूषन रहित सकल गुन रासी। श्रीपति पुर बैकुंठ निवासी ॥
अस बरु तुम्हहि मिलाउब आनी। सुनत बिहसि कह बचन भवानी ॥
सत्य कहेहु गिरिभव तनु एहा। हठ न छूट छूटै बरु देहा ॥
कनकउ पुनि पषान तें होई। जारेहुँ सहजु न परिहर सोई ॥

नारद बचन न मैं परिहरऊँ। बसउ भवनु उजरउ नहिँ डरऊँ ॥
गुर कें बचन प्रतीति न जेही। सपनेहुँ सुगम न सुख सिधि तेही ॥

दो. महादेव अवगुन भवन बिष्नु सकल गुन धाम।

जेहि कर मनु रम जाहि सन तेहि तेही सन काम ॥ ८० ॥

जौं तुम्ह मिलतेहु प्रथम मुनीसा। सुनतिउँ सिख तुम्हारि धरि सीसा ॥
अब मैं जन्मु संभु हित हारा। को गुन दूषन करै बिचारा ॥
जौं तुम्हरे हठ हृदयँ बिसेषी। रहि न जाइ बिनु किएँ बरेषी ॥
तौ कौतुकिअन्ह आलसु नाहीं। बर कन्या अनेक जग माहीं ॥
जन्म कोटि लागि रगर हमारी। बरउँ संभु न त रहउँ कुआरी ॥
तजउँ न नारद कर उपदेसू। आपु कहहि सत बार महेसू ॥
मैं पा परउँ कहइ जगदंबा। तुम्ह गृह गवनहु भयउ बिलंबा ॥
देखि प्रेमो बोले मुनि ग्यानी। जय जय जगदंबिके भवानी ॥

दो. तुम्ह माया भगवान सिव सकल जगत पितु मातु।

नाइ चरन सिर मुनि चले पुनि पुनि हरषत गातु ॥ ८१ ॥

जाइ मुनिन्ह हिमवंतु पठाए। करि बिनती गिरजहिँ गृह ल्याए ॥
बहुरि सप्तारिषि सिव पहिँ जाई। कथा उमा कै सकल सुनाई ॥
भए मगन सिव सुनत सनेहा। हरषि सप्तारिषि गवने गेहा ॥
मनु थिर करि तब संभु सुजाना। लगे करन रघुनायक ध्याना ॥
तारकु असुर भयउ तेहि काला। भुज प्रताप बल तेज बिसाला ॥
तेहिँ सब लोक लोकपति जीते। भए देव सुख संपति रीते ॥
अजर अमर सो जीति न जाई। हारे सुर करि विविध लराई ॥
तब बिरंचि सन जाइ पुकारे। देखे विधि सब देव दुखारे ॥

दो. सब सन कहा बुझाइ विधि दनुज निधन तब होइ।

संभु सुक्र संभूत सुत एहि जीतइ रन सोइ ॥ ८२ ॥

मोर कहा सुनि करहु उपाई। होइहि ईस्वर करिहि सहाई ॥
सतीं जो तजी दच्छ मख देहा। जनमी जाइ हिमाचल गेहा ॥
तेहिँ तपु कीन्ह संभु पति लागी। सिव समाधि बैठे सबु त्यागी ॥
जदपि अहइ असमंजस भारी। तदपि बात एक सुनहु हमारी ॥
पठवहु कामु जाइ सिव पाहीं। करै छोभु संकर मन माहीं ॥

तव हम जाइ सिवहि सिर नाई। करवाउब विबाहु बरिआई ॥
एहि विधि भलेहि देवहित होई। मर अति नीक कहइ सबु कोई ॥
अस्तुति सुरन्ह कीन्हि अति हेतू। प्रगटेउ विषमवान झषकेतू ॥
दो. सुरन्ह कहीं निज बिपति सब सुनि मन कीन्ह विचार।
संभु बिरोध न कुसल मोहि बिहसि कहेउ अस मार ॥ ८३ ॥
तदपि करब मैं काजु तुम्हारा। श्रुति कह परम धरम उपकारा ॥
पर हित लागि तजइ जो देही। संतत संत प्रसंसहिं तेही ॥
अस कहि चलेउ सबहि सिरु नाई। सुमन धनुष कर सहित सहाई ॥
चलत मार अस हृदयँ विचारा। सिव बिरोध ध्रुव मरनु हमारा ॥
तव आपन प्रभाउ बिस्तारा। निज बस कीन्ह सकल संसारा ॥
कोपेउ जबहि बारिचरकेतू। छन महुँ मिटे सकल श्रुति सेतू ॥
ब्रह्मचर्ज ब्रत संजम नाना। धीरज धरम ग्यान विग्याना ॥
सदान्चार जप जोग विरागा। सभय बिबेक कटकु सब भागा ॥
छं. भागेउ बिबेक सहाय सहित सो सुभट संजुग महि मुरे।
सदग्रंथ पर्वत कंदरन्हि महुँ जाइ तेहि अवसर दुरे ॥
होनिहार का करतार को रखवार जग खरभरु परा।
दुइ माथ केहि रतिनाथ जेहि कहुँ कोपि कर धनु सरु धरा ॥
दो. जे सजीव जग अचर चर नारि पुरुष अस नाम।
ते निज निज मरजाद तजि भए सकल बस काम ॥ ८४ ॥
सब के हृदयँ मदन अभिलाषा। लता निहारि नवहिं तरु साखा ॥
नदी उमगि अंबुधि कहुँ धाई। संगम करहिं तलाव तलाई ॥
जहुँ असि दसा जडन्ह कै बरनी। को कहि सकइ सचेतन करनी ॥
पसु पच्छी नभ जल थलचारी। भए कामबस समय बिसारी ॥
मदन अंध व्याकुल सब लोका। निसि दिनु नहिं अवलोकहिं कोका ॥
देव दनुज नर किंनर ब्याला। प्रेत पिसाच भूत बेताला ॥
इन्ह कै दसा न कहेउँ बखानी। सदा काम के चरे जानी ॥
सिद्ध विरक्त महामुनि जोगी। तेपि कामबस भए बियोगी ॥
छं. भए कामबस जोगीस तापस पावँरन्हि की को कहै।
देखहिं चराचर नारिमय जे ब्रह्ममय देखत रहे ॥

अबला बिलोकहि पुरुषमय जगु पुरुष सब अबलामयं ।
दुइ दंड भरि ब्रह्मांड भीतर कामकृत कौतुक अयं ॥

सो. धरी न काहूँ धिर सबके मन मनसिज हरे ।
जे राखे रघुबीर ते उबरे तेहि काल महूँ ॥ ८५ ॥

उभय घरी अस कौतुक भयऊ । जौ लागि कामु संभु पहि गयऊ ॥
सिवहि बिलोकि ससंकेउ मारू । भयउ जथाथिति सबु संसारू ॥
भए तुरत सब जीव सुखारे । जिमि मद उतरि गएँ मतवारे ॥
रुद्रहि देखि मदन भय माना । दुराघरष दुर्गम भगवाना ॥
फिरत लाज कछु करि नहिं जाई । मरनु ठानि मन रचेसि उपाई ॥
प्रगटेसि तुरत रुचिर रितुराजा । कुसुमित नव तरु राजि बिराजा ॥
बन उपवन वापिका तडागा । परम सुभग सब दिसा बिभागा ॥
जहँ तहँ जनु उमगत अनुरागा । देखि मुएहुँ मन मनसिज जागा ॥

छं. जागइ मनोभव मुएहुँ मन बन सुभगता न परै कही ।
सीतल सुगंध सुमंद मारुत मदन अनल सखा सही ॥
बिकसे सरन्हि बहु कंज गुंजत पुंज मंजुल मधुकरा ।
कलहंस पिक सुक सरस रव करि गान नाचहि अपछरा ॥

दो. सकल कला करि कोटि विधि हारेउ सेन समेत ।
चली न अचल समाधि सिव कोपेउ हृदयनिकेत ॥ ८६ ॥

देखि रसाल बिटप बर साखा । तेहि पर चहेउ मदनु मन माखा ॥
सुमन चाप निज सर संधाने । अति रिस ताकि श्रवन लागि ताने ॥
छाडे बिषम बिसिख उर लागे । छुटि समाधि संभु तब जागे ॥
भयउ ईस मन छोभु बिसेषी । नयन उघारि सकल दिसि देखी ॥
सौरभ पल्लव मदनु बिलोका । भयउ कोपु कंपेउ त्रैलोका ॥
तब सिवँ तीसर नयन उघारा । चितवत कामु भयउ जरि छारा ॥
हाहाकार भयउ जग भारी । डरपे सुर भए असुर सुखारी ॥
समुझि कामसुखु सोचहिं भोगी । भए अकंटक साधक जोगी ॥

छं. जोगि अकंटक भए पति गति सुनत रति मुरुछित भई ।
रोदति बदति बहु भाँति करुना करति संकर पहि गई ।
अति प्रेम करि बिनती विविध विधि जोरि कर सन्मुख रही ।

प्रभु आसुतोष कृपाल सिव अबला निरखि बोले सही ॥

दो. अब तें रति तव नाथ कर होइहि नामु अनंगु।

बिनु बपु व्यापिहि सबहि पुनि सुनु निज मिलन प्रसंगु ॥ ८७ ॥

जब जदुबंस कृष्ण अवतारा। होइहि हरन महा महिभारा ॥
कृष्ण तनय होइहि पति तोरा। बचनु अन्यथा होइ न मोरा ॥
रति गवनी सुनि संकर बानी। कथा अपर अब कहउँ बखानी ॥
देवन्ह समाचार सब पाए। ब्रह्मादिक बैकुंठ सिधाए ॥
सब सुर बिष्णु बिरंचि समेता। गए जहाँ सिव कृपानिकेता ॥
पृथक पृथक तिन्ह कीन्हि प्रसंसा। भए प्रसन्न चंद्र अवतंसा ॥
बोले कृपासिंधु वृषकेतू। कहहु अमर आए केहि हेतू ॥
कह बिधि तुम्ह प्रभु अंतरजामी। तदपि भगति बस बिनवउँ स्वामी ॥

दो. सकल सुरन्ह के हृदयँ अस संकर परम उछाहु।

निज नयनन्हि देखा चहहिं नाथ तुम्हार बिबाहु ॥ ८८ ॥

यह उत्सव देखिअ भरि लोचन। सोइ कछु करहु मदन मद मोचन।
कामु जारि रति कहँ बरु दीन्हा। कृपासिंधु यह अति भल कीन्हा ॥
सासति करि पुनि करहिं पसाऊ। नाथ प्रभुन्ह कर सहज सुभाऊ ॥
पारवती तपु कीन्ह अपारा। करहु तासु अब अंगीकारा ॥
सुनि बिधि बिनय समुझि प्रभु बानी। ऐसेइ होउ कहा सुखु मानी ॥
तब देवन्ह दुंदुभी बजाई। बरषि सुमन जय जय सुर साई ॥
अवसरु जानि सप्तरीषि आए। तुरतहिं बिधि गिरिभवन पठाए ॥
प्रथम गए जहँ रही भवानी। बोले मधुर बचन छल सानी ॥

दो. कहा हमार न सुनेहु तब नारद कें उपदेस।

अब भा झूठ तुम्हार पन जारेउ कामु महेस ॥ ८९ ॥

मासपारायण, तीसरा विश्राम

सुनि बोलीं मुसकाइ भवानी। उचित कहेहु मुनिबर बिग्यानी ॥
तुम्हरें जान कामु अब जारा। अब लागि संभु रहे सबिकारा ॥
हमरें जान सदा सिव जोगी। अज अनवद्य अकाम अभोगी ॥
जौं मैं सिव सेये अस जानी। प्रीति समेत कर्म मन बानी ॥
तौ हमार पन सुनहु मुनीसा। करिहहिं सत्य कृपानिधि ईसा ॥

तुम्ह जो कहा हर जारेउ मारा। सोइ अति बड़ अबिवेकु तुम्हारा ॥
तात अनल कर सहज सुभाऊ। हिम तेहि निकट जाइ नहिं काऊ ॥
गएँ समीप सो अवसि नसाई। असि मन्मथ महेस की नाई ॥

दो. हियँ हरषे मुनि बचन सुनि देखि प्रीति बिस्वास ॥
चले भवानिहि नाइ सिर गए हिमाचल पास ॥ ९० ॥

सबु प्रसंगु गिरिपतिहि सुनावा। मदन दहन सुनि अति दुखु पावा ॥
बहुरि कहेउ रति कर बरदाना। सुनि हिमवंत बहुत सुखु माना ॥
हृदयँ बिचारि संभु प्रभुताई। सादर मुनिवर लिए बोलाई ॥
सुदिनु सुनखतु सुधरी सोचाई। बेगि बेदविधि लगन धराई ॥
पत्री सप्तारिषिन्ह सोइ दीन्ही। गहि पद बिनय हिमाचल कीन्ही ॥
जाइ बिधिहि दीन्हि सो पाती। वाचत प्रीति न हृदयँ समाती ॥
लगन बाचि अज सबहि सुनाई। हरषे मुनि सब सुर समुदाई ॥
सुमन वृष्टि नभ बाजन बाजे। मंगल कलस दसहुँ दिसि साजे ॥

दो. लगे सँवारन सकल सुर बाहन बिबिध बिमान।
होहि सगुन मंगल सुभद करहिं अपछरा गान ॥ ९१ ॥

सिवहि संभु गन करहिं सिंगारा। जटा मुकुट अहि मौरु सँवारा ॥
कुंडल कंकन पहिरे ब्याला। तन बिभूति पट केहरि छाला ॥
ससि ललाट सुंदर सिर गंगा। नयन तीनि उपवीत भुजंगा ॥
गरल कंठ उर नर सिर माला। असिव बेष सिवधाम कृपाला ॥
कर त्रिसूल अरु डमरु बिराजा। चले बसहँ चढि बाजहिं बाजा ॥
देखि सिवहि सुरत्रिय मुसुकाहीं। बर लायक दुलहिनि जग नाहीं ॥
बिष्नु विरंचि आदि सुरब्राता। चढि चढि बाहन चले बराता ॥
सुर समाज सब भाँति अनूपा। नहिं बरात दूलह अनुरूपा ॥

दो. बिष्नु कहा अस बिहसि तब बोलि सकल दिसिराज।
बिलग बिलग होइ चलहु सब निज निज सहित समाज ॥ ९२ ॥

बर अनुहारि बरात न भाई। हँसी करैहहु पर पुर जाई ॥
बिष्नु बचन सुनि सुर मुसकाने। निज निज सेन सहित बिलगाने ॥
मनहीं मन महेसु मुसुकाहीं। हरि के बिंग्य बचन नहिं जाहीं ॥
अति प्रिय बचन सुनत प्रिय केरे। भृंगिहि प्रेरि सकल गन टेरे ॥

सिव अनुसासन सुनि सब आए। प्रभु पद जलज सीस तिन्ह नाए ॥
नाना बाहन नाना बेषा। बिहसे सिव समाज निज देखा ॥
कोउ मुखहीन बिपुल मुख काहू। बिनु पद कर कोउ बहु पद बाहू ॥
बिपुल नयन कोउ नयन बिहीना। रिष्टपुष्ट कोउ अति तनखीना ॥

छं. तन खीन कोउ अति पीन पावन कोउ अपावन गति धरें।
भूषन कराल कपाल कर सब सद्य सोनित तन भरें ॥
खर स्वान सुअर सूकाल मुख गन बेष अगनित को गनै।
बहु जिनस प्रेत पिसाच जोगि जमात बरनत नहिं बनै ॥

सो. नाचहिं गावहिं गीत परम तरंगी भूत सब।
देखत अति बिपरीत बोलहिं बचन बिचित्र बिधि ॥ ९३ ॥

जस दूलहु तसि बनी बराता। कौतुक बिबिध होहिं मग जाता ॥
इहाँ हिमाचल रचेउ बिताना। अति बिचित्र नहिं जाइ बखाना ॥
सैल सकल जहँ लगि जग माहीं। लघु बिसाल नहिं बरनि सिराहीं ॥
बन सागर सब नदीं तलावा। हिमगिरि सब कहुँ नेवत पठावा ॥
कामरूप सुंदर तन धारी। सहित समाज सहित बर नारी ॥
गए सकल तुहिनाचल गेहा। गावहिं मंगल सहित सनेहा ॥
प्रथमहिं गिरि बहु गृह सँवराए। जथाजोगु तहँ तहँ सब छाए ॥
पुर सोभा अवलोकि सुहाई। लागइ लघु बिरंचि निपुनाई ॥

छं. लघु लाग बिधि की निपुनता अवलोकि पुर सोभा सही।
बन बाग कूप तडाग सरिता सुभग सब सक को कही ॥
मंगल बिपुल तोरन पताका केतु गृह गृह सोहहीं ॥
बनिता पुरुष सुंदर चतुर छवि देखि मुनि मन मोहहीं ॥

दो. जगदंबा जहँ अवतरी सो पुरु बरनि कि जाइ।
रिद्धि सिद्धि संपत्ति सुख नित नूतन अधिकाइ ॥ ९४ ॥

नगर निकट बरात सुनि आई। पुर खरभरु सोभा अधिकाई ॥
करि बनाव सजि बाहन नाना। चले लेन सादर अगवाना ॥
हियँ हरषे सुर सेन निहारी। हरिहि देखि अति भए सुखारी ॥
सिव समाज जब देखन लागे। बिडरि चले बाहन सब भागे ॥
धरि धीरजु तहँ रहे सयाने। बालक सब लै जीव पराने ॥

गएँ भवन पूछहिं पितु माता। कहहिं बचन भय कंपित गाता ॥
कहिअ काह कहि जाइ न बाता। जम कर धार किधौं बरिआता ॥
बरु बौराह बसहँ असवारा। ब्याल कपाल बिभूषन छारा ॥

छं. तन छार ब्याल कपाल भूषन नगन जाटिल भयंकरा।
सँग भूत प्रेत पिसाच जोगिनि विकट मुख रजनीचरा ॥
जो जिअत रहिहि बरात देखत पुन्य बड तेहि कर सही।
देखिहि सो उमा बिबाहु घर घर बात असि लरिकन्ह कही ॥

दो. समुझि महेस समाज सब जननि जनक मुसुकाहिं।
बाल बुझाए विविध विधि निडर होहु डरु नाहिं ॥ ९५ ॥

लै अगवान बरातहि आए। दिए सबहि जनवास सुहाए ॥
मैनाँ सुभ आरती सँवारी। संग सुमंगल गावहिं नारी ॥
कंचन थार सोह बर पानी। परिछन चली हरहि हरषानी ॥
विकट बेष रुद्रहि जब देखा। अबलन्ह उर भय भयउ बिसेषा ॥
भागि भवन पैठीं अति त्रासा। गए महेसु जहाँ जनवासा ॥
मैना हृदयँ भयउ दुखु भारी। लीन्ही बोलि गिरीसकुमारी ॥
अधिक सनेहँ गोद बैठारी। स्याम सरोज नयन भरे बारी ॥
जेहिं विधि तुम्हहि रूपु अस दीन्हा। तेहिं जड बरु बाउर कस कीन्हा ॥

छं. कस कीन्ह बरु बौराह विधि जेहिं तुम्हहि सुंदरता दई।
जो फलु चहिअ सुरतरुहिं सो बरबस बबूरहिं लागई ॥
तुम्ह सहित गिरि तें गिरौं पावक जरौं जलनिधि महुँ परौं ॥
घरु जाउ अपजसु होउ जग जीवत बिबाहु न हौं करौं ॥

दो. भई विकल अबला सकल दुखित देखि गिरिनारि।
करि विलापु रोदति बदति सुता सनेहु सँभारि ॥ ९६ ॥

नारद कर मैं काह बिगारा। भवनु मोर जिन्ह बसत उजारा ॥
अस उपदेसु उमहि जिन्ह दीन्हा। बौरै बरहि लागि तपु कीन्हा ॥
साचेहुँ उन्हे के मोह न माया। उदासीन धनु धामु न जाया ॥
पर घर घालक लाज न भीरा। बाझँ कि जान प्रसव कैं पीरा ॥
जननिहि विकल बिलोकि भवानी। बोली जुत बिबेक महु बानी ॥
अस विचारि सोचहि मति माता। सो न टरइ जो रचइ बिधाता ॥

करम लिखा जौ बाउर नाहू। तौ कत दोसु लगाइअ काहू ॥
तुम्ह सन मिटहिं कि विधि के अंका। मातु व्यर्थ जनि लेहु कलंका ॥
छं. जनि लेहु मातु कलंकु करुना परिहरहु अवसर नहीं।
दुखु सुखु जो लिखा लिलार हमरें जाब जहँ पाउब तहीं ॥
सुनि उमा बचन बिनीत कोमल सकल अबला सोचहीं ॥
बहु भाँति विधिहि लगाइ दूषन नयन बारि विमोचहीं ॥
दो. तेहि अवसर नारद सहित अरु रिषि सप्त समेत।
समाचार सुनि तुहिनगिरि गवने तुरत निकेत ॥ ९७ ॥
तब नारद सबहि समुझावा। पूरुब कथाप्रसंगु सुनावा ॥
मयना सत्य सुनहु मम बानी। जगदंबा तव सुता भवानी ॥
अजा अनादि सक्ति अविनासिनि। सदा संभु अरधंग निवासिनि ॥
जग संभव पालन लय कारिनि। निज इच्छा लीला बपु धारिनि ॥
जनमीं प्रथम दच्छ गृह जाई। नामु सती सुंदर तनु पाई ॥
तहँहुँ सती संकरहि बिबाहीं। कथा प्रसिद्ध सकल जग माहीं ॥
एक बार आवत सिव संग्गा। देखेउ रघुकुल कमल पतंग्गा ॥
भयउ मोहु सिव कहा न कीन्हा। भ्रम बस बेषु सीय कर लीन्हा ॥
छं. सिय बेषु सती जो कीन्ह तेहि अपराध संकर परिहरौं।
हर बिरहँ जाइ बहोरि पितु कें जग्य जोगानल जरीं ॥
अब जनमि तुम्हरे भवन निज पति लागि दारुन तपु किया।
अस जानि संसय तजहु गिरिजा सर्वदा संकर प्रिया ॥
दो. सुनि नारद के बचन तब सब कर मिटा बिषाद।
छन महुँ ब्यापेउ सकल पुर घर घर यह संवाद ॥ ९८ ॥
तब मयना हिमवंतु अनंदे। पुनि पुनि पारबती पद बंदे ॥
नारि पुरुष सिसु जुबा सयाने। नगर लोग सब अति हरषाने ॥
लगे होन पुर मंगलगाना। सजे सबहि हाटक घट नाना ॥
भाँति अनेक भई जेवराना। सूपसास्त्र जस कछु ब्यवहारा ॥
सो जेवनार कि जाइ बखानी। बसहिं भवन जेहिं मातु भवानी ॥
सादर बोले सकल बराती। विष्नु बिरंचि देव सब जाती ॥
बिबिधि पाँति बैठी जेवनारा। लागे परुसन निपुन सुआरा ॥

नारिबुंद सुर जेवँत जानी। लगीं देन गारीं मृदु बानी ॥

छं. गारीं मधुर स्वर देहिं सुंदरि विंग्य बचन सुनावहीं।
भोजनु करहिं सुर अति बिलंबु विनोदु सुनि सचु पावहीं ॥
जेवँत जो बह्यो अनंदु सो मुख कोटिहूँ न परै कह्यो।
अचवाँइ दीन्हे पान गवने बास जहँ जाको रह्यो ॥

दो. बहुरि मुनिन्ह हिमवंत कहँ लगन सुनाई आइ।
समय बिलोकि विबाह कर पठए देव बोलाइ ॥ ९९ ॥

बोलि सकल सुर सादर लीन्हे। सबहि जथोचित आसन दीन्हे ॥
बेदी बेद विधान सँवारी। सुभग सुमंगल गावहिं नारी ॥
सिंघासन अति दिव्य सुहावा। जाइ न बरनि बिरंचि बनावा ॥
बैठे सिव विप्रन्ह सिरु नाई। हृदयँ सुमिरि निज प्रभु रघुराई ॥
बहुरि मुनीसन्ह उमा बोलाई। करि सिंगारु सखीं लै आई ॥
देखत रूपु सकल सुर मोहे। बरनै छवि अस जग कवि को है ॥
जगदंबिका जानि भव भामा। सुरन्ह मनहिं मन कीन्ह प्रनामा ॥
सुंदरता मरजाद भवानी। जाइ न कोटिहूँ बदन बखानी ॥

छं. कोटिहूँ बदन नहिं बनै बरनत जग जननि सोभा महा।
सकुचहिं कहत श्रुति सेष सारद मंदमति तुलसी कहा ॥
छविखानि मातु भवानि गवनी मध्य मंडप सिव जहाँ ॥
अवलोकिक सकहिं न सकुच पति पद कमल मनु मधुकरु तहाँ ॥

दो. मुनि अनुसासन गनपतिहि पूजेउ संभु भवानि।
कोउ सुनि संसय करै जनि सुर अनादि जियँ जानि ॥ १०० ॥

जसि विबाह कै विधि श्रुति गाई। महामुनिन्ह सो सब करवाई ॥
गहि गिरीस कुस कन्या पानी। भवहि समरपीं जानि भवानी ॥
पानिग्रहन जब कीन्ह महेसा। हियँ हरषे तब सकल सुरेसा ॥
बेद मंत्र मुनिबर उच्चरहीं। जय जय जय संकर सुर करहीं ॥
बाजहिं बाजन विविध विधाना। सुमनवृष्टि नभ भै विधि नाना ॥
हर गिरिजा कर भयउ विबाह। सकल भुवन भरि रहा उछाह ॥
दासीं दास तुरग रथ नागा। धेनु बसन मनि बस्तु बिभागा ॥

अन्न कनकभाजन भरि जाना। दाइज दीन्ह न जाइ बखाना ॥

छं. दाइज दियो बहु भाँति पुनि कर जोरि हिमभूधर कछ्यो।
का देउँ पूरनकाम संकर चरन पंकज गहि रह्यो ॥
सिवँ कृपासागर ससुर कर संतोषु सब भाँतिहिं कियो।
पुनि गहे पद पाथोज मयनाँ प्रेम परिपूरन हियो ॥

दो. नाथ उमा मन प्रान सम गृहकिंकरी करेहु।
छमेहु सकल अपराध अब होइ प्रसन्न बरु देहु ॥ १०१ ॥

बहु विधि संभु सास समुझाई। गवनी भवन चरन सिरु नाई ॥
जननी उमा बोलि तब लीन्ही। लै उछंग सुंदर सिख दीन्ही ॥
करेहु सदा संकर पद पूजा। नारिधरमु पति देउ न दूजा ॥
बचन कहत भरे लोचन बारी। बहुरि लाइ उर लीन्ह कुमारी ॥
कत विधि सृजीं नारि जग माहीं। पराधीन सपनेहुँ सुखु नाहीं ॥
भै अति प्रेम बिकल महतारी। धीरजु कीन्ह कुसमय विचारी ॥
पुनि पुनि मिलति परति गहि चरना। परम प्रेम कछु जाइ न बरना ॥
सब नारिन्ह मिलि भेटि भवानी। जाइ जननि उर पुनि लपटानी ॥

छं. जननिहि बहुरि मिलि चली उचित असीस सब काहूँ दई।
फिरि फिरि बिलोकति मातु तन तब सरखीं लै सिव पहिं गई ॥
जाचक सकल संतोषि संकरु उमा सहित भवन चले।
सब अमर हरषे सुमन बरषि निसान नभ बाजे भले ॥

दो. चले संग हिमवंतु तब पहुँचावन अति हेतु।
विविध भाँति परितोषु करि बिदा कीन्ह वृषकेतु ॥ १०२ ॥

तुरत भवन आए गिरिराई। सकल सैल सर लिए बोलाई ॥
आदर दान बिनय बहुमाना। सब कर बिदा कीन्ह हिमवाना ॥
जबहिं संभु कैलासहिं आए। सुर सब निज निज लोक सिधाए ॥
जगत मातु पितु संभु भवानी। तेही सिंगारु न कहउँ बखानी ॥
करहिं विविध विधि भोग बिलासा। गनन्ह समेत बसाहिं कैलासा ॥
हर गिरिजा बिहार नित नयऊ। एहि विधि बिपुल काल चलि गयऊ ॥
तब जनमेउ षटबदन कुमारा। तारकु असुर समर जेहिं मारा ॥
आगम निगम प्रसिद्ध पुराना। घन्मुख जन्मु सकल जग जाना ॥

छं. जगु जान षन्मुख जन्मु कर्मु प्रतापु पुरुषारथु महा।
तेहि हेतु मै बृषकेतु सुत कर चरित संछेपहिं कहा ॥
यह उमा संगु बिबाहु जे नर नारि कहहिं जे गावहीं।
कल्यान काज बिबाह मंगल सर्वदा सुखु पावहीं ॥

दो. चरित सिंधु गिरिजा रमन बेद न पावहिं पारु।
बरनै तुलसीदासु किमि अति मतिमंद गवाँरु ॥ १०३ ॥

संभु चरित सुनि सरस सुहावा। भरद्वाज मुनि अति सुख पावा ॥
बहु लालसा कथा पर बाढी। नयनन्हि नीरु रोमावलि ठाढी ॥
प्रेम बिबस मुख आव न बानी। दसा देखि हरषे मुनि ग्यानी ॥
अहो धन्य तव जन्मु मुनीसा। तुम्हहि प्रान सम प्रिय गौरीसा ॥
सिव पद कमल जिन्हहि रति नाहीं। रामहि ते सपनेहुँ न सोहाहीं ॥
बिनु छल विस्वनाथ पद नेहू। राम भगत कर लच्छन एहू ॥
सिव सम को रघुपति ब्रतधारी। बिनु अघ तजी सती असि नारी ॥
पनु करि रघुपति भगति देखाई। को सिव सम रामहि प्रिय भाई ॥

दो. प्रथमहिं मै कहि सिव चरित बूझा मरमु तुम्हार।
सुचि सेवक तुम्ह राम के रहित समस्त बिकार ॥ १०४ ॥

मै जाना तुम्हार गुन सीला। कहउँ सुनहु अब रघुपति लीला ॥
सुनु मुनि आजु समागम तोरें। कहि न जाइ जस सुखु मन मोरें ॥
राम चरित अति अमित मुनिसा। कहि न सकहिं सत कोटि अहीसा ॥
तदपि जथाश्रुत कहउँ बखानी। सुमिरि गिरापति प्रभु धनुपानी ॥
सारद दारुनारि सम स्वामी। रामु सूत्रधर अंतरजामी ॥
जेहि पर कृपा करहिं जनु जानी। कबि उर अजिर नचावहिं बानी ॥
प्रनवउँ सोइ कृपाल रघुनाथा। बरनउँ बिसद तासु गुन गाथा ॥
परम रम्य गिरिबरु कैलासू। सदा जहाँ सिव उमा निवासू ॥

दो. सिद्ध तपोधन जोगिजन सूर किंनर मुनिबृंद।
बसहिं तहाँ सुकृती सकल सेवहिं सिव सुखकंद ॥ १०५ ॥

हरि हर बिमुख धर्म रति नाहीं। ते नर तहँ सपनेहुँ नहिं जाहीं ॥
तेहि गिरि पर बट बिटप बिसाला। नित नूतन सुंदर सब काला ॥
त्रिविध समीर सुसीतलि छाया। सिव विश्राम बिटप श्रुति गाया ॥

एक बार तेहि तर प्रभु गयऊ। तरु बिलोकि उर अति सुखु भयऊ ॥
निज कर ड़ासि नागरिपु छाला। बैठै सहजहि संभु कृपाला ॥
कुंद इंदु दर गौर सरीरा। भुज प्रलंब परिधन मुनिचीरा ॥
तरुन अरुन अंबुज सम चरना। नख दुति भगत हृदय तम हरना ॥
भुजग भूति भूषन त्रिपुरारी। आननु सरद चंद छबि हारी ॥

दो. जटा मुकुट सुरसरित सिर लोचन नलिन विसाल।
नीलकंठ लावन्यनिधि सोह बालबिधु भाल ॥ १०६ ॥

बैठे सोह कामरिपु कैसैं। धरैं सरीरु सांतरसु जैसैं ॥
पारवती भल अवसरु जानी। गई संभु पहिं मातु भवानी ॥
जानि प्रिया आदरु अति कीन्हा। बाम भाग आसनु हर दीन्हा ॥
बैठीं सिव समीप हरषाई। पूरुब जन्म कथा चित आई ॥
पति हियँ हेतु अधिक अनुमानी। बिहसि उमा बोलीं प्रिय बानी ॥
कथा जो सकल लोक हितकारी। सोइ पूछन चह सैलकुमारी ॥
बिस्वनाथ मम नाथ पुरारी। त्रिभुवन महिमा बिदित तुम्हारी ॥
चर अरु अचर नाग नर देवा। सकल करहिं पद पंकज सेवा ॥

दो. प्रभु समरथ सर्वग्य सिव सकल कला गुन धाम ॥
जोग ग्यान बैराग्य निधि प्रनत कलपतरु नाम ॥ १०७ ॥

जौं मो पर प्रसन्न सुखरासी। जानिअ सत्य मोहि निज दासी ॥
तौं प्रभु हरहु मोर अग्याना। कहि रघुनाथ कथा बिधि नाना ॥
जासु भवनु सुरतरु तर होई। सहि कि दरिद्र जनित दुखु सोई ॥
ससिभूषन अस हृदयँ बिचारी। हरहु नाथ मम मति भ्रम भारी ॥
प्रभु जे मुनि परमारथवादी। कहहिं राम कहूँ ब्रह्म अनादी ॥
सेस सारदा बेद पुराना। सकल करहिं रघुपति गुन गाना ॥
तुम्ह पुनि राम राम दिन राती। सादर जपहु अनंग आराती ॥
रामु सो अवध नृपति सुत सोई। की अज अगुन अलखगति कोई ॥

दो. जौं नृप तनय त ब्रह्म किमि नारि बिरहँ मति भोरि।
देख चरित महिमा सुनत भ्रमति बुद्धि अति मोरि ॥ १०८ ॥

जौं अनीह व्यापक बिभु कोऊ। कबहु बुझाइ नाथ मोहि सोऊ ॥
अग्य जानि रिस उर जानि धरहु। जेहि बिधि मोह मिटै सोइ करहु ॥

मै बन दीखि राम प्रभुताई। अति भय विकल न तुम्हहि सुनाई ॥
 तदपि मलिन मन बोधु न आवा। सो फलु भली भाँति हम पावा ॥
 अजहूँ कछु संसउ मन मोरे। करहु कृपा बिनवउँ कर जोरें ॥
 प्रभु तब मोहि बहु भाँति प्रबोधा। नाथ सो समुझि करहु जनि क्रोधा ॥
 तब कर अस विमोह अब नाहीं। रामकथा पर रुचि मन माहीं ॥
 कहहु पुनीत राम गुन गाथा। भुजगराज भूषन सुरनाथा ॥

दो. बंदउ पद धरि धरनि सिरु बिनय करउँ कर जोरि।
 बरनहु रघुबर बिसद जसु श्रुति सिद्धांत निचोरि ॥ १०९ ॥

जदपि जोषिता नहिँ अधिकारी। दासी मन क्रम बचन तुम्हारी ॥
 गूढउ तत्व न साधु दुरावहिँ। आरत अधिकारी जहँ पावहिँ ॥
 अति आरति पूछउँ सुरराया। रघुपति कथा कहहु करि दाया ॥
 प्रथम सो कारन कहहु विचारी। निर्गुन ब्रह्म सगुन बपु धारी ॥
 पुनि प्रभु कहहु राम अवतारा। बालचरित पुनि कहहु उदारा ॥
 कहहु जथा जानकी बिबाहीं। राज तजा सो दूषन काहीं ॥
 बन बसि कीन्हे चरित अपारा। कहहु नाथ जिमि रावन मारा ॥
 राज बैठि कीन्हीं बहु लीला। सकल कहहु संकर सुखलीला ॥

दो. बहुरि कहहु करुनायतन कीन्हे जो अचरज राम।
 प्रजा सहित रघुवंसमनि किमि गवने निज धाम ॥ ११० ॥

पुनि प्रभु कहहु सो तत्व बखानी। जेहिँ विग्यान मगन मुनि ग्यानी ॥
 भगति ग्यान विग्यान विरागा। पुनि सब बरनहु सहित विभागा ॥
 औरउ राम रहस्य अनेका। कहहु नाथ अति विमल विबेका ॥
 जो प्रभु मैं पूछा नहि होई। सोउ दयाल राखहु जनि गोई ॥
 तुम्ह त्रिभुवन गुर बेद बखाना। आन जीव पाँवर का जाना ॥
 प्रस्र उमा कै सहज सुहाई। छल बिहीन सुनि सिव मन भाई ॥
 हर हिउँ रामचरित सब आए। प्रेम पुलक लोचन जल छाए ॥
 श्रीरघुनाथ रूप उर आवा। परमानंद अमित सुख पावा ॥

दो. मगन ध्यानरस दंड जुग पुनि मन बाहेर कीन्हे।
 रघुपति चरित महेस तब हरषित बरनै लीन्हे ॥ १११ ॥

झूटेउ सत्य जाहि बिनु जानें। जिमि भुजंग बिनु रजु पहिचानें ॥

जेहि जानें जग जाइ हेराई। जागें जथा सपन भ्रम जाई ॥
बंदउँ बालरूप सोई रामू। सब सिधि सुलभ जपत जिसु नामू ॥
मंगल भवन अमंगल हारी। द्रवउ सो दसरथ अजिर बिहारी ॥
करि प्रनाम रामहि त्रिपुरारी। हरषि सुधा सम गिरा उचारी ॥
धन्य धन्य गिरिराजकुमारी। तुम्ह समान नहिं कोउ उपकारी ॥
पूँछेहु रघुपति कथा प्रसंगा। सकल लोक जग पावनि गंगा ॥
तुम्ह रघुवीर चरन अनुरागी। कीन्हहु प्रसन्न जगत हित लागी ॥

दो. रामकृपा तें पारवति सपनेहुँ तव मन माहिं।

सोक मोह संदेह भ्रम मम विचार कछु नाहिं ॥ ११२ ॥

तदपि असंका कीन्हिहु सोई। कहत सुनत सब कर हित होई ॥
जिन्ह हरि कथा सुनी नहिं काना। श्रवन रंध्र अहिभवन समाना ॥
नयनन्हि संत दरस नहिं देखा। लोचन मोरपंख कर लेखा ॥
ते सिर कटु तुंबरि समतूला। जे न नमत हरि गुर पद मूला ॥
जिन्ह हरिभगति हृदयँ नहिं आनी। जीवत सब समान तेइ प्राणी ॥
जो नहिं करइ राम गुन गाना। जीह सो दादुर जीह समाना ॥
कुलिस कठोर निठुर सोइ छाती। सुनि हरिचरित न जो हरषाती ॥
गिरिजा सुनहु राम कै लीला। सुर हित दनुज बिमोहनसीला ॥

दो. रामकथा सुरधेनु सम सेवत सब सुख दानि।

सतसमाज सुरलोक सब को न सुनै अस जानि ॥ ११३ ॥

रामकथा सुंदर कर तारी। संसय बिहग उडावनिहारी ॥
रामकथा कलि विटप कुठारी। सादर सुनु गिरिराजकुमारी ॥
राम नाम गुन चरित सुहाए। जनम करम अगनित श्रुति गाए ॥
जथा अनंत राम भगवाना। तथा कथा कीरति गुन नाना ॥
तदपि जथा श्रुत जसि मति मोरी। कहिहउँ देखि प्रीति अति तोरी ॥
उमा प्रसन्न तव सहज सुहाई। सुखद संतसंमत मोहि भाई ॥
एक बात नहि मोहि सोहानी। जदपि मोह बस कहेहु भवानी ॥
तुम जो कहा राम कोउ आना। जेहि श्रुति गाव धरहिं मुनि ध्याना ॥

दो. कहहि सुनहि अस अधम नर ग्रसे जे मोह पिसाच।

पाषंडी हरि पद विमुख जानहिं झूठ न साच ॥ ११४ ॥

अग्य अकोविद् अंध अभागी। काई विषय मुकर मन लागी ॥
लंपट कपटी कुटिल बिसेषी। सपनेहुँ संतसभा नहिं देखी ॥
कहहिं ते बेद असंमत बानी। जिन्ह कें सूझ लाभु नहिं हानी ॥
मुकर मलिन अरु नयन बिहीना। राम रूप देखहिं किमि दीना ॥
जिन्ह कें अगुन न सगुन बिबेका। जल्पहिं कल्पित बचन अनेका ॥
हरिमाया बस जगत भ्रमाहीं। तिन्हहिं कहत कछु अघटित नाहीं ॥
बातुल भूत विबस मतवारे। ते नहिं बोलहिं बचन बिचारे ॥
जिन्ह कृत महामोह मद पाना। तिन् कर कहा करिअ नहिं काना ॥
सो. अस निज हृदयँ विचारि तजु संसय भजु राम पद।

सुनु गिरिराज कुमारि भ्रम तम रवि कर बचन मम ॥ ११५ ॥

सगुनहि अगुनहि नहिं कछु भेदा। गावहिं मुनि पुरान बुध बेदा ॥
अगुन अरुप अलख अज जोई। भगत प्रेम बस सगुन सो होई ॥
जो गुन रहित सगुन सोइ कैसैं। जलु हिम उपल बिलग नहिं जैसैं ॥
जासु नाम भ्रम तिमिर पतंगा। तेहि किमि कहिअ बिमोह प्रसंगा ॥
राम सच्चिदानंद दिनेसा। नहिं तहँ मोह निसा लवलेसा ॥
सहज प्रकासरुप भगवाना। नहिं तहँ पुनि बिग्यान विहाना ॥
हरष बिषाद ग्यान अग्याना। जीव धर्म अहमिति अभिमाना ॥
राम ब्रह्म ब्यापक जग जाना। परमानन्द परेस पुराना ॥

दो. पुरुष प्रसिद्ध प्रकास निधि प्रगट परावर नाथ ॥

रघुकुलमनि मम स्वामि सोइ कहि सिवँ नायउ माथ ॥ ११६ ॥

निज भ्रम नहिं समुझहिं अग्यानी। प्रभु पर मोह धरहिं जड प्रानी ॥
जथा गगन घन पटल निहारी। झाँपेउ मानु कहहिं कुबिचारी ॥
चितव जो लोचन अंगुलि लाएँ। प्रगट जुगल ससि तेहि के भाएँ ॥
उमा राम विषइक अस मोहा। नभ तम धूम धूरि जिमि सोहा ॥
विषय करन सुर जीव समेता। सकल एक तैं एक सचेता ॥
सब कर परम प्रकासक जोई। राम अनादि अवधपति सोई ॥
जगत प्रकास्य प्रकासक रामू। मायाधीस ग्यान गुन धामू ॥
जासु सत्यता तैं जड माया। भास सत्य इव मोह सहाया ॥

दो. रजत सीप महुँ मास जिमि जथा भानु कर वारि।

जदपि मृषा तिहूँ काल सोइ भ्रम न सकइ कोउ टारि ॥ ११७ ॥

एहि बिधि जग हरि आश्रित रहई। जदपि असत्य देत दुख अहई ॥
जौ सपनें सिर काटे कोई। विनु जागें न दूरि दुख होई ॥
जासु कृपाँ अस भ्रम मिटि जाई। गिरिजा सोइ कृपाल रघुराई ॥
आदि अंत कोउ जासु न पावा। मति अनुमानि निगम अस गावा ॥
विनु पद चलइ सुनइ विनु काना। कर विनु करम करइ बिधि नाना ॥
आनन रहित सकल रस भोगी। विनु बानी बकता बड जोगी ॥
तनु विनु परस नयन विनु देखा। ग्रहइ घान विनु बास असेषा ॥
असि सब भाँति अलौकिक करनी। महिमा जासु जाइ नहिं बरनी ॥

दो. जेहि इमि गावहि बेद बुध जाहि धरहिं मुनि ध्यान ॥

सोइ दसरथ सुत भगत हित कोसलपति भगवान ॥ ११८ ॥

कासीं मरत जंतु अवलोकी। जासु नाम बल करउँ बिसोकी ॥
सोइ प्रभु मोर चराचर स्वामी। रघुबर सब उर अंतरजामी ॥
बिबसहुँ जासु नाम नर कहहीं। जनम अनेक रचित अघ दहहीं ॥
सादर सुमिरन जे नर करहीं। भव बारिधि गोपद इव तरहीं ॥
राम सो परमातमा भवानी। तहूँ भ्रम अति अबिहित तव बानी ॥
अस संसय आनत उर माहीं। ग्यान बिराग सकल गुन जाहीं ॥
सुनि सिव के भ्रम भंजन बचना। मिटि गै सब कुतरक कै रचना ॥
भइ रघुपति पद प्रीति प्रतीती। दारुन असंभावना बीती ॥

दो. पुनि पुनि प्रभु पद कमल गहि जोरि पंकरुह पानि।

बोली गिरिजा बचन बर मनहुँ प्रेम रस सानि ॥ ११९ ॥

ससि कर सम सुनि गिरा तुम्हारी। मिटा मोह सरदातप भारी ॥
तुम्ह कृपाल सबु संसउ हरेऊ। राम स्वरुप जानि मोहि परेऊ ॥
नाथ कृपाँ अब गयउ बिषादा। सुखी भयउँ प्रभु चरन प्रसादा ॥
अब मोहि आपनि किंकरि जानी। जदपि सहज जड नारि अयानी ॥
प्रथम जो मैं पूछा सोइ कहहू। जौं मो पर प्रसन्न प्रभु अहहू ॥
राम ब्रह्म चिनमय अबिनासी। सर्व रहित सब उर पुर बासी ॥
नाथ धरेउ नरतनु केहि हेतू। मोहि समुझाइ कहहु बृषकेतू ॥
उमा बचन सुनि परम विनीता। रामकथा पर प्रीति पुनीता ॥

दो. हिँयँ हरषे कामारि तव संकर सहज सुजान
बहु बिधि उमहि प्रसंसि पुनि बोले कृपानिधान ॥ १२०(क) ॥

नवान्हपारायन, पहला विश्राम
मासपारायण, चौथा विश्राम

सो. सुनु सुभ कथा भवानि रामचरितमानस बिमल।
कहा भुसुंढि बखानि सुना बिहग नायक गरुड ॥ १२०(ख) ॥

सो संबाद उदार जेहि बिधि भा आगें कहब।
सुनहु राम अवतार चरित परम सुंदर अनघ ॥ १२०(ग) ॥

हरि गुन नाम अपार कथा रूप अगनित अमित।
मैं निज मति अनुसार कहउँ उमा सादर सुनहु ॥ १२०(घ) ॥

सुनु गिरिजा हरिचरित सुहाए। बिपुल बिसद निगमागम गाए ॥
हरि अवतार हेतु जेहि होई। इदमित्थं कहि जाइ न सोई ॥
राम अतर्क्य बुद्धि मन बानी। मत हमार अस सुनहि सयानी ॥
तदपि संत मुनि वेद पुराना। जस कछु कहहिं स्वमति अनुमाना ॥
तस मैं सुमुखि सुनावउँ तोही। समुझि परइ जस कारन मोही ॥
जब जब होइ धरम कै हानी। बाढहिं असुर अधम अभिमानी ॥
करहिं अनीति जाइ नहिं बरनी। सीदहिं बिप्र धेनु सुर धरनी ॥
तब तब प्रभु धरि बिबिध सरीरा। हरहि कृपानिधि सज्जन पीरा ॥

दो. असुर मारि थापहिं सुरन्ह राखहिं निज श्रुति सेतु।
जग बिस्तारहिं बिसद जस राम जन्म कर हेतु ॥ १२१ ॥

सोइ जस गाइ भगत भव तरहीं। कृपासिंधु जन हित तनु धरहीं ॥
राम जनम के हेतु अनेका। परम बिचित्र एक तें एका ॥
जनम एक दुइ कहउँ बखानी। सावधान सुनु सुमति भवानी ॥
द्वारपाल हरि के प्रिय दोऊ। जय अरु बिजय जान सब कोऊ ॥
बिप्र श्राप तें दूनउ भाई। तामस असुर देह तिन्ह पाई ॥
कनककसिपु अरु हाटक लोचन। जगत बिदित सुरपति मद मोचन ॥
बिजई समर वीर बिख्याता। धरि बराह बपु एक निपाता ॥
होइ नरहरि दूसर पुनि मारा। जन प्रहलाद सुजस बिस्तारा ॥

दो. भए निसाचर जाइ तेइ महावीर बलवान।

कुंभकरन रावण सुभट सुर बिजई जग जान ॥ १२२ ॥

मुकुत न भए हते भगवाना। तीनि जनम द्विज बचन प्रवाना ॥

एक बार तिन्ह के हित लागी। धरेउ सरीर भगत अनुरागी ॥

कस्यप अदिति तहाँ पितु माता। दसरथ कौसल्या बिख्याता ॥

एक कल्प एहि बिधि अवतारा। चरित्र पवित्र किए संसारा ॥

एक कल्प सुर देखि दुखारे। समर जलंधर सन सब हारे ॥

संभु कीन्ह संग्राम अपारा। दनुज महाबल मरइ न मारा ॥

परम सती असुराधिप नारी। तेहि बल ताहि न जितहि पुरारी ॥

दो. छल करि टारेउ तासु ब्रत प्रभु सुर कारज कीन्ह ॥

जब तेहि जानेउ मरम तब श्राप कोप करि दीन्ह ॥ १२३ ॥

तासु श्राप हरि दीन्ह प्रमाना। कौतुकनिधि कृपाल भगवाना ॥

तहाँ जलंधर रावन भयऊ। रन हति राम परम पद दयऊ ॥

एक जनम कर कारन एहा। जेहि लागि राम धरी नरदेहा ॥

प्रति अवतार कथा प्रभु केरी। सुनु मुनि बरनी कबिन्ह घनेरी ॥

नारद श्राप दीन्ह एक बारा। कल्प एक तेहि लागि अवतारा ॥

गिरिजा चकित भई सुनि बानी। नारद बिष्नुभगत पुनि ग्यानि ॥

कारन कवन श्राप मुनि दीन्हा। का अपराध रमापति कीन्हा ॥

यह प्रसंग मोहि कहहु पुरारी। मुनि मन मोह आचरज भारी ॥

दो. बोले बिहसि महेस तब ग्यानी मूढ न कोइ।

जेहि जस रघुपति करहि जब सो तस तेहि छन होइ ॥ १२४(क) ॥

सो. कहउँ राम गुन गाथ भरद्वाज सादर सुनहु।

भव भंजन रघुनाथ भजु तुलसी तजि मान मद ॥ १२४(ख) ॥

हिमगिरि गुहा एक अति पावनि। बह समीप सुरसरी सुहावनि ॥

आश्रम परम पुनीत सुहावा। देखि देवरिषि मन अति भावा ॥

निरखि सैल सरि बिपिन बिभागा। भयउ रमापति पद अनुरागा ॥

सुमिरत हरिहि श्राप गति बाधी। सहज बिमल मन लागि समाधी ॥

मुनि गति देखि सुरेस डेराना। कामहि बोलि कीन्ह समाना ॥

सहित सहाय जाहु मम हेतू। चकेउ हरषि हियँ जलचरकेतू ॥

सुनासीर मन महुँ असि त्रासा। चहत देवरिषि मम पुर बासा ॥
जे कामी लोलुप जग माहीं। कुटिल काक इव सबहि डेराहीं ॥

दो. सुख हाड लै भाग सठ स्वान निरखि मृगराज।

छीनि लेइ जनि जान जड तिमि सुरपतिहि न लाज ॥ १२५ ॥

तेहि आश्रमहिं मदन जब गयऊ। निज मायाँ बसंत निरमयऊ ॥
कुसुमित विविध बिटप बहुरंगा। कूजहिं कोकिल गुंजहि भुंगा ॥
चली सुहावनि त्रिविध बयारी। काम कृसानु बढावनिहारी ॥
रंभादिक सुरनारि नवीना। सकल असमसर कला प्रवीना ॥
करहिं गान बहु तान तरंगा। बहुविधि क्रीडहि पानि पतंगा ॥
देखि सहाय मदन हरषाना। कीन्हेसि पुनि प्रपंच विधि नाना ॥
काम कला कछु मुनिहि न ब्यापी। निज भयँ डरेउ मनोभव पापी ॥
सीम कि चौँपि सकइ कोउ तासु। बड रखवार रमापति जासू ॥

दो. सहित सहाय सभीत अति मानि हारि मन मैन।

गहेसि जाइ मुनि चरन तब कहि सुठि आरत बैन ॥ १२६ ॥

भयउ न नारद मन कछु रोषा। कहि प्रिय बचन काम परितोषा ॥
नाइ चरन सिरु आयसु पाई। गयउ मदन तब सहित सहाई ॥
मुनि सुसीलता आपनि करनी। सुरपति सभाँ जाइ सब बरनी ॥
सुनि सब कें मन अचरजु आवा। मुनिहि प्रसंसि हरिहि सिरु नावा ॥
तब नारद गवने सिव पाहीं। जिता काम अहमिति मन माहीं ॥
मार चरित संकरहिं सुनाए। अतिप्रिय जानि महेस सिरखाए ॥
बार बार बिनवउँ मुनि तोहीं। जिमि यह कथा सुनायहु मोहीं ॥
तिमि जनि हरिहि सुनावहु कबहूँ। चलेहूँ प्रसंग दुराण्डु तबहूँ ॥

दो. संभु दीन्ह उपदेस हित नहिं नारदहि सोहान।

भारद्वाज कौतुक सुनहु हरि इच्छा बलवान ॥ १२७ ॥

राम कीन्ह चाहहिं सोइ होई। करै अन्यथा अस नहिं कोई ॥
संभु बचन मुनि मन नहिं भाए। तब विरंचि के लोक सिधाए ॥
एक बार करतल बर बीना। गावत हरि गुन गान प्रवीना ॥
छीरसिंधु गवने मुनिनाथा। जहँ बस श्रीनिवास श्रुतिमाथा ॥
हरषि मिले उठि रमानिकेता। बैठे आसन रिषिहि समेता ॥

बोले बिहसि चराचर राया। बहुते दिनन कीन्हि मुनि दाया ॥
काम चरित नारद सब भाषे। जद्यपि प्रथम बरजि सिवँ राखे ॥
अति प्रचंड रघुपति कै माया। जेहि न मोह अस को जग जाया ॥

दो. रूख बदन करि बचन मृदु बोले श्रीभगवान ।

तुम्हरे सुमिरन तें मिटहिँ मोह मार मद मान ॥ १२८ ॥

सुनु मुनि मोह होइ मन ताकें। ग्यान विराग हृदय नहिँ जाके ॥
ब्रह्मचरज ब्रत रत मतिधीरा। तुम्हहिँ कि करइ मनोभव पीरा ॥
नारद कहेउ सहित अभिमाना। कृपा तुम्हारि सकल भगवाना ॥
करुनानिधि मन दीख विचारी। उर अंकुरेउ गरब तरु भारी ॥
बेगि सो मै डारिहउँ उखारी। पन हमार सेवक हितकारी ॥
मुनि कर हित मम कौतुक होई। अवसि उपाय करबि मै सोई ॥
तब नारद हरि पद सिर नाई। चले हृदयँ अहमिति अधिकारि ॥
श्रीपति निज माया तब प्रेरी। सुनहु कठिन करनी तेहि केरी ॥

दो. बिरचेउ मग महुँ नगर तेहिँ सत जोजन बिस्तार।

श्रीनिवासपुर तें अधिक रचना बिबिध प्रकार ॥ १२९ ॥

बसहिँ नगर सुंदर नर नारी। जनु बहु मनसिज रति तनुधारी ॥
तेहिँ पुर बसइ सीलनिधि राजा। अगनित हय गय सेन समाजा ॥
सत सुरेस सम बिभव बिलासा। रूप तेज बल नीति निवासा ॥
बिस्वमोहनी तासु कुमारी। श्री बिमोह जिसु रूपु निहारी ॥
सोइ हरिमाया सब गुन खानी। सोभा तासु कि जाइ बखानी ॥
करइ स्वयंबर सो नृपबाला। आए तहँ अगनित महिपाला ॥
मुनि कौतुकी नगर तेहिँ गयऊ। पुरबासिन्ह सब पूछत भयऊ ॥
सुनि सब चरित भूपगृहँ आए। करि पूजा नृप मुनि बैठाए ॥

दो. आनि देखाई नारदहिँ भूपति राजकुमारि।

कहहु नाथ गुन दोष सब एहिँ के हृदयँ विचारि ॥ १३० ॥

देखि रूप मुनि बिरति बिसारी। बड़ी बार लागि रहे निहारी ॥
लच्छन तासु बिलोकि भुलाने। हृदयँ हरष नहिँ प्रगट बखाने ॥
जो एहिँ बरइ अमर सोइ होई। समरभूमि तेहिँ जीत न कोई ॥
सेवहिँ सकल चराचर ताही। बरइ सीलनिधि कन्या जाही ॥

लच्छन सब विचारि उर राखे। कल्लुक बनाइ भूप सन भाषे ॥
सुता सुलच्छन कहि नृप पाहीं। नारद चले सोच मन माहीं ॥
करौं जाइ सोइ जतन विचारी। जेहि प्रकार मोहि बरै कुमारी ॥
जप तप कल्लु न होइ तेहि काला। हे विधि मिलइ कवन विधि बाला ॥

दो. एहि अवसर चाहिअ परम सोभा रूप बिसाल।

जो बिलोकि रीझै कुअँरि तब मेलै जयमाल ॥ १३१ ॥

हरि सन मागौं सुंदरताई। होइहि जात गहरु अति भाई ॥
मोरें हित हरि सम नहिं कोऊ। एहि अवसर सहाय सोइ होऊ ॥
बहुविधि बिनय कीन्हि तेहि काला। प्रगटेउ प्रभु कौतुकी कृपाला ॥
प्रभु बिलोकि मुनि नयन जुडाने। होइहि काजु हिउँ हरषाने ॥
अति आरति कहि कथा सुनाई। करहु कृपा करि होहु सहाई ॥
आपन रूप देहु प्रभु मोही। आन भाँति नहिं पावौं ओही ॥
जेहि विधि नाथ होइ हित मोरा। करहु सो बेगि दास मैं तोरा ॥
निज माया बल देखि बिसाला। हिचँ हँसि बोले दीनदयाला ॥

दो. जेहि विधि होइहि परम हित नारद सुनहु तुम्हार।

सोइ हम करब न आन कल्लु बचन न मृषा हमार ॥ १३२ ॥

कुपथ माग रुज व्याकुल रोगी। बैद न देइ सुनहु मुनि जोगी ॥
एहि विधि हित तुम्हार मैं ठयऊ। कहि अस अंतरहित प्रभु भयऊ ॥
माया बिबस भए मुनि मूढा। समुझी नहिं हरि गिरा निगूढा ॥
गवने तुरत तहाँ रिषिराई। जहाँ स्वयंबर भूमि बनाई ॥
निज निज आसन बैठे राजा। बहु बनाव करि सहित समाजा ॥
मुनि मन हरष रूप अति मोरें। मोहि तजि आनहि बारिहि न भोरें ॥
मुनि हित कारन कृपानिधाना। दीन्ह कुरूप न जाइ बखाना ॥
सो चरित्र लखि काहुँ न पावा। नारद जानि सबहिं सिर नावा ॥

दो. रहे तहाँ दुइ रुद्र गन ते जानहिं सब भेउ।

विप्रबेष देखत फिरहिं परम कौतुकी तेउ ॥ १३३ ॥

जेहि समाज बैठे मुनि जाई। हृदयँ रूप अहमिति अधिकाई ॥
तहँ बैठ महेस गन दोऊ। विप्रबेष गति लखइ न कोऊ ॥
करहिं कूटि नारदहि सुनाई। नीकि दीन्हि हरि सुंदरताई ॥

रीझहि राजकुअँरि छवि देखी। इन्हहि बरिहि हरि जानि बिसेषी ॥
मुनिहि मोह मन हाथ पराएँ। हँसहि संभु गन अति सचु पाएँ ॥
जदपि सुनहिं मुनि अटपटि बानी। समुझि न परइ बुद्धि भ्रम सानी ॥
काहुँ न लखा सो चरित बिसेषा। सो सरूप नृपकन्याँ देखा ॥
मर्कट बदन भयंकर देही। देखत हृदयँ क्रोध भा तेही ॥

दो. सखीँ संग लै कुअँरि तब चलि जनु राजमराल।

देखत फिरइ महीप सब कर सरोज जयमाल ॥ १३४ ॥

जेहि दिसि बैठे नारद फूली। सो दिसि देहि न बिलोकी भूली ॥
पुनि पुनि मुनि उकसहिँ अकुलाहीं। देखि दसा हर गन मुसकाहीं ॥
धरि नृपतनु तहँ गयउ कृपाला। कुअँरि हरषि मेलेउ जयमाला ॥
दुलहिनि लै गे लच्छिनिवासा। नृपसमाज सब भयउ निरासा ॥
मुनि अति विकल मोहँ मति नाठी। मनि गिरि गई छूटि जनु गाँठी ॥
तब हर गन बोले मुसुकाई। निज मुख मुकुर बिलोकहु जाई ॥
अस कहि दोउ भागे भयँ भारी। बदन दीख मुनि बारि निहारी ॥
बेषु बिलोकि क्रोध अति बाढा। तिन्हहि सराप दीन्ह अति गाढा ॥

दो. होहु निसाचर जाइ तुम्ह कपटी पापी दोउ।

हँसेहु हमहि सो लेहु फल बहुरि हँसेहु मुनि कोउ ॥ १३५ ॥

पुनि जल दीख रूप निज पावा। तदपि हृदयँ संतोष न आवा ॥
फरकत अधर कोप मन माहीं। सपदी चले कमलापति पाहीं ॥
देहउँ श्राप कि मरिहउँ जाई। जगत मोर उपहास कराई ॥
बीचहि पंथ मिले दनुजारी। संग रमा सोइ राजकुमारी ॥
बोले मधुर बचन सुरसाई। मुनि कहँ चले विकल की नाई ॥
सुनत बचन उपजा अति क्रोधा। माया बस न रहा मन बोधा ॥
पर संपदा सकहु नहि देखी। तुम्हरें इरिषा कपट बिसेषी ॥
मथत सिंधु रुद्रहि बौरायहु। सुरन्ह प्रेरी विष पान करायहु ॥

दो. असुर सुरा विष संकरहि आपु रमा मनि चारु।

स्वारथ साधक कुटिल तुम्ह सदा कपट व्यवहारु ॥ १३६ ॥

परम स्वतंत्र न सिर पर कोई। भावइ मनहि करहु तुम्ह सोई ॥
भलेहि मंद मंदेहि भल करहु। बिसमय हरष न हियँ कछु धरहु ॥

डहकि डहकि परिचेहु सब काहू। अति असंक मन सदा उछाहू ॥
 करम सुभासुभ तुम्हहि न बाधा। अब लागि तुम्हहि न काहूँ साधा ॥
 भले भवन अब बायन दीन्हा। पावहुगे फल आपन कीन्हा ॥
 बंचेहु मोहि जवनि धरि देहा। सोइ तनु धरहु श्राप मम एहा ॥
 कपि आकृति तुम्ह कीन्हि हमारी। करिहहिं कीस सहाय तुम्हारी ॥
 मम अपकार कीन्ही तुम्ह भारी। नारी बिरहँ तुम्ह होब दुखारी ॥

दो. श्राप सीस धरी हरषि हियँ प्रभु बहु बिनती कीन्हि।

निज माया कै प्रबलता करषि कृपानिधि लीन्हि ॥ १३७ ॥

जब हरि माया दूरि निवारी। नहिं तहँ रमा न राजकुमारी ॥
 तब मुनि अति सभित हरि चरना। गहे पाहि प्रनतारति हरना ॥
 मृषा होउ मम श्राप कृपाला। मम इच्छा कह दीनदयाला ॥
 मैँ दुर्बचन कहे बहुतेरे। कह मुनि पाप मिटिहिं किमि मेरे ॥
 जपहु जाइ संकर सत नामा। होइहि हृदयँ तुरंत विश्रामा ॥
 कोउ नहिं सिव समान प्रिय मोरें। असि परतीति तजहु जनि भोरें ॥
 जेहि पर कृपा न करहिं पुरारी। सो न पाव मुनि भगति हमारी ॥
 अस उर धरि महि विचरहु जाई। अब न तुम्हहि माया निअराई ॥

दो. बहुविधि मुनिहि प्रबोधि प्रभु तब भए अंतरधान ॥

सत्यलोक नारद चले करत राम गुन गान ॥ १३८ ॥

हर गन मुनिहि जात पथ देखी। विगतमोह मन हरष बिसेषी ॥
 अति सभित नारद पहिं आए। गहि पद आरत बचन सुनाए ॥
 हर गन हम न विप्र मुनिराया। बड अपराध कीन्ह फल पाया ॥
 श्राप अनुग्रह करहु कृपाला। बोले नारद दीनदयाला ॥
 निसिचर जाइ होहु तुम्ह दोऊ। वैभव विपुल तेज बल होऊ ॥
 भुजबल बिस्व जितव तुम्ह जहिआ। धरिहहिं बिष्नु मनुज तनु तहिआ।
 समर मरन हरि हाथ तुम्हारा। होइहहु मुकुत न पुनि संसारा ॥
 चले जुगल मुनि पद सिर नाई। भए निसाचर कालहि पाई ॥

दो. एक कल्प एहि हेतु प्रभु लीन्ह मनुज अवतार।

सुर रंजन सज्जन सुखद हरि भंजन भुवि भार ॥ १३९ ॥

एहि विधि जनम करम हरि केरे। सुंदर सुखद बिचित्र घनेरे ॥

कल्प कल्प प्रति प्रभु अवतरहीं। चारु चरित नानाविधि करहीं ॥
तब तब कथा मुनीसन्ह गाई। परम पुनीत प्रबंध बनाई ॥
बिबिध प्रसंग अनूप बखाने। करहिं न सुनि आचरजु सयाने ॥
हरि अनंत हरिकथा अनंता। कहहिं सुनहिं बहुविधि सब संता ॥
रामचंद्र के चरित सुहाए। कल्प कोटि लागि जाहिं न गाए ॥
यह प्रसंग मैं कहा भवानी। हरिमायाँ मोहहिं मुनि ग्यानी ॥
प्रभु कौतुकी प्रनत हितकारी ॥ सेवत सुलभ सकल दुख हारी ॥

सो. सुर नर मुनि कोउ नाहिं जेहि न मोह माया प्रबल ॥

अस बिचारि मन माहिं भजिअ महामाया पतिहि ॥ १४० ॥

अपर हेतु सुनु सैलकुमारी। कहउँ बिचित्र कथा बिस्तारी ॥
जेहि कारन अज अगुन अरूपा। ब्रह्म भयउ कोसलपुर भूपा ॥
जो प्रभु विपिन फिरत तुम्ह देखा। बंधु समेत धरें मुनिबेषा ॥
जासु चरित अवलोकि भवानी। सती सरीर रहिहु बौरानी ॥
अजहुँ न छाया मिटति तुम्हारी। तासु चरित सुनु भ्रम रुज हारी ॥
लीला कीन्हि जो तेहिं अवतारा। सो सब कहिहउँ मति अनुसार ॥
भरद्वाज सुनि संकर बानी। सकुचि सप्रेम उमा मुसकानी ॥
लगे बहुरि बरने वृषकेतू। सो अवतार भयउ जेहि हेतू ॥

दो. सो मैं तुम्ह सन कहउँ सबु सुनु मुनीस मन लाई ॥

राम कथा कलि मल हरनि मंगल करनि सुहाइ ॥ १४१ ॥

स्वायंभू मनु अरु सतरूपा। जिन्ह तें भै नरसृष्टि अनूपा ॥
दंपति धरम आचरन नीका। अजहुँ गाव श्रुति जिन्ह कै लीका ॥
नृप उत्तानपाद सुत तासू। ध्रुव हरि भगत भयउ सुत जासू ॥
लघु सुत नाम प्रियव्रत ताही। वेद पुरान प्रसंसहि जाही ॥
देवहृति पुनि तासु कुमारी। जो मुनि कर्दम कै प्रिय नारी ॥
आदिदेव प्रभु दीनदयाला। जठर धरेउ जेहि कपिल कृपाला ॥
सांख्य सास्त्र जिन्ह प्रगट बखाना। तत्व बिचार निपुन भगवाना ॥
तेहिं मनु राज कीन्ह बहु काला। प्रभु आयसु सब विधि प्रतिपाला ॥

सो. होइ न विषय बिराग भवन बसत भा चौथपन।

हृदयँ बहुत दुख लाग जनम गयउ हरिभगति विनु ॥ १४२ ॥

बरबस राज सुतहि तब दीन्हा। नारि समेत गवन बन कीन्हा ॥
 तीरथ बर नैमिष बिख्याता। अति पुनीत साधक सिधि दाता ॥
 बसहिं तहाँ मुनि सिद्ध समाजा। तहाँ हियँ हरषि चलेउ मनु राजा ॥
 पंथ जात सोहहिं मतिधीरा। ग्यान भगति जनु धरें सरीरा ॥
 पहुँचे जाइ धेनुमति तीरा। हरषि नहाने निरमल नीरा ॥
 आए मिलन सिद्ध मुनि ग्यानी। धरम धुरंधर नृपरिषि जानी ॥
 जहाँ जँह तीरथ रहे सुहाए। मुनिन्ह सकल सादर करवाए ॥
 कृस सरीर मुनिपट परिधाना। सत समाज नित सुनिहिं पुराना ॥

दो. द्वादस अच्छर मंत्र पुनि जपहिं सहित अनुराग।

बासुदेव पद पंकरुह दंपति मन अति लाग ॥ १४३ ॥

करहिं अहार साक फल कंदा। सुमिरहिं ब्रह्म सच्चिदानंदा ॥
 पुनि हरि हेतु करन तप लागे। बारि अधार मूल फल त्यागे ॥
 उर अभिलाष निरंतर होई। देखा नयन परम प्रभु सोई ॥
 अगुन अखंड अनंत अनादी। जेहि चिंतहिं परमारथवादी ॥
 नेति नेति जेहि बेद निरूपा। निजानंद निरूपाधि अनूपा ॥
 संभु विरंचि बिष्नु भगवाना। उपजहिं जासु अंस तें नाना ॥
 ऐसेउ प्रभु सेवक बस अहई। भगत हेतु लीलातनु गहई ॥
 जौ यह बचन सत्य श्रुति भाषा। तौ हमार पूजहिं अभिलाषा ॥

दो. एहि विधि बीतें बरष षट सहस बारि आहार।

संबत सप्त सहस्र पुनि रहे समीर अधार ॥ १४४ ॥

बरष सहस दस त्यागेउ सोऊ। ठाढे रहे एक पद दोऊ ॥
 विधि हरि तप देखि अपारा। मनु समीप आए बहु बारा ॥
 मागहु बर बहु भौंति लोभाए। परम धीर नहिं चलहिं चलाए ॥
 अस्थिमात्र होइ रहे सरीरा। तदपि मनाग मनहिं नहिं पीरा ॥
 प्रभु सर्वग्य दास निज जानी। गति अनन्य तापस नृप रानी ॥
 मागु मागु बरु भै नभ बानी। परम गभीर कृपामृत सानी ॥
 मृतक जिआवनि गिरा सुहाई। श्रवन रंध्र होइ उर जब आई ॥
 हृष्टपुष्ट तन भए सुहाए। मानहुँ अबहिं भवन ते आए ॥

दो. श्रवन सुधा सम बचन सुनि पुलक प्रफुल्लित गात।

बोले मनु करि दंडवत प्रेम न हृदयँ समात ॥ १४५ ॥

सुनु सेवक सुरतरु सुरधेनु। विधि हरि हर बंदित पद रेनु ॥
सेवत सुलभ सकल सुख दायक। प्रनतपाल सचराचर नायक ॥
जौं अनाथ हित हम पर नेहू। तौ प्रसन्न होइ यह बर देहू ॥
जो सरूप बस सिव मन माहीं। जेहि कारन मुनि जतन कराहीं ॥
जो भुसुंड़ि मन मानस हंसा। सगुन अगुन जेहि निगम प्रसंसा ॥
देखहि हम सो रूप भरि लोचन। कृपा करहु प्रनतारति मोचन ॥
दंपति बचन परम प्रिय लागे। मुदुल बिनीत प्रेम रस पागे ॥
भगत बछल प्रभु कृपानिधाना। बिस्वबास प्रगटे भगवाना ॥

दो. नील सरोरुह नील मनि नील नीरधर स्याम।

लाजहिं तन सोभा निरखि कोटि कोटि सत काम ॥ १४६ ॥

सरद मयंक बदन छबि सींवा। चारु कपोल चिबुक दर ग्रीवा ॥
अधर अरुन रद सुंदर नासा। बिधु कर निकर बिनिंदक हासा ॥
नव अबुंज अबक छबि नीकी। चितवनि ललित भावैती जी की ॥
भुकुटि मनोज चाप छबि हारी। तिलक ललाट पटल दुतिकारी ॥
कुंडल मकर मुकुट सिर भ्राजा। कुटिल केस जनु मधुप समाजा ॥
उर श्रीबत्स रुचिर बनमाला। पदिक हार भूषन मनिजाला ॥
केहरि कंधर चारु जनेउ। बाहु विभूषन सुंदर तेऊ ॥
करि कर सरि सुभग भुजदंडा। कटि निषंग कर सर कोदंडा ॥

दो. तडित बिनिंदक पीत पट उदर रेख बर तीनि ॥

नाभि मनोहर लेति जनु जमुन भवँ छबि छीनि ॥ १४७ ॥

पद राजीव बरनि नहि जाहीं। मुनि मन मधुप बसहिं जेन्ह माहीं ॥
बाम भाग सोभति अनुकूला। आदिसक्ति छविनिधि जगमूला ॥
जासु अंस उपजहिं गुनखानी। अगनित लच्छि उमा ब्रह्मानी ॥
भुकुटि बिलास जासु जग होई। राम बाम दिसि सीता सोई ॥
छबिसमुद्र हरि रूप बिलोकी। एकटक रहे नयन पट रोकी ॥
चितवहिं सादर रूप अनूपा। तृप्ति न मानहिं मनु सतरूपा ॥
हरष बिबस तन दसा भुलानी। परे दंड इव गहि पद पानी ॥
सिर परसे प्रभु निज कर कंजा। तुरत उठाए करुनापुंजा ॥

दो. बोले कृपानिधान पुनि अति प्रसन्न मोहि जानि।

मागहु बर जोइ भाव मन महादानि अनुमानि ॥ १४८ ॥

सुनि प्रभु बचन जोरि जुग पानी। धरि धीरजु बोली मृदु बानी ॥
नाथ देखि पद कमल तुम्हारे। अब पूरे सब काम हमारे ॥
एक लालसा बडि उर माही। सुगम अगम कहि जात सो नाही ॥
तुम्हहि देत अति सुगम गोसाईं। अगम लाग मोहि निज कृपनाई ॥
जथा दरिद्र विबुधतरु पाई। बहु संपति मागत सकुचाई ॥
तासु प्रभा जान नहीं सोई। तथा हृदयँ मम संसय होई ॥
सो तुम्ह जानहु अंतरजामी। पुरवहु मोर मनोरथ स्वामी ॥
सकुच बिहाइ मागु नृप मोहि। मोरें नहीं अदेय कछु तोही ॥

दो. दानि सिरोमनि कृपानिधि नाथ कहउँ सतिभाउ ॥

चाहउँ तुम्हहि समान सुत प्रभु सन कवन दुराउ ॥ १४९ ॥

देखि प्रीति सुनि बचन अमोले। एवमस्तु करुनानिधि बोले ॥
आपु सरिस खोजौं कहँ जाई। नृप तव तनय होब मैं आई ॥
सतरूपहि बिलोकि कर जोरें। देवि मागु बरु जो रुचि तोरे ॥
जो बरु नाथ चतुर नृप मागा। सोइ कृपाल मोहि अति प्रिय लागा ॥
प्रभु परंतु सुठि होति ढिठाई। जदपि भगत हित तुम्हहि सोहाई ॥
तुम्ह ब्रह्मादि जनक जग स्वामी। ब्रह्म सकल उर अंतरजामी ॥
अस समुझत मन संसय होई। कहा जो प्रभु प्रवान पुनि सोई ॥
जे निज भगत नाथ तव अहहीं। जो सुख पावहिं जो गति लहहीं ॥

दो. सोइ सुख सोइ गति सोइ भगति सोइ निज चरन सनेहु ॥

सोइ बिबेक सोइ रहनि प्रभु हमहि कृपा करि देहु ॥ १५० ॥

सुनु मृदु गूढ रुचिर बर रचना। कृपासिंधु बोले मृदु बचना ॥
जो कछु रुचि तुम्हेर मन माहीं। मैं सो दीन्ह सब संसय नाही ॥
मातु बिबेक अलोकिक तोरें। कबहुँ न मिटिहि अनुग्रह मोरें ।
बंदि चरन मनु कहेउ बहोरी। अवर एक बिनति प्रभु मोरी ॥
सुत विषइक तव पद रति होऊ। मोहि बड मूढ कहै किन कोऊ ॥
मनि बिनु फनि जिमि जल बिनु मीना। मम जीवन तिमि तुम्हहि अधीना ॥
अस बरु मागि चरन गहि रहेऊ। एवमस्तु करुनानिधि कहेऊ ॥

अब तुम्ह मम अनुसासन मानी। बसहु जाइ सुरपति रजधानी ॥

सो. तहँ करि भोग बिसाल तात गऊँ कछु काल पुनि।

होइहहु अवध भुआल तब मैं होब तुम्हार सुत ॥ १५१ ॥

इच्छामय नरबेष सँवारें। होइहउँ प्रगट निकेत तुम्हारे ॥

अंसन्ह सहित देह धरि ताता। करिहउँ चरित भगत सुखदाता ॥

जे सुनि सादर नर बडभागी। भव तरिहहिँ ममता मद त्यागी ॥

आदिसक्ति जेहिँ जग उपजाया। सोउ अवतरिहिँ मोरि यह माया ॥

पुरउब मैं अभिलाष तुम्हारा। सत्य सत्य पन सत्य हमारा ॥

पुनि पुनि अस कहि कृपानिधाना। अंतरधान भए भगवाना ॥

दंपति उर धरि भगत कृपाला। तेहिँ आश्रम निवसे कछु काला ॥

समय पाइ तनु तजि अनयासा। जाइ कीन्ह अमरावति बासा ॥

दो. यह इतिहास पुनीत अति उमहि कही बृषकेतु।

भरद्वाज सुनु अपर पुनि राम जनम कर हेतु ॥ १५२ ॥

मासपारायण, पाँचवाँ विश्राम

सुनु मुनि कथा पुनीत पुरानी। जो गिरिजा प्रति संभु बखानी ॥

बिस्व बिदित एक कैकय देसू। सत्यकेतु तहँ बसइ नरेसू ॥

धरम धुरंधर नीति निधाना। तेज प्रताप सील बलवाना ॥

तेहिँ कें भए जुगल सुत बीरा। सब गुन धाम महा रनधीरा ॥

राज धनी जो जेठ सुत आही। नाम प्रतापभानु अस ताही ॥

अपर सुतहिँ अरिमर्दन नामा। भुजबल अतुल अचल संग्रामा ॥

भाइहिँ भाइहिँ परम समीती। सकल दोष छल बरजित प्रीती ॥

जेठे सुतहिँ राज नृप दीन्हा। हरि हित आपु गवन बन कीन्हा ॥

दो. जब प्रतापरवि भयउ नृप फिरी दोहाई देस।

प्रजा पाल अति बेदबिधि कतहुँ नहीं अघ लेस ॥ १५३ ॥

नृप हितकारक सचिव सयाना। नाम धरमरुचि सुक्र समाना ॥

सचिव सयान बंधु बलबीरा। आपु प्रतापपुंज रनधीरा ॥

सेन संग चतुरंग अपारा। अमित सुभट सब समर जुझारा ॥

सेन बिलोकि राउ हरषाना। अरु बाजे गहगहे निसाना ॥

बिजय हेतु कटकई बनाई। सुदिन साधि नृप चलेउ बजाई ॥
जँह तहँ परीं अनेक लराई। जीते सकल भूप बरिआई ॥
सप्त दीप भुजबल बस कीन्हे। लै लै दंड छाडि नृप दीन्हें ॥
सकल अवनि मंडल तेहि काला। एक प्रतापभानु महिपाला ॥

दो. स्वबस बिस्व करि बाहुबल निज पुर कीन्ह प्रवेसु।
अरथ धरम कामादि सुख सेवइ समयँ नरेसु ॥ १५४ ॥

भूप प्रतापभानु बल पाई। कामधेनु भै भूमि सुहाई ॥
सब दुख बरजित प्रजा सुखारी। धरमसील सुंदर नर नारी ॥
सचिव धरमरुचि हरि पद प्रीती। नृप हित हेतु सिखव नित नीती ॥
गुर सुर संत पितर महिदेवा। करइ सदा नृप सब कै सेवा ॥
भूप धरम जे बेद बखाने। सकल करइ सादर सुख माने ॥
दिन प्रति देह विविध विधि दाना। सुनहु सास्त्र वर वेद पुराना ॥
नाना बापीं कूप तडागा। सुमन बाटिका सुंदर बागा ॥
विप्रभवन सुरभवन सुहाए। सब तीरथन्ह विचित्र बनाए ॥

दो. जँह लागि कहे पुरान श्रुति एक एक सब जाग।
बार सहस्र सहस्र नृप किए सहित अनुराग ॥ १५५ ॥

हृदयँ न कछु फल अनुसंधाना। भूप विवेकी परम सुजाना ॥
करइ जे धरम करम मन बानी। वासुदेव अर्पित नृप ग्यानी ॥
चट्टि बर बाजि बार एक राजा। मृगया कर सब साजि समाजा ॥
विंध्याचल गभीर बन गयऊ। मृग पुनीत बहु मारत भयऊ ॥
फिरत विपिन नृप दीख बराहू। जनु बन दुरेउ ससिहि ग्रसि राहू ॥
बड विधु नहि समात मुख माहीं। मनहुँ क्रोधबस उगिलत नाहीं ॥
कोल कराल दसन छवि गाई। तनु बिसाल पीवर अधिकाई ॥
घुरुघुरात हय आरौ पाएँ। चकित बिलोकत कान उठाएँ ॥

दो. नील महीधर सिखर सम देखि बिसाल बराहु।
चपरि चलेउ हय सुटुकि नृप हाँकि न होइ निबाहु ॥ १५६ ॥

आवत देखि अधिक रव बाजी। चलेउ बराह मरुत गति भाजी ॥
तुरत कीन्ह नृप सर संधाना। महि मिलि गयउ बिलोकत बाना ॥
तकि तकि तीर महीस चलावा। करि छल सुअर सरीर बचावा ॥

प्रगटत दुरत जाइ मृग भागा। रिस बस भूप चलेउ संग लागा ॥
गयउ दूरि घन गहन बराहू। जहँ नाहिन गज बाजि निबाहू ॥
अति अकेल बन बिपुल कलेसू। तदपि न मृग मग तजइ नरेसू ॥
कोल बिलोकि भूप बड धीरा। भागि पैठ गिरिगुहाँ गभीरा ॥
अगम देखि नृप अति पछिताई। फिरेउ महाबन परेउ भुलाई ॥

दो. खेद खिन्न छुद्धित तृषित राजा बाजि समेत।

खोजत व्याकुल सरित सर जल बिनु भयउ अचेत ॥ १५७ ॥

फिरत बिपिन आश्रम एक देखा। तहँ बस नृपति कपट मुनिबेषा ॥
जासु देस नृप लीन्ह छडाई। समर सेन तजि गयउ पराई ॥
समय प्रतापभानु कर जानी। आपन अति असमय अनुमानी ॥
गयउ न गृह मन बहुत गलानी। मिला न राजहि नृप अभिमानी ॥
रिस उर मारि रंक जिमि राजा। बिपिन बसइ तापस केँ साजा ॥
तासु समीप गवन नृप कीन्हा। यह प्रतापरवि तेहि तब चीन्हा ॥
राउ तृषित नहि सो पहिचाना। देखि सुवेष महामुनि जाना ॥
उतरि तुरग तेँ कीन्ह प्रनामा। परम चतुर न कहेउ निज नामा ॥
दो० भूपति तृषित बिलोकि तेहि सरवरु दीन्ह देखाइ।

मज्जन पान समेत हय कीन्ह नृपति हरषाइ ॥ १५८ ॥

गै श्रम सकल सुखी नृप भयऊ। निज आश्रम तापस लै गयऊ ॥
आसन दीन्ह अस्त रवि जानी। पुनि तापस बोलेउ मृदु बानी ॥
को तुम्ह कस बन फिरहु अकेलें। सुंदर जुवा जीव परहेलें ॥
चक्रवर्ति के लच्छन तोरें। देखत दया लागि अति मोरें ॥
नाम प्रतापभानु अवनीसा। तासु सचिव मैँ सुनहु मुनीसा ॥
फिरत अहेरें परेउँ भुलाई। बडे भाग देखउँ पद आई ॥
हम कहँ दुर्लभ दरस तुम्हारा। जानत हौँ कछु भल होनिहारा ॥
कह मुनि तात भयउ अँधियारा। जोजन सत्तरि नगरु तुम्हारा ॥

दो. निसा घोर गम्भीर बन पंथ न सुनहु सुजान।

बसहु आजु अस जानि तुम्ह जाएहु होत बिहान ॥ १५९(क) ॥

तुलसी जसि भवतव्यता तैसी मिलइ सहाइ।

आपुन आवइ ताहि पहिँ ताहि तहाँ लै जाइ ॥ १५९(ख) ॥

भलेहि नाथ आयसु धरि सीसा। बाँधि तुरग तरु बैठ महीसा ॥
 नृप बहु भाति प्रसंसेउ ताही। चरन बंदि निज भाग्य सराही ॥
 पुनि बोले मृदु गिरा सुहाई। जानि पिता प्रभु करउँ दिठाई ॥
 मोहि मुनिस सुत सेवक जानी। नाथ नाम निज कहहु बखानी ॥
 तेहि न जान नृप नृपहि सो जाना। भूप सुहृद सो कपट सयाना ॥
 बैरी पुनि छत्री पुनि राजा। छल बल कीन्ह चहइ निज काजा ॥
 समुझि राजसुख दुखित अराती। अवाँ अनल इव सुलगइ छाती ॥
 सरल बचन नृप के सुनि काना। बयर सँभारि हृदयँ हरषाना ॥

दो. कपट बोरि बानी मृदुल बोलेउ जुगुति समेत।

नाम हमार भिखारि अब निर्धन रहित निकेति ॥ १६० ॥

कह नृप जे बिग्यान निधाना। तुम्ह सारिखे गलित अभिमाना ॥
 सदा रहहि अपनपौ दुराएँ। सब विधि कुसल कुबेष बनाएँ ॥
 तेहि तें कहहि संत श्रुति टेरें। परम अकिंचन प्रिय हरि केरें ॥
 तुम्ह सम अधन भिखारि अगेहा। होत बिरंचि सिवहि संदेहा ॥
 जोसि सोसि तव चरन नमामी। मो पर कृपा करिअ अब स्वामी ॥
 सहज प्रीति भूपति कै देखी। आपु बिषय बिस्वास बिसेषी ॥
 सब प्रकार राजहि अपनाई। बोलेउ अधिक सनेह जनाई ॥
 सुनु सतिभाउ कहउँ महिपाला। इहाँ बसत बीते बहु काला ॥

दो. अब लगि मोहि न मिलेउ कोउ मैं न जनावउँ काहु।

लोकमान्यता अनल सम कर तप कानन दाहु ॥ १६१(क) ॥

सो. तुलसी देखि सुबेषु भूलहि मूढ न चतुर नर।

सुंदर केकिहि पेषु बचन सुधा सम असन अहि ॥ १६१(ख)

तातें गुपुत रहउँ जग माहीं। हरि तजि किमपि प्रयोजन नाहीं ॥
 प्रभु जानत सब बिनहि जनाएँ। कहहु कवनि सिधि लोक रिझाएँ ॥
 तुम्ह सुचि सुमति परम प्रिय मोरें। प्रीति प्रतीति मोहि पर तोरें ॥
 अब जौं तात दुरावउँ तोही। दारुन दोष घटइ अति मोही ॥
 जिमि जिमि तापसु कथइ उदासा। तिमि तिमि नृपहि उपज बिस्वासा ॥
 देखा स्वबस कर्म मन बानी। तब बोला तापस बगध्यानी ॥
 नाम हमार एकतनु भाई। सुनि नृप बोले पुनि सिरु नाई ॥

कहहु नाम कर अरथ बखानी। मोहि सेवक अति आपन जानी ॥

दो. आदिसृष्टि उपजी जबहिं तब उतपति भै मोरि।

नाम एकतनु हेतु तेहि देह न धरी बहोरि ॥ १६२ ॥

जनि आचरुज करहु मन माहीं। सुत तप तें दुर्लभ कछु नाहीं ॥

तपबल तें जग सृजइ विधाता। तपबल बिष्नु भए परित्राता ॥

तपबल संभु करहिं संघारा। तप तें अगम न कछु संसारा ॥

भयउ नृपहि सुनि अति अनुरागा। कथा पुरातन कहै सो लागा ॥

करम धरम इतिहास अनेका। करइ निरूपन विरति बिबेका ॥

उदभव पालन प्रलय कहानी। कहेसि अमित आचरज बखानी ॥

सुनि महिप तापस बस भयऊ। आपन नाम कहत तब लयऊ ॥

कह तापस नृप जानउँ तोही। कीन्हेहु कपट लाग भल मोही ॥

सो. सुनु महीस असि नीति जहँ तहँ नाम न कहहिं नृप।

मोहि तोहि पर अति प्रीति सोइ चतुरता बिचारि तव ॥ १६३ ॥

नाम तुम्हार प्रताप दिनेसा। सत्यकेतु तव पिता नरेसा ॥

गुर प्रसाद सब जानिअ राजा। कहिअ न आपन जानि अकाजा ॥

देखि तात तव सहज सुधाई। प्रीति प्रतीति नीति निपुनाई ॥

उपजि परि ममता मन मोरें। कहउँ कथा निज पूछे तोरें ॥

अब प्रसन्न मैं संसय नाहीं। मागु जो भूप भाव मन माहीं ॥

सुनि सुबचन भूपति हरषाना। गहि पद बिनय कीन्हि बिधि नाना ॥

कृपासिंधु मुनि दरसन तोरें। चारि पदारथ करतल मोरें ॥

प्रभुहि तथापि प्रसन्न बिलोकी। मागि अगम बर होउँ असोकी ॥

दो. जरा मरन दुख रहित तनु समर जितै जनि कोउ।

एकछत्र रिपुहीन महि राज कल्प सत होउ ॥ १६४ ॥

कह तापस नृप ऐसेइ होऊ। कारन एक कठिन सुनु सोऊ ॥

कालउ तुअ पद नाइहि सीसा। एक बिप्रकुल छाडि महीसा ॥

तपबल बिप्र सदा बरिआरा। तिन्ह के कोप न कोउ रखवारा ॥

जौं बिप्रन्ह सब करहु नरेसा। तौ तुअ बस बिधि बिष्नु महेसा ॥

चल न ब्रह्मकुल सन बरिआई। सत्य कहउँ दोउ भुजा उठाई ॥

बिप्र श्राप विनु सुनु महिपाला। तोर नास नहि कवनेहुँ काला ॥

हरषेउ राउ बचन सुनि तासू। नाथ न होइ मोर अब नासू ॥
 तव प्रसाद प्रभु कृपानिधाना। मो कहूँ सर्व काल कल्याना ॥
 दो. एवमस्तु कहि कपटमुनि बोला कुटिल बहोरि।
 मिलब हमार भुलाब निज कहहु त हमहि न खोरि ॥ १६५ ॥
 तातें मै तोहि बरजउँ राजा। कहें कथा तव परम अकाजा ॥
 छठें श्रवन यह परत कहानी। नास तुम्हार सत्य मम बानी ॥
 यह प्रगटें अथवा द्विजश्रापा। नास तोर सुनु भानुप्रतापा ॥
 आन उपायँ निधन तव नाही। जौ हरि हर कोपहिं मन माहीं ॥
 सत्य नाथ पद गहि नृप भाषा। द्विज गुर कोप कहहु को राखा ॥
 राखइ गुर जौ कोप बिधाता। गुर बिरोध नहिं कोउ जग त्राता ॥
 जौ न चलब हम कहे तुम्हारें। होउ नास नहिं सोच हमारें ॥
 एकहिं डर डरपत मन मोरा। प्रभु महिदेव श्राप अति घोरा ॥
 दो. होहि बिप्र बस कवन बिधि कहहु कृपा करि सोउ।
 तुम्ह तजि दीनदयाल निज हितू न देखउँ कोउ ॥ १६६ ॥
 सुनु नृप बिबिध जतन जग माहीं। कष्टसाध्य पुनि होहिं कि नाही ॥
 अहइ एक अति सुगम उपाई। तहाँ परंतु एक कठिनाई ॥
 मम आधीन जुगुति नृप सोई। मोर जाब तव नगर न होई ॥
 आजु लगें अरु जब तैं भयऊँ। काहू के गृह ग्राम न गयऊँ ॥
 जौ न जाउँ तव होइ अकाजू। बना आइ असमंजस आजू ॥
 सुनि महीस बोलेउ मृदु बानी। नाथ निगम असि नीति बखानी ॥
 बडे सनेह लघुन्ह पर करहीं। गिरि निज सिरनि सदा तृन धरहीं ॥
 जलधि अगाध मौलि बह फेनू। संतत धरनि धरत सिर रेनू ॥
 दो. अस कहि गहे नरेस पद स्वामी होहु कृपाल।
 मोहि लागि दुख सहिअ प्रभु सज्जन दीनदयाल ॥ १६७ ॥
 जानि नृपहि आपन आधीना। बोला तापस कपट प्रबीना ॥
 सत्य कहउँ भूपति सुनु तोही। जग नाहिन दुर्लभ कछु मोही ॥
 अवसि काज मैं करिहउँ तोरा। मन तन बचन भगत तैं मोरा ॥
 जोग जुगुति तप मंत्र प्रभाऊ। फलइ तवहिं जब करिअ दुराऊ ॥
 जौ नरेस मैं करौं रसोई। तुम्ह परुसहु मोहि जान न कोई ॥

अन्न सो जोइ जोइ भोजन करई। सोइ सोइ तव आयसु अनुसरई ॥
पुनि तिन्ह के गृह जेवई जोऊ। तव बस होइ भूप सुनु सोऊ ॥
जाइ उपाय रचहु नृप एहू। संवत भरि संकल्प करेहू ॥

दो. नित नूतन द्विज सहस सत बरेहु सहित परिवार।

मैं तुम्हरे संकल्प लगि दिनहिं इव जेवनार ॥ १६८ ॥

एहि विधि भूप कष्ट अति थोरें। होइहहिं सकल बिप्र बस तोरें ॥
करिहहिं बिप्र होम मख सेवा। तेहिं प्रसंग सहजेहिं बस देवा ॥
और एक तोहि कहऊँ लखाऊ। मैं एहि बेष न आउब काऊ ॥
तुम्हरे उपरोहित कहूँ राया। हरि आनब मैं करि निज माया ॥
तपबल तेहि करि आपु समाना। रखिहउँ इहाँ बरष परवाना ॥
मैं धरि तासु बेषु सुनु राजा। सब विधि तोर सँवारब काजा ॥
गै निसि बहुत सयन अब कीजे। मोहि तोहि भूप भेंट दिन तीजे ॥
मैं तपबल तोहि तुरग समेता। पहुँचेहउँ सोवतहि निकेता ॥

दो. मैं आउब सोइ बेषु धरि पहिचानेहु तब मोहि।

जब एकांत बोलाइ सब कथा सुनावौँ तोहि ॥ १६९ ॥

सयन कीन्ह नृप आयसु मानी। आसन जाइ बैठ छलग्यानी ॥
श्रमित भूप निद्रा अति आई। सो किमि सोव सोच अधिकार्ई ॥
कालकेतु निसिचर तहँ आवा। जेहिं सूकर होइ नृपहि भुलावा ॥
परम मित्र तापस नृप केरा। जानइ सो अति कपट घनेरा ॥
तेहि के सत सुत अरु दस भाई। खल अति अजय देव दुखदाई ॥
प्रथमहि भूप समर सब मारे। बिप्र संत सुर देखि दुखारे ॥
तेहिं खल पाछिल बयरु सँभरा। तापस नृप मिलि मंत्र बिचारा ॥
जेहि रिपु छय सोइ रचेन्हि उपाऊ। भावी बस न जान कछु राऊ ॥

दो. रिपु तेजसी अकेल अपि लघु करि गनिअ न ताहु।

अजहुँ देत दुख रबि ससिहि सिर अवसेषित राहु ॥ १७० ॥

तापस नृप निज सखहि निहारी। हरषि मिलेउ उठि भयउ सुखारी ॥
मित्रहि कहि सब कथा सुनाई। जातुधान बोला सुख पाई ॥
अब साधेउँ रिपु सुनहु नरेसा। जौँ तुम्ह कीन्ह मोर उपदेसा ॥
परिहरि सोच रहहु तुम्ह सोई। विनु औषध बिआधि विधि खोई ॥

कुल समेत रिपु मूल बहाई। चौथे दिवस मिलव मैं आई ॥
तापस नृपहि बहुत परितोषी। चला महाकपटी अतिरोषी ॥
भानुप्रतापहि बाजि समेता। पहुँचाएसि छन माझ निकेता ॥
नृपहि नारि पहिँ सयन कराई। हयगृहँ बाँधेसि बाजि बनाई ॥

दो. राजा के उपरोहितहि हरि लै गयउ बहोरि।

लै राखेसि गिरि खोह महुँ मायाँ करि मति भोरि ॥ १७१ ॥

आपु विरचि उपरोहित रूपा। परेउ जाइ तेहि सेज अनूपा ॥
जागेउ नृप अनभएँ बिहाना। देखि भवन अति अचरजु माना ॥
मुनि महिमा मन महुँ अनुमानी। उठेउ गवँहि जेहि जान न रानी ॥
कानन गयउ बाजि चढि तेहीं। पुर नर नारि न जानेउ केहीं ॥
गएँ जाम जुग भूपति आवा। घर घर उत्सव बाज बधावा ॥
उपरोहितहि देख जब राजा। चकित बिलोकि सुमिरि सोइ काजा ॥
जुग सम नृपहि गए दिन तीनी। कपटी मुनि पद रह मति लीनी ॥
समय जानि उपरोहित आवा। नृपहि मते सब कहि समुझावा ॥

दो. नृप हरषेउ पहिचानि गुरु भ्रम बस रहा न चेत।

बरे तुरत सत सहस बर बिप्र कुटुंब समेत ॥ १७२ ॥

उपरोहित जेवनार बनाई। छरस चारि विधि जसि श्रुति गाई ॥
मायामय तेहिं कीन्ह रसोई। बिंजन बहु गनि सकइ न कोई ॥
बिबिध मृगन्ह कर आमिष राँधा। तेहि महुँ बिप्र माँसु खल साँधा ॥
भोजन कहुँ सब बिप्र बोलाए। पद परवारि सादर बैठाए ॥
परुसन जबहिँ लाग महिपाला। भै अकासबानी तेहि काला ॥
बिप्रवृंद उठि उठि गृह जाहू। है बडि हानि अन्न जनि खाहू ॥
भयउ रसोई भूसुर माँसू। सब द्विज उठे मानि बिस्वासू ॥
भूप विकल मति मोहँ भुलानी। भावी बस आव मुख बानी ॥

दो. बोले बिप्र सकोप तब नहिँ कछु कीन्ह बिचार।

जाइ निसाचर होहु नृप मूढ सहित परिवार ॥ १७३ ॥

छत्रबंधु तैं बिप्र बोलाई। घालै लिए सहित समुदाई ॥
ईस्वर राखा धरम हमारा। जैहसि तैं समेत परिवारा ॥
संबत मध्य नास तव होऊ। जलदाता न रहिहि कुल कोऊ ॥

नृप सुनि श्राप विकल अति त्रासा। भै बहोरि बर गिरा अकासा ॥
विप्रहु श्राप बिचारि न दीन्हा। नहिं अपराध भूप कछु कीन्हा ॥
चकित बिप्र सब सुनि नभबानी। भूप गयउ जहँ भोजन खानी ॥
तहँ न असन नहिं बिप्र सुआरा। फिरेउ राउ मन सोच अपारा ॥
सब प्रसंग महिसुरन्ह सुनाई। त्रसित परेउ अवनीं अकुलाई ॥

दो. भूपति भावी मिटइ नहिं जदपि न दूषन तोर।

किएँ अन्यथा होइ नहिं बिप्रश्राप अति घोर ॥ १७४ ॥

अस कहि सब महिदेव सिधाए। समाचार पुरलोगन्ह पाए ॥
सोचहिं दूषन दैवहि देहीं। बिचरत हंस काग किय जेहीं ॥
उपरोहितहि भवन पहुँचाई। असुर तापसहि खबरि जनाई ॥
तेहिं खल जहँ तहँ पत्र पठाए। सजि सजि सेन भूप सब धाए ॥
घेरेन्हि नगर निसान बजाई। बिबिध भाँति नित होई लराई ॥
जूझे सकल सुभट करि करनी। बंधु समेत परेउ नृप धरनी ॥
सत्यकेतु कुल कोउ नहिं बाँचा। बिप्रश्राप किमि होइ असाँचा ॥
रिपु जिति सब नृप नगर बसाई। निज पुर गवने जय जसु पाई ॥

दो. भरद्वाज सुनु जाहि जब होइ बिधाता बाम।

धूरि मेरुसम जनक जम ताहि ब्यालसम दाम ॥ १७५ ॥

काल पाइ मुनि सुनु सोइ राजा। भयउ निसाचर सहित समाजा ॥
दस सिर ताहि बीस भुजदंडा। रावन नाम बीर बरिबंडा ॥
भूप अनुज अरिमर्दन नामा। भयउ सो कुंभकरन बलधामा ॥
सचिव जो रहा धरमरुचि जासू। भयउ बिमात्र बंधु लघु तासू ॥
नाम बिभीषन जेहि जग जाना। बिष्नुभगत बिग्यान निधाना ॥
रहे जे सुत सेवक नृप केरे। भए निसाचर घोर घनेरे ॥
कामरूप खल जिनस अनेका। कुटिल भयंकर बिगत बिबेका ॥
कृपा रहित हिंसक सब पापी। बरनि न जाहिं बिस्व परितापी ॥

दो. उपजे जदपि पुलस्त्यकुल पावन अमल अनूप।

तदपि महीसुर श्राप बस भए सकल अघरूप ॥ १७६ ॥

कीन्ह बिबिध तप तीनिहुँ भाई। परम उग्र नहिं बरनि सो जाई ॥
गयउ निकट तप देखि बिधाता। मागहु बर प्रसन्न मै ताता ॥

करि बिनती पद गहि दससीसा। बोलेउ बचन सुनहु जगदीसा ॥
 हम काहू के मरहिं न मारें। बानर मनुज जाति दुइ बारें ॥
 एवमस्तु तुम्ह बड तप कीन्हा। मैं ब्रह्माँ मिलि तेहि बर दीन्हा ॥
 पुनि प्रभु कुंभकरन पहिँ गयऊ। तेहि बिलोकि मन बिसमय भयऊ ॥
 जौं एहिं खल नित करब अहारू। होइहि सब उजारि संसारू ॥
 सारद प्रेरि तासु मति फेरी। मागेसि नीद मास षट केरी ॥

दो. गए विभीषन पास पुनि कहेउ पुत्र बर मागु।

तेहिँ मागेउ भगवंत पद कमल अमल अनुरागु ॥ १७७ ॥

तिन्हि देइ बर ब्रह्म सिधाए। हरषित ते अपने गृह आए ॥
 मय तनुजा मंदोदरि नामा। परम सुंदरी नारि ललामा ॥
 सोइ मयँ दीन्हि रावनहि आनी। होइहि जातुधानपति जानी ॥
 हरषित भयउ नारि भलि पाई। पुनि दोउ बंधु विआहेसि जाई ॥
 गिरि त्रिकूट एक सिंधु मझारी। विधि निर्मित दुर्गम अति भारी ॥
 सोइ मय दानवँ बहुरि सँवारा। कनक रचित मनिभवन अपारा ॥
 भोगावति जसि अहिकुल बासा। अमरावति जसि सक्रनिवासा ॥
 तिन्ह तें अधिक रम्य अति बंका। जग बिख्यात नाम तेहि लंका ॥

दो. खाई सिंधु गभीर अति चारिहुँ दिसि फिरि आव।

कनक कोट मनि खचित दृढ बरनि न जाइ बनाव ॥ १७८(क) ॥

हरिप्रेरित जेहि कल्प जोइ जातुधानपति होइ।

सूर प्रतापी अतुलबल दल समेत बस सोइ ॥ १७८(ख) ॥

रहे तहाँ निसिचर भट भारे। ते सब सुरन्ह समर संघारे ॥
 अब तहाँ रहहिं सक्र के प्रेरे। रच्छक कोटि जच्छपति केरे ॥
 दसमुख कतहुँ खबरि असि पाई। सेन साजि गढ घेरेसि जाई ॥
 देखि बिकट भट बडि कटकाई। जच्छ जीव लै गए पराई ॥
 फिरि सब नगर दसानन देखा। गयउ सोच सुख भयउ बिसेषा ॥
 सुंदर सहज अगम अनुमानी। कीन्हि तहाँ रावन रजधानी ॥
 जेहि जस जोग बाँटि गृह दीन्हे। सुखी सकल रजनीचर कीन्हे ॥
 एक बार कुबेर पर धावा। पुष्पक जान जीति लै आवा ॥

दो. कौतुकहीं कैलास पुनि लीन्हेसि जाइ उठाइ।

मनहुँ तौलि निज बाहुबल चला बहुत सुख पाइ ॥ १७९ ॥

सुख संपति सुत सेन सहाई। जय प्रताप बल बुद्धि बडाई ॥
नित नूतन सब बाढत जाई। जिमि प्रतिलाभ लोभ अधिकाई ॥
अतिबल कुंभकरन अस भ्राता। जेहि कहूँ नहिँ प्रतिभट जग जाता ॥
करइ पान सोवइ षट मासा। जागत होइ तिहुँ पुर त्रासा ॥
जौं दिन प्रति अहार कर सोई। विस्व बेगि सब चौपट होई ॥
समर धीर नहिँ जाइ बखाना। तेहि सम अमित बीर बलवाना ॥
बारिदनाद जेठ सुत तासू। भट महुँ प्रथम लीक जग जासू ॥
जेहि न होइ रन सनमुख कोई। सुरपुर नितहिँ परावन होई ॥

दो. कुमुख अकंपन कुलिसरद धूमकेतु अतिकाय।

एक एक जग जीति सक ऐसे सुभट निकाय ॥ १८० ॥

कामरूप जानहिँ सब माया। सपनेहुँ जिन्ह कें धरम न दाया ॥
दसमुख बैठ सभौं एक बारा। देखि अमित आपन परिवारा ॥
सुत समूह जन परिजन नाती। गे को पार निसाचर जाती ॥
सेन बिलोकि सहज अभिमानी। बोला बचन क्रोध मद सानी ॥

सुनहु सकल रजनीचर जूथा। हमरे बैरी बिबुध बरूथा ॥
ते सनमुख नहिँ करही लराई। देखि सबल रिपु जाहिँ पराई ॥
तेन्ह कर मरन एक बिधि होई। कहउँ बुझाइ सुनहु अब सोई ॥
द्विजभोजन मख होम सराधा ॥ सब कै जाइ करहु तुम्ह बाधा ॥

दो. छुधा छीन बलहीन सुर सहजेहिँ मिलिहहिँ आइ।

तब मारिहउँ कि छाडिहउँ भली भाँति अपनाइ ॥ १८१ ॥

मेघनाद कहूँ पुनि हँकरावा। दीन्ही सिख बलु बयरु बढ़ावा ॥
जे सुर समर धीर बलवाना। जिन्ह कें लरिबे कर अभिमाना ॥
तिन्हहि जीति रन आनेसु बाँधी। उठि सुत पितु अनुसासन काँधी ॥
एहि बिधि सबही अग्या दीन्ही। आपनु चलेउ गदा कर लीन्ही ॥
चलत दसानन डोलति अवनी। गर्जत गर्भ खवहिँ सुर रवनी ॥
रावन आवत सुनेउ सकोहा। देवन्ह तके मेरु गिरि खोहा ॥
दिगपालन्ह के लोक सुहाए। सूने सकल दसानन पाए ॥

पुनि पुनि सिंघनाद करि भारी। देइ देवतन्ह गारि पचारी ॥
 रन मद मत्त फिरइ जग धावा। प्रतिभट खौजत कतहुँ न पावा ॥
 रवि ससि पवन बरुन धनधारी। अगिनि काल जम सब अधिकारी ॥
 किंनर सिद्ध मनुज सुर नागा। हठि सबही के पंथहिं लागा ॥
 ब्रह्मसृष्टि जहँ लागि तनुधारी। दसमुख बसबर्ती नर नारी ॥
 आयसु करहिं सकल भयभीता। नवहिं आइ नित चरन बिनीता ॥

दो. भुजबल बिस्व बस्य करि राखेसि कोउ न सुतंत्र।
 मंडलीक मनि रावन राज करइ निज मंत्र ॥ १८२(ख) ॥

देव जच्छ गंधर्व नर किंनर नाग कुमारि।
 जीति बरीं निज बाहुबल बहु सुंदर वर नारि ॥ १८२ख ॥

इंद्रजीत सन जो कछु कहेऊ। सो सब जनु पहिलेहिं करि रहेऊ ॥
 प्रथमहिं जिन्ह कहुँ आयसु दीन्हा। तिन्ह कर चरित सुनहु जो कीन्हा ॥
 देखत भीमरूप सब पापी। निसिचर निकर देव परितापी ॥
 करहि उपद्रव असुर निकाया। नाना रूप धरहिं करि माया ॥
 जेहि बिधि होइ धर्म निर्मूला। सो सब करहिं बेद प्रतिकूला ॥
 जेहिं जेहिं देस धेनु द्विज पावहिं। नगर गाउँ पुर आगि लगावहिं ॥
 सुभ आचरन कतहुँ नहिं होई। देव विप्र गुरू मान न कोई ॥
 नहिं हरिभगति जग्य तप ग्याना। सपनेहुँ सुनिअ न बेद पुराना ॥

छं. जप जोग बिरागा तप मख भागा श्रवन सुनइ दससीसा।
 आपुनु उठि धावइ रहै न पावइ धरि सब घालइ खीसा ॥
 अस भ्रष्ट अचारा भा संसारा धर्म सुनिअ नहि काना।
 तेहि बहुबिधि त्रासइ देस निकासइ जो कह बेद पुराना ॥

सो. बरनि न जाइ अनीति घोर निसाचर जो करहिं।
 हिंसा पर अति प्रीति तिन्ह के पापहि कवनि मिति ॥ १८३ ॥

मासपारायण, छठा विश्राम

बाढे खल बहु चोर जुआरा। जे लंपट परधन परदारा ॥
 मानहिं मातु पिता नहिं देवा। साधुन्ह सन करवावहिं सेवा ॥
 जिन्ह के यह आचरन भवानी। ते जानेहु निसिचर सब प्रानी ॥
 अतिसय देखि धर्म कै ग्लानी। परम सभीत धरा अकुलानी ॥

गिरि सरि सिंधु भार नहिं मोही। जस मोहि गरुअ एक परद्रोही ॥
सकल धर्म देखइ बिपरीता। कहि न सकइ रावन भय भीता ॥
धेनु रूप धरि हृदयँ बिचारी। गई तहाँ जहाँ सुर मुनि झारी ॥
निज संताप सुनाएसि रोई। काहू तें कछु काज न होई ॥

छं. सुर मुनि गंधर्वा मिलि करि सर्वा गो बिरंचि के लोका।
सँग गोतनुधारी भूमि बिचारी परम विकल भय सोका ॥
ब्रह्माँ सब जाना मन अनुमाना मोर कछू न बसाई।
जा करि तैं दासी सो अबिनासी हमरेउ तोर सहाई ॥

सो. धरनि धरहि मन धीर कह बिरंचि हरिपद सुमिरु।
जानत जन की पीर प्रभु भंजिहि दारुन बिपति ॥ १८४ ॥

बैठे सुर सब करहि बिचारा। कहँ पाइअ प्रभु करिअ पुकारा ॥
पुर बैकुंठ जान कह कोई। कोउ कह पयनिधि बस प्रभु सोई ॥
जाके हृदयँ भगति जसि प्रीति। प्रभु तहँ प्रगट सदा तेहिं रीती ॥
तेहि समाज गिरिजा मै रहेऊँ। अवसर पाइ बचन एक कहेऊँ ॥
हरि व्यापक सर्वत्र समाना। प्रेम तें प्रगट होहिं मै जाना ॥
देस काल दिसि बिदिसिहु माहीं। कहहु सो कहाँ जहाँ प्रभु नाहीं ॥
अग जगमय सब रहित बिरागी। प्रेम तें प्रभु प्रगटइ जिमि आगी ॥
मोर बचन सब के मन माना। साधु साधु करि ब्रह्म बखाना ॥

दो. सुनि बिरंचि मन हरष तन पुलकि नयन बह नीर।
अस्तुति करत जोरि कर सावधान मतिधीर ॥ १८५ ॥

छं. जय जय सुरनायक जन सुखदायक प्रनतपाल भगवंता।
गो द्विज हितकारी जय असुरारी सिंधुसुता प्रिय कंता ॥
पालन सुर धरनी अद्भुत करनी मरम न जानइ कोई।
जो सहज कृपाला दीनदयाला करउ अनुग्रह सोई ॥
जय जय अबिनासी सब घट बासी व्यापक परमानंदा।
अबिगत गोतीतं चरित पुनीतं मायारहित मुकुंदा ॥
जेहि लागि बिरागी अति अनुरागी बिगतमोह मुनिबृदा।
निसि वासर ध्यावहिं गुन गन गावहिं जयति सच्चिदानंदा ॥
जेहिं सृष्टि उपाई त्रिविध बनाई संग सहाय न दूजा ॥

सो करउ अघारी चिंत हमारी जानिअ भगति न पूजा ॥
जो भव भय भंजन मुनि मन रंजन गंजन बिपति बरूथा ।
मन बच क्रम बानी छाडि सयानी सरन सकल सुर जूथा ॥
सारद श्रुति सेषा रिषय असेषा जा कहूँ कोउ नहि जाना ।
जेहि दीन पिआरे बेद पुकारे द्रवउ सो श्रीभगवाना ॥
भव बारिधि मंदर सब बिधि सुंदर गुनमंदिर सुखपुंजा ।
मुनि सिद्ध सकल सुर परम भयातुर नमत नाथ पद कंजा ॥

दो. जानि सभय सुरभूमि सुनि बचन समेत सनेह ।

गगनगिरा गंभीर भइ हरनि सोक संदेह ॥ १८६ ॥

जनि डरपहु मुनि सिद्ध सुरेसा । तुम्हहि लागि धरिहउँ नर बेसा ॥
अंसन्ह सहित मनुज अवतारा । लेहउँ दिनकर बंस उदारा ॥
कस्यप अदिति महातप कीन्हा । तिन्ह कहूँ मै पूरब बर दीन्हा ॥
ते दसरथ कौसल्या रूपा । कोसलपुरीं प्रगट नरभूपा ॥
तिन्ह के गृह अवतरिहउँ जाई । रघुकुल तिलक सो चारिउ भाई ॥
नारद बचन सत्य सब करिहउँ । परम सक्ति समेत अवतरिहउँ ॥
हरिहउँ सकल भूमि गरुआई । निर्भय होहु देव समुदाई ॥
गगन ब्रह्मबानी सुनी काना । तुरत फिरे सुर हृदय जुडाना ॥
तब ब्रह्मा धरनिहि समुझावा । अभय भई भरोस जियँ आवा ॥

दो. निज लोकहि बिरंचि गे देवन्ह इहइ सिखाइ ।

बानर तनु धरि धरि महि हरि पद सेवहु जाइ ॥ १८७ ॥

गए देव सब निज निज धामा । भूमि सहित मन कहूँ विश्रामा ।
जो कछु आयसु ब्रह्माँ दीन्हा । हरषे देव बिलंब न कीन्हा ॥
बनचर देह धरि छिति माहीं । अतुलित बल प्रताप तिन्ह पाहीं ॥
गिरि तरु नख आयुध सब बीरा । हरि मारग चितवहिं मतिधीरा ॥
गिरि कानन जहँ तहँ भरि पूरी । रहे निज निज अनीक रचि रूरी ॥
यह सब रुचिर चरित मै भाषा । अब सो सुनहु जो बीचहिं राखा ॥
अवधपुरीं रघुकुलमनि राऊ । बेद बिदित तेहि दसरथ नाऊँ ॥
धरम धुरंधर गुननिधि ग्यानी । हृदयँ भगति मति सारंगपानी ॥

दो. कौसल्यादि नारि प्रिय सब आचरन पुनीत ।

पति अनुकूल प्रेम दृढ हरि पद कमल विनीत ॥ १८८ ॥

एक बार भूपति मन माहीं। भै गलानि मोरें सुत नाहीं ॥
गुर गृह गयउ तुरत महिपाला। चरन लागि करि बिनय बिसाला ॥
निज दुख सुख सब गुरहि सुनायउ। कहि बसिष्ठ बहुविधि समुझायउ ॥
धरहु धीर होइहहिं सुत चारी। त्रिभुवन बिदित भगत भय हारी ॥
सुंगी रिषहि बसिष्ठ बोलावा। पुत्रकाम सुभ जग्य करावा ॥
भगति सहित मुनि आहुति दीन्हें। प्रगटे अग्नि चरू कर लीन्हें ॥
जो बसिष्ठ कछु हृदयँ बिचारा। सकल काजु भा सिद्ध तुम्हारा ॥
यह हवि बाँटि देहु नृप जाई। जथा जोग जेहि भाग बनाई ॥

दो. तब अटस्य भए पावक सकल सभहि समुझाइ ॥

परमानंद मगन नृप हरष न हृदयँ समाइ ॥ १८९ ॥

तबहिं रायँ प्रिय नारि बोलाई। कौसल्यादि तहाँ चलि आई ॥
अर्ध भाग कौसल्याहि दीन्हा। उभय भाग आधे कर कीन्हा ॥
कैकेई कहँ नृप सो दयऊ। रह्यो सो उभय भाग पुनि भयऊ ॥
कौसल्या कैकेई हाथ धरि। दीन्ह सुमित्रहि मन प्रसन्न करि ॥
एहि विधि गर्भसहित सब नारी। भई हृदयँ हरषित सुख भारी ॥
जा दिन तें हरि गर्भहिं आए। सकल लोक सुख संपति छाए ॥
मंदिर महुँ सब राजहिं रानी। सोभा सील तेज की खानी ॥
सुख जुत कछुक काल चलि गयऊ। जेहिं प्रभु प्रगट सो अवसर भयऊ ॥

दो. जोग लगन ग्रह बार तिथि सकल भए अनुकूल।

चर अरु अचर हर्षजुत राम जनम सुखमूल ॥ १९० ॥

नौमी तिथि मधु मास पुनीता। सुकल पच्छ अभिजित हरिप्रीता ॥
मध्यदिवस अति सीत न घामा। पावन काल लोक विश्रामा ॥
सीतल मंद सुरभि बह बाऊ। हरषित सुर संतन मन चाऊ ॥
बन कुसुमित गिरिगन मनिआरा। खवहिं सकल सरिताऽमृतधारा ॥
सो अवसर विरंचि जब जाना। चले सकल सुर साजि विमाना ॥
गगन विमल सकुल सुर जूथा। गावहिं गुन गंधर्व बरूथा ॥
बरषहिं सुमन सुअंजलि साजी। गहगहि गगन दुंदुभी बाजी ॥
अस्तुति करहिं नाग मुनि देवा। बहुविधि लावहिं निज निज सेवा ॥

- दो. सुर समूह बिनती करि पहुँचे निज निज धाम।
जगनिवास प्रभु प्रगटे अखिल लोक विश्राम ॥ १९१ ॥
- छं. भए प्रगट कृपाला दीनदयाला कौसल्या हितकारी।
हरषित महतारी मुनि मन हारी अद्भुत रूप बिचारी ॥
लोचन अभिरामा तनु घनस्यामा निज आयुध भुज चारी।
भूषन बनमाला नयन बिसाला सोभासिंधु खरारी ॥
कह दुइ कर जोरी अस्तुति तोरी केहि बिधि करौं अनंता।
माया गुन ग्यानातीत अमाना बेद पुरान भनंता ॥
करुना सुख सागर सब गुन आगर जेहि गावहिं श्रुति संता।
सो मम हित लागी जन अनुरागी भयउ प्रगट श्रीकंता ॥
ब्रह्मांड निकाया निर्मित माया रोम रोम प्रति बेद कहै।
मम उर सो बासी यह उपहासी सुनत धीर पति थिर न रहै ॥
उपजा जब ग्याना प्रभु मुसकाना चरित बहुत बिधि कीन्ह चहै।
कहि कथा सुहाई मातु बुझाई जेहि प्रकार सुत प्रेम लहै ॥
माता पुनि बोली सो मति डौली तजहु तात यह रूपा।
कीजै सिसुलीला अति प्रियसीला यह सुख परम अनूपा ॥
सुनि बचन सुजाना रोदन ठाना होइ बालक सुरभूपा।
यह चरित जे गावहिं हरिपद पावहिं ते न परहिं भवकूपा ॥
- दो. विप्र धेनु सुर संत हित लीन्ह मनुज अवतार।
निज इच्छा निर्मित तनु माया गुन गो पार ॥ १९२ ॥
- सुनि सिसु रुदन परम प्रिय बानी। संभ्रम चलि आई सब रानी ॥
हरषित जहँ तहँ धाई दासी। आनँद मगन सकल पुरबासी ॥
दसरथ पुत्रजन्म सुनि काना। मानहुँ ब्रह्मानंद समाना ॥
परम प्रेम मन पुलक सरीरा। चाहत उठत करत मति धीरा ॥
जाकर नाम सुनत सुभ होई। मोरें गृह आवा प्रभु सोई ॥
परमानंद पूरि मन राजा। कहा बोलाइ बजावहु बाजा ॥
गुर बसिष्ठ कहँ गयउ हँकारा। आए द्विजन सहित नृपद्वारा ॥
अनुपम बालक देखेन्हि जाई। रूप रासि गुन कहि न सिराई ॥
- दो. नंदीमुख सराध करि जातकरम सब कीन्ह।
हाटक धेनु बसन मनि नृप विप्रन्ह कहँ दीन्ह ॥ १९३ ॥

ध्वज पताक तोरन पुर छावा। कहि न जाइ जेहि भाँति बनावा ॥
सुमनवृष्टि अकास तें होई। ब्रह्मानंद मगन सब लोई ॥
बृंद बृंद मिलि चलीं लोगाई। सहज संगार किएँ उठि धाई ॥
कनक कलस मंगल धरि थारा। गावत पैठहिं भूप दुआरा ॥
करि आरति नेवछावरि करहीं। बार बार सिसु चरनन्हि परहीं ॥
मागध सूत बंदिगन गायक। पावन गुन गावहिं रघुनायक ॥
सर्वस दान दीन्ह सब काहू। जेहि पावा राखा नहिं ताहू ॥
मृगमद चंदन कुंकुम कीचा। मची सकल बीथिन्ह बिच बीचा ॥

दो. गृह गृह बाज बधाव सुभ प्रगटे सुषमा कंद।

हरषवंत सब जहँ तहँ नगर नारि नर बृंद ॥ १९४ ॥

कैकयसुता सुमित्रा दोऊ। सुंदर सुत जनमत भैं ओऊ ॥
वह सुख संपति समय समाजा। कहि न सकइ सारद अहिराजा ॥
अवधपुरी सोहइ एहि भाँती। प्रभुहि मिलन आई जनु राती ॥
देखि भानू जनु मन सकुचानी। तदपि बनी संध्या अनुमानी ॥
अगर धूप बहु जनु अँधिआरी। उडइ अभीर मनहुँ अरुनारी ॥
मंदिर मनि समूह जनु तारा। नृप गृह कलस सो इंद्र उदारा ॥
भवन बेदधुनि अति मृदु बानी। जनु खग मूरखर समयँ जनु सानी ॥
कौतुक देखि पतंग भुलाना। एक मास तेई जात न जाना ॥

दो. मास दिवस कर दिवस भा मरम न जानइ कोइ।

रथ समेत रवि थाकेउ निसा कवन बिधि होइ ॥ १९५ ॥

यह रहस्य काहू नहिं जाना। दिन मनि चले करत गुनगाना ॥
देखि महोत्सव सुर मुनि नागा। चले भवन बरनत निज भागा ॥
औरउ एक कहउँ निज चोरी। सुनु गिरिजा अति दृढ मति तोरी ॥
काक भुसुंछि संग हम दोऊ। मनुजरूप जानइ नहिं कोऊ ॥
परमानंद प्रेमसुख फूले। बीथिन्ह फिरहिं मगन मन भूले ॥
यह सुभ चरित जान पै सोई। कृपा राम कै जापर होई ॥
तेहि अवसर जो जेहि बिधि आवा। दीन्ह भूप जो जेहि मन भावा ॥
गज रथ तुरग हेम गो हीरा। दीन्हे नृप नानाबिधि चीरा ॥

दो. मन संतोषे सबन्हि के जहँ तहँ देहि असीस।

सकल तनय चिर जीवहुँ तुलसिदास के ईस ॥ १९६ ॥

कछुक दिवस बीते एहि भाँती। जात न जानिअ दिन अरु राती ॥
नामकरन कर अवसरु जानी। भूप बोलि पठए मुनि ग्यानी ॥
करि पूजा भूपति अस भाषा। धरिअ नाम जो मुनि गुनि राखा ॥
इन्ह के नाम अनेक अनूपा। मैँ नृप कहब स्वमति अनुरूपा ॥
जो आनंद सिंधु सुखरासी। सीकर तें त्रैलोक सुपासी ॥
सो सुख धाम राम अस नामा। अखिल लोक दायक विश्रामा ॥
बिस्व भरन पोषन कर जोई। ताकर नाम भरत अस होई ॥
जाके सुमिरन तें रिपु नासा। नाम सत्रुहन बेद प्रकासा ॥

दो. लच्छन धाम राम प्रिय सकल जगत आधार।

गुरु बसिष्ट तेहि राखा लछिमन नाम उदार ॥ १९७ ॥

धरे नाम गुर हृदयँ विचारी। बेद तत्व नृप तव सुत चारी ॥
मुनि धन जन सरबस सिव प्राणा। बाल केलि तेहिँ सुख माना ॥
बारेहि ते निज हित पति जानी। लछिमन राम चरन रति मानी ॥
भरत सत्रुहन दूनउ भाई। प्रभु सेवक जसि प्रीति बडाई ॥
स्याम गौर सुंदर दोउ जोरी। निरखहि छवि जननीं तुन तोरी ॥
चारिउ सील रूप गुन धामा। तदपि अधिक सुखसागर रामा ॥
हृदयँ अनुग्रह इंदु प्रकासा। सूचत किरन मनोहर हासा ॥
कबहुँ उछंग कबहुँ बर पलना। मातु दुलारइ कहि प्रिय ललना ॥

दो. व्यापक ब्रह्म निरंजन निर्गुन बिगत बिनोद।

सो अज प्रेम भगति बस कौसल्या के गोद ॥ १९८ ॥

काम कोटि छवि स्याम सरीरा। नील कंज बारिद गंभीरा ॥
अरुन चरन पकंज नख जोती। कमल दलन्हि बैठे जनु मोती ॥
रेख कुलिस धवज अंकुर सोहे। नूपुर धुनि सुनि मुनि मन मोहे ॥
कटि किंकिनी उदर त्रय रेखा। नाभि गभीर जान जेहि देखा ॥
भुज बिसाल भूषन जुत भूरी। हियँ हरि नख अति सोभा रूरी ॥
उर मनिहार पदिक की सोभा। बिप्र चरन देखत मन लोभा ॥
कंबु कंठ अति चिबुक सुहाई। आनन अमित मदन छवि छाई ॥

दुइ दुइ दसन अधर अरुनारे। नासा तिलक को बरनै पारे ॥
सुंदर श्रवन सुचारु कपोला। अति प्रिय मधुर तोतरे बोला ॥
चिक्कन कच कुंचित गभुआरे। बहु प्रकार रचि मातु सँवारे ॥
पीत झगुलिआ तनु पहिराई। जानु पानि बिचरनि मोहि भाई ॥
रूप सकहिं नहिं कहि श्रुति सेषा। सो जानइ सपनेहुँ जेहि देखा ॥

दो. सुख संदोह मोहपर ग्यान गिरा गोतीत।

दंपति परम प्रेम बस कर सिसुचरित पुनीत ॥ १९९ ॥

एहि बिधि राम जगत पितु माता। कोसलपुर बासिन्ह सुखदाता ॥
जिन्ह रघुनाथ चरन रति मानी। तिन्ह की यह गति प्रगट भवानी ॥
रघुपति बिमुख जतन कर कोरी। कवन सकइ भव बंधन छोरी ॥
जीव चराचर बस कै राखे। सो माया प्रभु सों भय भाखे ॥
भुकुटि बिलास नचावइ ताही। अस प्रभु छाडि भजिअ कहु काही ॥
मन क्रम बचन छाडि चतुराई। भजत कृपा करिहहिं रघुराई ॥
एहि बिधि सिसुबिनोद प्रभु कीन्हा। सकल नगरबासिन्ह सुख दीन्हा ॥
लै उछंग कबहुँक हलरावै। कबहुँ पालनें घालि झुलावै ॥

दो. प्रेम मगन कौसल्या निसि दिन जात न जान।

सुत सनेह बस माता बालचरित कर गान ॥ २०० ॥

एक बार जननीं अन्हवाए। करि सिंगार पलनाँ पौढाए ॥
निज कुल इष्टदेव भगवाना। पूजा हेतु कीन्ह अस्नाना ॥
करि पूजा नैवेद्य चढावा। आपु गई जहँ पाक बनावा ॥
बहुरि मातु तहवाँ चलि आई। भोजन करत देख सुत जाई ॥
गै जननी सिसु पहिं भयभीता। देखा बाल तहाँ पुनि सूता ॥
बहुरि आइ देखा सुत सोई। हृदयँ कंप मन धीर न होई ॥
इहाँ उहाँ दुइ बालक देखा। मतिभ्रम मोर कि आन बिसेषा ॥
देखि राम जननी अकुलानी। प्रभु हँसि दीन्ह मधुर मुसुकानी ॥

दो. देखरावा मातहि निज अदभुत रूप अखंड।

रोम रोम प्रति लागे कोटि कोटि ब्रह्मंड ॥ २०१ ॥

अगनित रबि ससि सिव चतुरानन। बहु गिरि सरित सिंधु महि कानन ॥
काल कर्म गुन ग्यान सुभाऊ। सोउ देखा जो सुना न काऊ ॥

देखी माया सब विधि गाढी। अति सभित जोरें कर ठाढी ॥
 देखा जीव नचावइ जाही। देखी भगति जो छोरइ ताही ॥
 तन पुलकित मुख बचन न आवा। नयन मूदि चरननि सिरु नावा ॥
 बिसमयवंत देखि महतारी। भए बहुरि सिसुरूप खरारी ॥
 अस्तुति करि न जाइ भय माना। जगत पिता मैं सुत करि जाना ॥
 हरि जननि बहुविधि समुझाई। यह जनि कतहुँ कहसि सुनु माई ॥

दो. बार बार कौसल्या विनय करइ कर जोरि ॥

अब जनि कबहुँ व्यापै प्रभु मोहि माया तोरि ॥ २०२ ॥

बालचरित हरि बहुविधि कीन्हा। अति अनंद दासन्ह कहँ दीन्हा ॥
 कछुक काल बीतें सब भाई। बडे भए परिजन सुखदाई ॥
 चूडाकरन कीन्ह गुरु जाई। बिप्रन्ह पुनि दछिना बहु पाई ॥
 परम मनोहर चरित अपारा। करत फिरत चारिउ सुकुमारा ॥
 मन क्रम बचन अगोचर जोई। दसरथ अजिर बिचर प्रभु सोई ॥
 भोजन करत बोल जब राजा। नहि आवत तजि बाल समाजा ॥
 कौसल्या जब बोलन जाई। ठुमकु ठुमकु प्रभु चलहिं पराई ॥
 निगम नेति सिव अंत न पावा। ताहि धरै जननी हठि धावा ॥
 धूरस धूरि भरें तनु आए। भूपति बिहसि गोद बैठाए ॥

दो. भोजन करत चपल चित इत उत अवसरु पाइ।

भाजि चले किलकत मुख दधि ओदन लपटाइ ॥ २०३ ॥

बालचरित अति सरल सुहाए। सारद सेष संभु श्रुति गाए ॥
 जिन कर मन इन्ह सन नहिं राता। ते जन बंचित किए बिधाता ॥
 भए कुमार जबहिं सब भ्राता। दीन्ह जनेऊ गुरु पितु माता ॥
 गुरुगृहँ गए पढन रघुराई। अल्प काल विद्या सब आई ॥
 जाकी सहज स्वास श्रुति चारी। सो हरि पढ यह कौतुक भारी ॥
 विद्या विनय निपुन गुन सीला। खेलहिं खेल सकल नृपलीला ॥
 करतल बान धनुष अति सोहा। देखत रूप चराचर मोहा ॥
 जिन्ह बीथिन्ह बिहरहिं सब भाई। थकित होहिं सब लोग लुगाई ॥

दो. कोसलपुर बासी नर नारि वृद्ध अरु बाल।

प्रानहु ते प्रिय लागत सब कहुँ राम कृपाल ॥ २०४ ॥

बंधु सखा संग लेहिं बोलाई। बन मृगया नित खेलहिं जाई ॥
पावन मृग मारहिं जियँ जानी। दिन प्रति नृपहि देखेवाहिं आनी ॥
जे मृग राम बान के मारे। ते तनु तजि सुरलोक सिधारे ॥
अनुज सखा सँग भोजन करहीं। मातु पिता अग्या अनुसरहीं ॥
जेहि बिधि सुखी होहिं पुर लोगा। करहिं कृपानिधि सोइ संजोगा ॥
बेद पुरान सुनहिं मन लाई। आपु कहहिं अनुजन्ह समुझाई ॥
प्रातकाल उठि कै रघुनाथा। मातु पिता गुरु नावहिं माथा ॥
आयसु मागि करहिं पुर काजा। देखि चरित हरषइ मन राजा ॥

दो. व्यापक अकल अनीह अज निर्गुन नाम न रूप।

भगत हेतु नाना बिधि करत चरित्र अनूप ॥ २०५ ॥

यह सब चरित कहा मैं गाई। आगिलि कथा सुनहु मन लाई ॥
बिस्वामित्र महामुनि ग्यानी। बसहि बिपिन सुभ आश्रम जानी ॥
जहँ जप जग्य मुनि करही। अति मारीच सुबाहुहि डरहीं ॥
देखत जग्य निसाचर धावहि। करहि उपद्रव मुनि दुख पावहिं ॥
गाधितनय मन चिंता व्यापी। हरि विनु मरहि न निसिचर पापी ॥
तब मुनिवर मन कीन्ह बिचारा। प्रभु अवतरेउ हरन महि भारा ॥
एहुँ मिस देखौं पद जाई। करि बिनती आनौ दोउ भाई ॥
ग्यान विराग सकल गुन अयना। सो प्रभु मै देखब भरि नयना ॥

दो. बहुबिधि करत मनोरथ जात लागि नहिं बार।

करि मज्जन सरऊ जल गए भूप दरबार ॥ २०६ ॥

मुनि आगमन सुना जब राजा। मिलन गयऊ लै विप्र समाजा ॥
करि दंडवत मुनिहि सनमानी। निज आसन बैठारेन्हि आनी ॥
चरन परवारि कीन्हि अति पूजा। मो सम आजु धन्य नहिं दूजा ॥
बिबिध भाँति भोजन करवावा। मुनिवर हृदयँ हरष अति पावा ॥
पुनि चरननि मेले सुत चारी। राम देखि मुनि देह बिसारी ॥
भए मगन देखत मुख सोभा। जनु चकोर पूरन ससि लोभा ॥
तब मन हरषि बचन कह राऊ। मुनि अस कृपा न कीन्हिहु काऊ ॥
केहि कारन आगमन तुम्हारा। कहहु सो करत न लावउँ बारा ॥
असुर समूह सतावहिं मोही। मै जाचन आयउँ नृप तोही ॥
अनुज समेत देहु रघुनाथा। निसिचर बध मैं होब सनाथा ॥

दो. देहु भूप मन हरषित तजहु मोह अग्याना।

धर्म सुजस प्रभु तुम्ह कौं इन्ह कहँ अति कल्याण ॥ २०७ ॥

सुनि राजा अति अप्रिय बानी। हृदय कंप मुख दुति कुमुलानी ॥

चौथेंपन पायउँ सुत चारी। बिप्र बचन नहिं कहेहु बिचारी ॥

मागहु भूमि धेनु धन कोसा। सर्वस देउँ आजु सहरोसा ॥

देह प्रान तें प्रिय कछु नाही। सोउ मुनि देउँ निमिष एक माही ॥

सब सुत प्रिय मोहि प्रान कि नाई। राम देत नहिं बनइ गोसाई ॥

कहँ निसिचर अति घोर कठोरा। कहँ सुंदर सुत परम किसोरा ॥

सुनि नृप गिरा प्रेम रस सानी। हृदयँ हरष माना मुनि ग्यानी ॥

तब बसिष्ट बहु निधि समुझावा। नृप संदेह नास कहँ पावा ॥

अति आदर दोउ तनय बोलाए। हृदयँ लाइ बहु भाँति सिखाए ॥

मेरे प्रान नाथ सुत दोऊ। तुम्ह मुनि पिता आन नहिं कोऊ ॥

दो. सौंपे भूप रिषिहि सुत बहु बिधि देइ असीस।

जननी भवन गए प्रभु चले नाइ पद सीस ॥ २०८(क) ॥

सो. पुरुषसिंह दोउ बीर हरषि चले मुनि भय हरन ॥

कृपासिंधु मतिधीर अखिल बिस्व कारन करन ॥ २०८(ख) ॥

अरुन नयन उर बाहु बिसाला। नील जलज तनु स्याम तमाला ॥

कटि पट पीत कसैं बर भाथा। रुचिर चाप सायक दुहुँ हाथा ॥

स्याम गौर सुंदर दोउ भाई। बिस्वामित्र महानिधि पाई ॥

प्रभु ब्रह्मन्यदेव मै जाना। मोहि निति पिता तजेहु भगवाना ॥

चले जात मुनि दीन्ह दिखाई। सुनि ताडका क्रोध करि धाई ॥

एकहिं बान प्रान हरि लीन्हा। दीन जानि तेहि निज पद दीन्हा ॥

तब रिषि निज नाथहि जियँ चीन्ही। विद्यानिधि कहँ विद्या दीन्ही ॥

जाते लाग न छुधा पिपासा। अतुलित बल तनु तेज प्रकासा ॥

दो. आयुष सब समर्पि कै प्रभु निज आश्रम आनि।

कंद मूल फल भोजन दीन्ह भगति हित जानि ॥ २०९ ॥

प्रात कहा मुनि सन रघुराई। निर्भय जग्य करहु तुम्ह जाई ॥

होम करन लागे मुनि झारी। आपु रहे मख कीं रववारी ॥

सुनि मारीच निसाचर क्रोही। लै सहाय धावा मुनिद्रोही ॥
बिनु फर बान राम तेहि मारा। सत जोजन गा सागर पारा ॥
पावक सर सुबाहु पुनि मारा। अनुज निसाचर कटकु सँघारा ॥
मारि असुर द्विज निर्मयकारी। अस्तुति करहि देव मुनि झारी ॥
तहँ पुनि कछुक दिवस रघुराया। रहे कीन्हि बिप्रन्ह पर दाया ॥
भगति हेतु बहु कथा पुराना। कहे बिप्र जद्यपि प्रभु जाना ॥
तव मुनि सादर कहा बुझाई। चरित एक प्रभु देखिअ जाई ॥
धनुषजग्य मुनि रघुकुल नाथा। हरषि चले मुनिबर के साथ्था ॥
आश्रम एक दीख मग मारहीं। खग मृग जीव जंतु तहँ नारहीं ॥
पूछा मुनिहि सिला प्रभु देखी। सकल कथा मुनि कहा बिसेषी ॥

दो. गौतम नारि श्राप बस उपल देह धरि धीर।

चरन कमल रज चाहति कृपा करहु रघुबीर ॥ २१० ॥

छं. परसत पद पावन सोक नसावन प्रगट भई तपपुंज सही।
देखत रघुनायक जन सुख दायक सनमुख होइ कर जोरि रही ॥
अति प्रेम अधीरा पुलक सरीरा मुख नहिँ आवइ बचन कही।
अतिसय बडभागी चरनन्हि लागी जुगल नयन जलधार बही ॥
धीरजु मन कीन्हा प्रभु कहँ चीन्हा रघुपति कृपाँ भगति पाई।
अति निर्मल बानीं अस्तुति ठानी ग्यानगम्य जय रघुराई ॥
मै नारि अपावन प्रभु जग पावन रावन रिपु जन सुखदाई।
राजीव बिलोचन भव भय मोचन पाहि पाहि सरनहिँ आई ॥
मुनि श्राप जो दीन्हा अति भल कीन्हा परम अनुग्रह मै माना।
देखेउँ भरि लोचन हरि भवमोचन इहइ लाभ संकर जाना ॥
बिनती प्रभु मोरी मै मति भोरी नाथ न मागउँ बर आना।
पद कमल परागा रस अनुरागा मम मन मधुप करै पाना ॥
जेहिँ पद सुरसरिता परम पुनीता प्रगट भई सिव सीस धरी।
सोइ पद पंकज जेहि पूजत अज मम सिर धरेउ कृपाल हरी ॥
एहि भौँति सिधारी गौतम नारी बार बार हरि चरन परी।
जो अति मन भावा सो बरु पावा गै पतिलोक अनंद भरी ॥

दो. अस प्रभु दीनबंधु हरि कारन रहित दयाल।

तुलसिदास सठ तेहि भजु छाडि कपट जंजाल ॥ २११ ॥

मासपारायण, सातवाँ विश्राम

चले राम लछिमन मुनि संग्गा। गए जहाँ जग पावनि गंगा ॥
गाधिसूनु सब कथा सुनाई। जेहि प्रकार सुरसरि महि आई ॥
तब प्रभु रिषिन्ह समेत नहाए। विविध दान महिदेवन्हि पाए ॥
हरषि चले मुनि बृंद सहाया। बेगि बिदेह नगर निअराया ॥
पुर रम्यता राम जब देखी। हरषे अनुज समेत बिसेषी ॥
बापीं कूप सरित सर नाना। सलिल सुधासम मनि सोपाना ॥
गुंजत मंजु मत्त रस भृंगा। कूजत कल बहुवरन बिहंगा ॥
बरन बरन बिकसे बन जाता। त्रिविध समीर सदा सुखदाता ॥

दो. सुमन बाटिका बाग बन बिपुल बिहंग निवास।

फूलत फलत सुपल्लवत सोहत पुर चहुँ पास ॥ २१२ ॥

बनइ न बरनत नगर निकाई। जहाँ जाइ मन तहँई लोभाई ॥
चारु बजारु बिचित्र अँबारी। मनिमय विधि जनु स्वकर सँवारी ॥
धानिक बनिक बर धनद समाना। बैठ सकल बस्तु लै नाना ॥
चौहट सुंदर गलीं सुहाई। संतत रहहिं सुगंध सिंचाई ॥
मंगलमय मंदिर सब केरें। चित्रित जनु रतिनाथ चितेरें ॥
पुर नर नारि सुभग सुचि संता। धरमसील ग्यानी गुनवंता ॥
अति अनूप जहँ जनक निवासू। विथकहिं बिबुध बिलोकि बिलासू ॥
होत चकित चित कोट बिलोकी। सकल भुवन सोभा जनु रोकी ॥

दो. धवल धाम मनि पुरट पट सुघटित नाना भाँति।

सिय निवास सुंदर सदन सोभा किमि कहि जाति ॥ २१३ ॥

सुभग द्वार सब कुलिस कपाटा। भूप भीर नट मागध भाटा ॥
बनी बिसाल बाजि गज साला। हय गय रथ संकुल सब काला ॥
सूर सचिव सेनप बहुतेरे। नृपगृह सरिस सदन सब केरे ॥
पुर बाहेर सर सारित समीपा। उतरे जहँ तहँ बिपुल महीपा ॥
देखि अनूप एक अँवराई। सब सुपास सब भाँति सुहाई ॥
कौसिक कहेउ मोर मनु माना। इहाँ रहिअ रघुवीर सुजाना ॥
भलेहिं नाथ कहि कृपानिकेता। उतरे तहँ मुनिबृंद समेता ॥
बिस्वामित्र महामुनि आए। समाचार मिथिलापति पाए ॥

दो. संग सचिव सुचि भूरि भट भूसुर बर गुर ग्याति।
चले मिलन मुनिनायकहि मुदित राउ एहि भाँति ॥ २१४ ॥

कीन्ह प्रनामु चरन धरि माथा। दीन्हि असीस मुदित मुनिनाथा ॥
बिप्रबृंद सब सादर बंदे। जानि भाग्य बड राउ अनंदे ॥
कुसल प्रख कहि बारहिं बारा। बिस्वामित्र नृपहि बैठारा ॥
तेहि अवसर आए दोउ भाई। गए रहे देखन फुलवाई ॥
स्याम गौर मृदु बयस किसोरा। लोचन सुखद बिस्व चित चोरा ॥
उठे सकल जब रघुपति आए। बिस्वामित्र निकट बैठाए ॥
भए सब सुखी देखि दोउ भ्राता। बारि बिलोचन पुलकित गाता ॥
मूरति मधुर मनोहर देखी। भयउ बिदेहु बिदेहु बिसेषी ॥

दो. प्रेम मगन मनु जानि नृपु करि बिबेकु धरि धीर।
बोलेउ मुनि पद नाइ सिरु गदगद गिरा गभीर ॥ २१५ ॥

कहहु नाथ सुंदर दोउ बालक। मुनिकुल तिलक कि नृपकुल पालक ॥
ब्रह्म जो निगम नेति कहि गावा। उभय बेष धरि की सोइ आवा ॥
सहज विरागरूप मनु मोरा। थकित होत जिमि चंद चकोरा ॥
ताते प्रभु पूछउँ सतिभाऊ। कहहु नाथ जनि करहु दुराऊ ॥
इन्हहि बिलोकत अति अनुरागा। बरबस ब्रह्मसुखहि मन त्यागा ॥
कह मुनि बिहसि कहेहु नृप नीका। बचन तुम्हार न होइ अलीका ॥
ए प्रिय सबहि जहाँ लागि प्राणी। मन मुसुकाहिं रामु सुनि बानी ॥
रघुकुल मनि दसरथ के जाए। मम हित लागि नरेस पठाए ॥

दो. रामु लखनु दोउ बंधुबर रूप सील बल धाम।
मख राखेउ सबु साखि जगु जिते असुर संग्राम ॥ २१६ ॥

मुनि तव चरन देखि कह राऊ। कहि न सकउँ निज पुन्य प्राभाऊ ॥
सुंदर स्याम गौर दोउ भ्राता। आनँदहू के आनँद दाता ॥
इन्ह कै प्रीति परसपर पावनि। कहि न जाइ मन भाव सुहावनि ॥
सुनहु नाथ कह मुदित बिदेहू। ब्रह्म जीव इव सहज सनेहू ॥
पुनि पुनि प्रभुहि चितव नरनाहू। पुलक गात उर अधिक उछाहू ॥
श्रुनिहि प्रसंसि नाइ पद सीसू। चलेउ लवाइ नगर अवनीसू ॥
सुंदर सदन सुखद सब काला। तहाँ बासु लै दीन्ह भुआला ॥

करि पूजा सब विधि सेवकाई। गयउ राउ गृह बिदा कराई ॥

दो. रिषय संग रघुवंस मनि करि भोजनु विश्रामु।

बैठै प्रभु भ्राता सहित दिवसु रहा भरि जामु ॥ २१७ ॥

लखन हृदयँ लालसा बिसेषी। जाइ जनकपुर आइअ देखी ॥

प्रभु भय बहुरि मुनिहि सकुचाहीं। प्रगट न कहहिं मनहिं मुसुकाहीं ॥

राम अनुज मन की गति जानी। भगत बछलता हिंयँ हुलसानी ॥

परम बिनीत सकुचि मुसुकाई। बोले गुरु अनुसासन पाई ॥

नाथ लखनु पुरु देखन चहहीं। प्रभु सकोच डर प्रगट न कहहीं ॥

जौं राउर आयसु मैं पावौं। नगर देखाइ तुरत लै आवौ ॥

सुनि मुनीसु कह बचन सप्रीती। कस न राम तुम्ह राखहु नीती ॥

धरम सेतु पालक तुम्ह ताता। प्रेम बिबस सेवक सुखदाता ॥

दो. जाइ देखी आवहु नगरु सुख निधान दोउ भाइ।

करहु सुफल सब के नयन सुंदर बदन देखाइ ॥ २१८ ॥

मासपारायण, आठवाँ विश्राम

नवान्हपारायण, दूसरा विश्राम

मुनि पद कमल बंदि दोउ भ्राता। चले लोक लोचन सुख दाता ॥

बालक बृंदि देखि अति सोभा। लगे संग लोचन मनु लोभा ॥

पीत बसन परिकर कटि भाथा। चारु चाप सर सोहत हाथा ॥

तन अनुहरत सुचंदन खोरी। स्यामल गौर मनोहर जोरी ॥

केहरि कंधर बाहु बिसाला। उर अति रुचिर नागमनि माला ॥

सुभग सोन सरसीरुह लोचन। बदन मयंक तापत्रय मोचन ॥

कानन्हि कनक फूल छवि देहीं। चितवत चितहि चोरि जनु लेहीं ॥

चितवनि चारु भृकुटि बर बाँकी। तिलक रेखा सोभा जनु चाँकी ॥

दो. रुचिर चौतनीं सुभग सिर मेचक कुंचित केस।

नख सिख सुंदर बंधु दोउ सोभा सकल सुदेस ॥ २१९ ॥

देखन नगरु भूपसुत आए। समाचार पुरबासिन्ह पाए ॥

धाए धाम काम सब त्यागी। मनहु रंक निधि लूटन लागी ॥

निरखि सहज सुंदर दोउ भाई। होहिं सुखी लोचन फल पाई ॥

जुवतीं भवन झरोखन्हि लागीं। निरखहिं राम रूप अनुरागीं ॥

कहहिं परसपर बचन सप्रीती। सखि इन्ह कोटि काम छवि जीती ॥
सुर नर असुर नाग मुनि माहीं। सोभा असि कहूँ सुनिअति नाहीं ॥
बिष्नु चारि भुज बिधि मुख चारी। बिकट बेष मुख पंच पुरारी ॥
अपर देउ अस कोउ न आही। यह छवि सखि पटतरिअ जाही ॥

दो. बय किसोर सुषमा सदन स्याम गौर सुख घाम ।

अंग अंग पर वारिअहिं कोटि कोटि सत काम ॥ २२० ॥

कहहु सखी अस को तनुधारी। जो न मोह यह रूप निहारी ॥
कोउ सप्रेम बोली मृदु बानी। जो मैं सुना सो सुनहु सयानी ॥
ए दोऊ दसरथ के टोटा। बाल मरालन्हि के कल जोटा ॥
मुनि कौसिक मख के रखवारे। जिन्ह रन अजिर निसाचर मारे ॥
स्याम गात कल कंज बिलोचन। जो मारीच सुभुज मद्दु मोचन ॥
कौसल्या सुत सो सुख खानी। नामु रामु धनु सायक पानी ॥
गौर किसोर बेषु बर काछें। कर सर चाप राम के पाछें ॥
लछिमनु नामु राम लघु भ्राता। सुनु सखि तासु सुमित्रा माता ॥

दो. विप्रकाजु करि बंधु दोउ मग मुनिवधू उधारि।

आए देखन चापमख सुनि हरषीं सब नारि ॥ २२१ ॥

देखि राम छवि कोउ एक कहई। जोगु जानकिहि यह बरु अहई ॥
जौ सखि इन्हहि देख नरनाहू। पन परिहरि हठि करइ बिबाहू ॥
कोउ कह ए भूपति पहिचाने। मुनि समेत सादर सनमाने ॥
सखि परंतु पनु राउ न तजई। विधि बस हठि अबिवेकहि भजई ॥
कोउ कह जौ भल अहइ बिधाता। सब कहूँ सुनिअ उचित फलदाता ॥
तौ जानकिहि मिलिहि बरु एहू। नाहिन आलि इहाँ संदेहू ॥
जौ विधि बस अस बनै सँजोगू। तौ कृतकृत्य होइ सब लोगू ॥
सखि हमरें आरति अति तातें। कबहुँक ए आवहिं एहि नातें ॥

दो. नाहिं त हम कहूँ सुनहु सखि इन्ह कर दरसनु दूरि।

यह संघटु तब होइ जब पुन्य पुराकृत भूरि ॥ २२२ ॥

बोली अपर कहेहु सखि नीका। एहिं बिआह अति हित सबहीं का ॥
कोउ कह संकर चाप कठोरा। ए स्यामल मृदुगात किसोरा ॥
सबु असमंजस अहइ सयानी। यह सुनि अपर कहइ मृदु बानी ॥

सखि इन्ह कहँ कोउ कोउ अस कहहीं। बड़ प्रभाउ देखत लघु अहहीं ॥
 परसि जासु पद पंकज धूरी। तरी अहल्या कृत अघ भूरी ॥
 सो कि रहिहि विनु सिवधनु तोरें। यह प्रतीति परिहरिअ न भोरें ॥
 जेहि बिरंचि रचि सीय सँवारी। तेहि स्यामल बरु रचेउ विचारी ॥
 तासु बचन सुनि सब हरषानीं। ऐसेइ होउ कहहिं मुदु बानी ॥

दो. हियँ हरषहिं बरषहिं सुमन सुमुखि सुलोचनि बृंद।
 जाहिं जहाँ जहँ बंधु दोउ तहँ तहँ परमानंद ॥ २२३ ॥

पुर पूब दिसि गो दोउ भाई। जहँ धनुमख हित भूमि बनाई ॥
 अति बिस्तार चारु गच ढारी। विमल वेदिका रुचिर सँवारी ॥
 चहुँ दिसि कंचन मंच बिसाला। रचे जहाँ बेठहिं महिपाला ॥
 तेहि पाछें समीप चहुँ पासा। अपर मंच मंडली बिलासा ॥
 कल्लुक ऊँचि सब भाँति सुहाई। बैठहिं नगर लोग जहँ जाई ॥
 तिन्ह के निकट बिसाल सुहाए। धवल धाम बहुबरन बनाए ॥
 जहँ बैठें देखहिं सब नारी। जथा जोगु निज कुल अनुहारी ॥
 पुर बालक कहि कहि मूदु बचना। सादर प्रभुहि देखावहिं रचना ॥

दो. सब सिसु एहि मिस प्रेमबस परसि मनोहर गात।
 तन पुलकहिं अति हरषु हियँ देखि देखि दोउ भ्रात ॥ २२४ ॥

सिसु सब राम प्रेमबस जाने। प्रीति समेत निकेत बखाने ॥
 निज निज रुचि सब लेंहिं बोलाई। सहित सनेह जाहिं दोउ भाई ॥
 राम देखावहिं अनुजहि रचना। कहि मूदु मधुर मनोहर बचना ॥
 लव निमेष महँ भुवन निकाया। रचइ जासु अनुसासन माया ॥
 भगति हेतु सोइ दीनदयाला। चितवत चकित धनुष मखसाला ॥
 कौतुक देखि चले गुरु पाहीं। जानि बिलंबु त्रास मन माहीं ॥
 जासु त्रास डर कहँ डर होई। भजन प्रभाउ देखावत सोई ॥
 कहि बातें मूदु मधुर सुहाई। किए बिदा बालक बरिआई ॥

दो. सभय सप्रेम विनीत अति सकुच सहित दोउ भाइ।
 गुर पद पंकज नाइ सिर बैठे आयसु पाइ ॥ २२५ ॥

निसि प्रबेस मुनि आयसु दीन्हा। सबहीं संध्याबंदनु कीन्हा ॥
 कहत कथा इतिहास पुरानी। रुचिर रजनि जुग जाम सिरानी ॥

मुनिबर सयन कीन्हि तब जाई। लगे चरन चापन दोउ भाई ॥
जिन्ह के चरन सरोरुह लागी। करत बिबिध जप जोग बिरागी ॥
तेइ दोउ बंधु प्रेम जनु जीते। गुर पद कमल पलोदत प्रीते ॥
बारबार मुनि अग्या दीन्ही। रघुबर जाइ सयन तब कीन्ही ॥
चापत चरन लखनु उर लाएँ। सभय सप्रेम परम सचु पाएँ ॥
पुनि पुनि प्रभु कह सोवहु ताता। पौढे धरि उर पद जलजाता ॥
दो. उठे लखन निसि बिगत सुनि अरुनसिखा धुनि कान ॥
गुर तें पहिलेहिं जगतपति जागे रामु सुजान ॥ २२६ ॥

सकल सौच करि जाइ नहाए। नित्य निबाहि मुनिहि सिर नाए ॥
समय जानि गुर आयसु पाई। लेन प्रसून चले दोउ भाई ॥
भूप बागु बर देखेउ जाई। जहँ बसंत रितु रही लोभाई ॥
लागे बिटप मनोहर नाना। बरन बरन बर बेलि बिताना ॥
नव पल्लव फल सुमान सुहाए। निज संपति सुर रूख लजाए ॥
चातक कोकिल कीर चकोरा। कूजत बिहग नटत कल मोरा ॥
मध्य बाग सरु सोह सुहावा। मनि सोपान बिचित्र बनावा ॥
बिमल सलिलु सरसिज बहुरंगा। जलखग कूजत गुंजत भृंगा ॥

दो. बागु तडागु बिलोकि प्रभु हरषे बंधु समेत।
परम रम्य आरामु यहु जो रामहि सुख देत ॥ २२७ ॥

चहुँ दिसि चितइ पूँछि मालिगन। लगे लेन दल फूल मुदित मन ॥
तेहि अवसर सीता तहँ आई। गिरिजा पूजन जननि पठाई ॥
संग सखीं सब सुभग सयानी। गावहिं गीत मनोहर बानी ॥
सर समीप गिरिजा गृह सोहा। बरनि न जाइ देखि मनु मोहा ॥
मज्जनु करि सर सखिन्ह समेता। गई मुदित मन गौरि निकेता ॥
पूजा कीन्हि अधिक अनुरागा। निज अनुरूप सुभग बरु मागा ॥
एक सखी सिय संगु बिहाई। गई रही देखन फुलवाई ॥
तेहि दोउ बंधु बिलोके जाई। प्रेम बिबस सीता पहिं आई ॥

दो. तासु दसा देखि सखिन्ह पुलक गात जलु नैन।
कहु कारनु निज हरष कर पूछहि सब मूढु बैन ॥ २२८ ॥

देखन बागु कुअँर दुइ आए। बय किसोर सब भाँति सुहाए ॥

स्याम गौर किमि कहौं बखानी। गिरा अनयन नयन विनु बानी ॥
 सुनि हरषीं सब सखीं सयानी। सिय हियँ अति उतकंठा जानी ॥
 एक कहइ नृपसुत तेइ आली। सुने जे मुनि सँग आए काली ॥
 जिन्ह निज रूप मोहनी डारी। कीन्ह स्ववस नगर नर नारी ॥
 बरनत छवि जहँ तहँ सब लोगू। अवसि देखिअहिँ देखन जोगू ॥
 तासु वचन अति सियहि सुहाने। दरस लागि लोचन अकुलाने ॥
 चली अग्र करि प्रिय सखि सोई। प्रीति पुरातन लखइ न कोई ॥

दो. सुमिरि सीय नारद बचन उपजी प्रीति पुनीत ॥

चकित बिलोकति सकल दिसि जनु सिसु मृगी सभीत ॥ २२९ ॥

कंकन किंकिनि नूपुर धुनि सुनि। कहत लखन सन रामु हृदयँ गुनि ॥
 मानहुँ मदन दुंदुभी दीन्ही ॥ मनसा बिस्व बिजय कहँ कीन्ही ॥
 अस कहि फिरि चितए तेहि ओरा। सिय मुख ससि भए नयन चकोरा ॥
 भए बिलोचन चारु अचंचल। मनहुँ सकुचि निमि तजे दिगंचल ॥
 देखि सीय सोभा सुखु पावा। हृदयँ सराहत बचनु न आवा ॥
 जनु विरंचि सब निज निपुनाई। विरचि बिस्व कहँ प्रगटि देखाई ॥
 सुंदरता कहँ सुंदर करई। छविगृहँ दीपसिखा जनु बरई ॥
 सब उपमा कवि रहे जुठारी। केहिँ पटतरौं बिदेहकुमारी ॥

दो. सिय सोभा हियँ बरनि प्रभु आपनि दसा बिचारि।

बोले सुचि मन अनुज सन बचन समय अनुहारि ॥ २३० ॥

तात जनकतनया यह सोई। धनुषजग्य जेहि कारन होई ॥
 पूजन गौरि सखीं लै आई। करत प्रकासु फिरइ फुलवाई ॥
 जासु बिलोकि अलोकिक सोभा। सहज पुनीत मोर मनु छोभा ॥
 सो सबु कारन जान बिधाता। फरकहिँ सुभद अंग सुनु भ्राता ॥
 रघुवंसिन्ह कर सहज सुभाऊ। मनु कुपंथ पगु धरइ न काऊ ॥
 मोहि अतिसय प्रतीति मन केरी। जेहिँ सपनेहुँ परनारि न हेरी ॥
 जिन्ह कै लहहिँ न रिपु रन पीठी। नहिँ पावहिँ परतिय मनु डीठी ॥
 मंगन लहहिँ न जिन्ह कै नाहीं। ते नरबर थारे जग माहीं ॥

दो. करत बतकहि अनुज सन मन सिय रूप लोभान।

मुख सरोज मकरंद छवि करइ मधुप इव पान ॥ २३१ ॥

चितवहि चकित चहूँ दिसि सीता। कहँ गए नृपकिसोर मनु चिंता ॥
जहँ बिलोक मृग सावक नैनी। जनु तहँ बरिस कमल सित श्रेनी ॥
लता ओट तब सखिन्ह लखाए। स्यामल गौर किसोर सुहाए ॥
देखि रूप लोचन ललचाने। हरषे जनु निज निधि पहिचाने ॥
थके नयन रघुपति छवि देखें। पलकन्हिहूँ परिहरीं निमेषें ॥
अधिक सनेहँ देह भै भोरी। सरद ससिहि जनु चितव चकोरी ॥
लोचन मग रामहि उर आनी। दीन्हे पलक कपाट सयानी ॥
जब सिय सखिन्ह प्रेमबस जानी। कहि न सकहिं कछु मन सकुचानी ॥

दो. लताभवन तें प्रगट भे तेहि अवसर दोउ भाइ।

निकसे जनु जुग विमल विधु जलद पटल बिलगाइ ॥ २३२ ॥

सोभा सीवँ सुभग दोउ बीरा। नील पीत जलजाभ सरीरा ॥
मोरपंख सिर सोहत नीके। गुच्छ बीच बिच कुसुम कली के ॥
भाल तिलक श्रमबिंदु सुहाए। श्रवन सुभग भूषन छवि छाए ॥
बिकट भुकुटि कच घूघरवारे। नव सरोज लोचन रतनारे ॥
चारु चिबुक नासिका कपोला। हास बिलास लेत मनु मोला ॥
मुखछवि कहि न जाइ मोहि पाहीं। जो बिलोकि बहु काम लजाहीं ॥
उर मनि माल कंबु कल गीवा। काम कलभ कर भुज बलसीवा ॥
सुमन समेत बाम कर दोना। सावँर कुअँर सरखी सुठि लोना ॥

दो. केहरि कटि पट पीत धर सुषमा सील निधान।

देखि भानुकुलभूषनहि बिसरा सखिन्ह अपान ॥ २३३ ॥

धरि धीरजु एक आलि सयानी। सीता सन बोली गहि पानी ॥
बहुरि गौरि कर ध्यान करेहू। भूपकिसोर देखि किन लेहू ॥
सकुचि सीयँ तब नयन उघारे। सनमुख दोउ रघुसिंघ निहारे ॥
नख सिख देखि राम कै सोभा। सुमिरि पिता पनु मनु अति छोभा ॥
परबस सखिन्ह लखी जब सीता। भयउ गहरु सब कहहि समीता ॥
पुनि आउब एहि बेरिआँ काली। अस कहि मन बिहसी एक आली ॥
गूढ गिरा सुनि सिय सकुचानी। भयउ बिलंबु मातु भय मानी ॥
धरि बडि धीर रामु उर आने। फिरि अपनपउ पितुबस जाने ॥

दो. देखन मिस मृग विहग तरु फिरइ बहोरि बहोरि।

निरखि निरखि रघुवीर छवि बाढ़इ प्रीति न थोरि ॥ २३४ ॥

जानि कठिन सिवचाप बिसूरति। चली राखि उर स्यामल मूरति ॥
 प्रभु जब जात जानकी जानी। सुख सनेह सोभा गुन खानी ॥
 परम प्रेममय मृदु मसि कीन्ही। चारु चित भीतीं लिख लीन्ही ॥
 गई भवानी भवन बहोरी। बंदि चरन बोली कर जोरी ॥
 जय जय गिरिवरराज किसोरी। जय महेस मुख चंद चकोरी ॥
 जय गज बदन षडानन माता। जगत जननि दामिनि द्रुति गाता ॥
 नहिं तव आदि मध्य अवसाना। अमित प्रभाउ बेदु नहिं जाना ॥
 भव भव विभव पराभव कारिनि। विस्व विमोहनि स्वबस बिहारिनि ॥

दो. पतिदेवता सुतीय महुँ मातु प्रथम तव रेख।

महिमा अमित न सकहिं कहि सहस सारदा सेष ॥ २३५ ॥

सेवत तोहि सुलभ फल चारी। बरदायनी पुरारि पिआरी ॥
 देबि पूजि पद कमल तुम्हारे। सुर नर मुनि सब होहिं सुखारे ॥
 मोर मनोरथु जानहु नीके। बसहु सदा उर पुर सबही के ॥
 कीन्हेउं प्रगट न कारन तेहीं। अस कहि चरन गहे बैदेहीं ॥
 बिनय प्रेम बस भई भवानी। खसी माल मूरति मुसुकानी ॥
 सादर सियँ प्रसादु सिर धरेऊ। बोली गौरि हरषु हियँ भरेऊ ॥
 सुनु सिय सत्य असीस हमारी। पूजिहि मन कामना तुम्हारी ॥
 नारद बचन सदा सुचि साचा। सो बरु मिलिहि जाहिं मनु राचा ॥

छं. मनु जाहिं राचेउ मिलिहि सो बरु सहज सुंदर साँवरो।

करुना निधान सुजान सीलु सनेहु जानत रावरो ॥

एहि भाँति गौरि असीस सुनि सिय सहित हियँ हरषीं अली।

तुलसी भवानिहि पूजि पुनि पुनि मुदित मन मंदिर चली ॥

सो. जानि गौरि अनुकूल सिय हिय हरषु न जाइ कहि।

मंजुल मंगल मूल बाम अंग फरकन लगे ॥ २३६ ॥

हृदयँ सराहत सीय लोनाई। गुर समीप गवने दोउ भाई ॥
 राम कहा सबु कौसिक पाहीं। सरल सुभाउ छुअत छल नाहीं ॥
 सुमन पाइ मुनि पूजा कीन्ही। पुनि असीस दुहु भाइन्ह दीन्ही ॥
 सुफल मनोरथ होहुँ तुम्हारे। रामु लखनु सुनि भए सुखारे ॥

करि भोजनु मुनिबर विग्यानी। लगे कहन कछु कथा पुरानी ॥
बिगत दिवसु गुरु आयसु पाई। संध्या करन चले दोउ भाई ॥
प्राची दिसि ससि उयउ सुहावा। सिय मुख सरिस देखि सुखु पावा ॥
बहुरि बिचारु कीन्ह मन माहीं। सीय बदन सम हिमकर नाहीं ॥

दो. जनमु सिंधु पुनि बंधु विषु दिन मलीन सकलंक।

सिय मुख समता पाव किमि चंदु बापुरो रंक ॥ २३७ ॥

घटइ बढइ विरहनि दुखदाई। ग्रसइ राहु निज संधिहिं पाई ॥
कोक सिकप्रद पंकज द्रोही। अवगुन बहुत चंद्रमा तोही ॥
बैदेही मुख पटतर दीन्हे। होइ दोष बड अनुचित कीन्हे ॥
सिय मुख छबि विधु ब्याज बखानी। गुरु पहिं चले निसा बडि जानी ॥
करि मुनि चरन सरोज प्रनामा। आयसु पाइ कीन्ह विश्रामा ॥
बिगत निसा रघुनायक जागे। बंधु बिलोकि कहन अस लागे ॥
उदउ अरुन अवलोकहु ताता। पंकज कोक लोक सुखदाता ॥
बोले लखनु जोरि जुग पानी। प्रभु प्रभाउ सूचक मृदु बानी ॥

दो. अरुनोदयँ सकुचे कुमुद उडगन जोति मलीन।

जिमि तुम्हार आगमन सुनि भए नृपति बलहीन ॥ २३८ ॥

नृप सब नखत करहिं उजिआरी। टारि न सकहिं चाप तम भारी ॥
कमल कोक मधुकर खग नाना। हरषे सकल निसा अवसाना ॥
ऐसेहिं प्रभु सब भगत तुम्हारे। होइहिं टूटें धनुष सुखारे ॥
उयउ भानु विनु श्रम तम नासा। दुरे नखत जग तेजु प्रकासा ॥
रवि निज उदय ब्याज रघुराया। प्रभु प्रतापु सब नृपन्ह दिखाया ॥
तव भुज बल महिमा उदघाटी। प्रगटी धनु बिघटन परिपाटी ॥
बंधु बचन सुनि प्रभु मुसुकाने। होइ सुचि सहज पुनीत नहाने ॥
नित्यक्रिया करि गुरु पहिं आए। चरन सरोज सुभग सिर नाए ॥
सतानंदु तब जनक बोलाए। कौसिक मुनि पहिं तुरत पठाए ॥
जनक बिनय तिन्ह आइ सुनाई। हरषे बोलि लिए दोउ भाई ॥

दो. सतानंदुअ बंदि प्रभु बैठे गुर पहिं जाइ।

चलहु तात मुनि कहेउ तब पठवा जनक बोलाइ ॥ २३९ ॥

सीय स्वयंवरु देखिअ जाई। ईसु काहि धौं देइ बडाई ॥

लखन कहा जस भाजनु सोई। नाथ कृपा तव जापर होई ॥
हरषे मुनि सब सुनि बर बानी। दीन्हि असीस सबहिं सुखु मानी ॥
पुनि मुनिवृंद समेत कृपाला। देखन चले धनुषमख साला ॥
रंगभूमि आए दोउ भाई। असि सुधि सब पुरबासिन्ह पाई ॥
चले सकल गृह काज बिसारी। बाल जुबान जरठ नर नारी ॥
देखी जनक भीर भै भारी। सुचि सेवक सब लिए हँकारी ॥
तुरत सकल लोगन्ह पहिं जाहू। आसन उचित देहू सब काहू ॥

दो. कहि मृदु बचन बिनीत तिन्ह बैठारे नर नारि।

उत्तम मध्यम नीच लघु निज निज थल अनुहारि ॥ २४० ॥

राजकुअँर तेहि अवसर आए। मनहुँ मनोहरता तन छापे ॥
गुन सागर नागर बर वीरा। सुंदर स्यामल गौर सरीरा ॥
राज समाज विराजत रूरे। उडगन महुँ जनु जुग विधु पूरे ॥
जिन्ह कें रही भावना जैसी। प्रभु मूरति तिन्ह देखी तैसी ॥
देखहिं रूप महा रनधीरा। मनहुँ वीर रसु धरें सरीरा ॥
डरे कुटिल नृप प्रभुहि निहारी। मनहुँ भयानक मूरति भारी ॥
रहे असुर छल छोनपि बेषा। तिन्ह प्रभु प्रगट कालसम देखा ॥
पुरबासिन्ह देखे दोउ भाई। नरभूषन लोचन सुखदाई ॥

दो. नारि बिलोकहिं हरषि हियँ निज निज रुचि अनुरूप।

जनु सोहत सिंगार धरि मूरति परम अनूप ॥ २४१ ॥

बिदुषन्ह प्रभु विराटमय दीसा। बहु मुख कर पग लोचन सीसा ॥
जनक जाति अवलोकहिं कैसैं। सजन सगे प्रिय लागाहिं जैसैं ॥
सहित बिदेह बिलोकहिं रानी। सिसु सम प्रीति न जाति बखानी ॥
जोगिन्ह परम तत्वमय भासा। सांत सुद्ध सम सहज प्रकासा ॥
हरिभगतन्ह देखे दोउ भ्राता। इष्टदेव इव सब सुख दाता ॥
रामाहि चितव भायँ जेहि सीया। सो सनेहु सुखु नहिं कथनीया ॥
उर अनुभवति न कहि सक सोऊ। कवन प्रकार कहै कवि कोऊ ॥
एहि विधि रहा जाहि जस भाऊ। तेहिं तस देखेउ कोसलराऊ ॥

दो. राजत राज समाज महुँ कोसलराज किसोर।

सुंदर स्यामल गौर तन बिस्व बिलोचन चोर ॥ २४२ ॥

सहज मनोहर मूरति दोऊ। कोटि काम उपमा लघु सोऊ ॥
सरद चंद निंदक मुख नीके। नीरज नयन भावते जी के ॥
चितवत चारु मार मनु हरनी। भावति हृदय जाति नहीं बरनी ॥
कल कपोल श्रुति कुंडल लोला। चिबुक अधर सुंदर मृदु बोला ॥
कुमुदबंधु कर निंदक हाँसा। भृकुटी बिकट मनोहर नासा ॥
भाल बिसाल तिलक झलकाहीं। कच बिलोकि अलि अवलि लजाहीं ॥
पीत चौतनीं सिरन्हि सुहाई। कुसुम कलीं विच वीच बनाई ॥
रेखें रुचिर कंबु कल गीवाँ। जनु त्रिभुवन सुषमा की सीवाँ ॥

दो. कुंजर मनि कंठा कलित उरन्हि तुलसिका माल।
वृषभ कंध केहरि ठवनि बल निधि बाहु बिसाल ॥ २४३ ॥

कटि तूनीर पीत पट बाँधे। कर सर धनुष बाम बर काँधे ॥
पीत जग्य उपवीत सुहाए। नख सिख मंजु महाछवि छाए ॥
देखि लोग सब भए सुखारे। एकटक लोचन चलत न तारे ॥
हरषे जनकु देखि दोउ भाई। मुनि पद कमल गहे तब जाई ॥
करि बिनती निज कथा सुनाई। रंग अवनि सब मुनिहि देखाई ॥
जहँ जहँ जाहि कुअँर बर दोऊ। तहँ तहँ चकित चितव सबु कोऊ ॥
निज निज रुख रामहि सबु देखा। कोउ न जान कछु मरमु बिसेषा ॥
भलि रचना मुनि नृप सन कहेऊ। राजाँ मुदित महासुख लहेऊ ॥

दो. सब मंचन्ह ते मंचु एक सुंदर बिसद बिसाल।
मुनि समेत दोउ बंधु तहँ बैठारे महिपाल ॥ २४४ ॥

प्रभुहि देखि सब नृप हियँ हारे। जनु राकेस उदय भएँ तारे ॥
असि प्रतीति सब के मन माहीं। राम चाप तोरब सक नाहीं ॥
बिनु भंजेहुँ भव धनुषु बिसाला। मेलिहि सीय राम उर माला ॥
अस विचारि गवनहु घर भाई। जसु प्रतापु बलु तेजु गवाँई ॥
बिहसे अपर भूप सुनि बानी। जे अबिवेक अंध अभिमानी ॥
तोरेहुँ धनुषु ब्याहु अवगाहा। बिनु तोरें को कुअँरि बिआहा ॥
एक बार कालुड किन होऊ। सिय हित समर जितब हम सोऊ ॥
यह सुनि अवर महिप मुसकाने। धरमसील हरिभगत सयाने ॥

सो. सीय बिआहवि राम गरब दूरि करि नृपन्ह के ॥

जीति को सक संग्राम दसरथ के रन बाँकुरे ॥ २४५ ॥

ब्यर्थ मरहु जनि गाल बजाई। मन मोदकन्हि कि भूख बुताई ॥
 सिख हमारि सुनि परम पुनीता। जगदंबा जानहु जियँ सीता ॥
 जगत पिता रघुपतिहि विचारी। भरि लोचन छवि लेहु निहारी ॥
 सुंदर सुखद सकल गुन रासी। ए दोउ बंधु संभु उर बासी ॥
 सुधा समुद्र समीप विहाई। मृगजलु निरखि मरहु कत धाई ॥
 करहु जाइ जा कहुँ जोई भावा। हम तौ आजु जनम फलु पावा ॥
 अस कहि भले भूप अनुरागे। रूप अनूप बिलोकन लागे ॥
 देखहि सुर नभ चढ़े विमाना। बरषहि सुमन करहि कल गाना ॥

दो. जानि सुअवसरु सीय तब पठई जनक बोलाई।

चतुर सखीं सुंदर सकल सादर चलीं लवाई ॥ २४६ ॥

सिय सोभा नहि जाइ बखानी। जगदंबिका रूप गुन खानी ॥
 उपमा सकल मोहि लघु लागीं। प्राकृत नारि अंग अनुरागीं ॥
 सिय बरनिअ तेइ उपमा देई। कुकवि कहाइ अजसु को लेई ॥
 जौ पटतरिअ तीय सम सीया। जग असि जुबति कहाँ कमनीया ॥
 गिरा मुखर तन अरघ भवानी। रति अति दुखित अतनु पति जानी ॥
 विष बारुनी बंधु प्रिय जेही। कहिअ रमासम किमि बैदेही ॥
 जौ छवि सुधा पयोनिधि होई। परम रूपमय कच्छप सोई ॥
 सोभा रजु मंदरु सिंगारू। मथै पानि पंकज निज मारू ॥

दो. एहि विधि उपजै लच्छि जब सुंदरता सुख मूल।

तदपि सकोच समेत कवि कहहिं सीय समतूल ॥ २४७ ॥

चलिं संग लै सखीं सयानी। गावत गीत मनोहर बानी ॥
 सोह नवल तनु सुंदर सारी। जगत जननि अतुलित छवि भारी ॥
 भूषन सकल सुदेस सुहाए। अंग अंग रचि सखिन्ह बनाए ॥
 रंगभूमि जब सिय पगु धारी। देखि रूप मोहे नर नारी ॥
 हरषि सुरन्ह टुंदुभी बजाई। बरषि प्रसून अपछरा गाई ॥
 पानि सरोज सोह जयमाला। अवचट चितए सकल भुआला ॥
 सीय चकित चित रामहि चाहा। भए मोहबस सब नरनाहा ॥
 मुनि समीप देखे दोउ भाई। लगे ललकि लोचन निधि पाई ॥

दो. गुरजन लाज समाजु बड देखि सीय सकुचानि ॥
लागि बिलोकन सखिन्ह तन रघुवीरहि उर आनि ॥ २४८ ॥

राम रूपु अरु सिय छवि देखें। नर नारिन्ह परिहरीं निमेषें ॥
सोचहिं सकल कहत सकुचाहीं। विधि सन विनय करहिं मन माहीं ॥
हरु विधि बेगि जनक जडताई। मति हमारि असि देहि सुहाई ॥
बिनु विचार पनु तजि नरनाहु। सीय राम कर करै विबाहू ॥
जग भल कहहि भाव सब काहू। हठ कीन्हे अंतहुँ उर दाहू ॥
एहिं लालसाँ मगन सब लोगू। बरु साँवरो जानकी जोगू ॥
तब बंदीजन जनक बौलाए। बिरिदावली कहत चलि आए ॥
कह नृप जाइ कहहु पन मोरा। चले भाट हियँ हरषु न थोरा ॥

दो. बोले बंदी बचन बर सुनहु सकल महिपाल।
पन विदेह कर कहहिं हम भुजा उठाइ बिसाल ॥ २४९ ॥

नृप भुजबल बिधु सिवधनु राहू। गरुअ कठोर बिदित सब काहू ॥
रावनु बानु महाभट भारे। देखि सरासन गर्वहिं सिधारे ॥
सोइ पुरारि कोदंडु कठोरा। राज समाज आजु जोइ तोरा ॥
त्रिभुवन जय समेत बैदेही ॥ बिनहिं विचार बरइ हठि तेही ॥
सुनि पन सकल भूप अभिलाषे। भटमानी अतिसय मन माखे ॥
परिकर बाँधि उठे अकुलाई। चले इष्टदेवन्ह सिर नाई ॥
तमकि ताकि तकि सिवधनु धरहीं। उठइ न कोटि भाँति बलु करहीं ॥
जिन्ह के कछु बिचारु मन माहीं। चाप समीप महीप न जाहीं ॥

दो. तमकि धरहिं धनु मूढ नृप उठइ न चलहिं लजाइ।
मनहुँ पाइ भट बाहुबलु अधिकु अधिकु गरुआइ ॥ २५० ॥

भूप सहस दस एकहि बारा। लगे उठावन टरइ न टारा ॥
डगइ न संभु सरासन कैसें। कामी बचन सती मनु जैसें ॥
सब नृप भए जोगु उपहासी। जैसें बिनु बिराग संन्यासी ॥
कीरति विजय वीरता भारी। चले चाप कर बरबस हारी ॥
श्रीहत भए हारि हियँ राजा। बैठे निज निज जाइ समाजा ॥
नृपन्ह बिलोकि जनकु अकुलाने। बोले बचन रोष जनु साने ॥
दीप दीप के भूपति नाना। आए सुनि हम जो पनु ठाना ॥

देव दनुज धरि मनुज सरीरा। विपुल बीर आए रनधीरा ॥

दो. कुअँरि मनोहर विजय बडि कीरति अति कमनीय।
पावनिहार बिरंचि जनु रचेउ न धनु दमनीय ॥ २५१ ॥

कहहु काहि यहु लाभु न भावा। काहुँ न संकर चाप चढावा ॥
रहुउ चढाउब तोरब भाई। तिलु भरि भूमि न सके छडाई ॥
अब जनि कोउ माखै भट मानी। बीर विहीन मही मैं जानी ॥
तजहु आस निज निज गृह जाहू। लिखा न विधि बैदेहि विबाहू ॥
सुकृत जाइ जौ पनु परिहरऊँ। कुअँरि कुआरि रहुउ का करऊँ ॥
जो जनतेउँ विनु भट भुवि भाई। तौ पनु करि होतेउँ न हँसाई ॥
जनक बचन सुनि सब नर नारी। देखि जानकिहि भए दुखारी ॥
माखे लखनु कुटिल भई भौहें। रदपट फरकत नयन रिसौहें ॥

दो. कहि न सकत रघुबीर डर लगे बचन जनु बान।
नाइ राम पद कमल सिरु बोले गिरा प्रमान ॥ २५२ ॥

रघुबंसिन्ह महुँ जहँ कोउ होई। तेहिँ समाज अस कहइ न कोई ॥
कही जनक जसि अनुचित बानी। विद्यमान रघुकुल मनि जानी ॥
सुनहु भानुकुल पंकज भानू। कहउँ सुभाउ न कछु अभिमानू ॥
जौ तुम्हारि अनुसासन पावौ। कंदुक इव ब्रह्मांड उठावौ ॥
काचे घट जिमि डारौ फोरी। सकउँ मेरु मूलक जिमि तोरी ॥
तव प्रताप महिमा भगवाना। को बापुरो पिनाक पुराना ॥
नाथ जानि अस आयसु होऊ। कौतुकु करौ बिलोकिअ सोऊ ॥
कमल नाल जिमि चाफ चढावौ। जोजन सत प्रमान लै धावौ ॥

दो. तोरौ छत्रक दंड जिमि तव प्रताप बल नाथ।
जौ न करौ प्रभु पद सपथ कर न धरौ धनु भाथ ॥ २५३ ॥

लखन सकोप बचन जे बोले। डगमगानि महि दिग्गज डोले ॥
सकल लोक सब भूप डेराने। सिय हियँ हरषु जनकु सकुचाने ॥
गुर रघुपति सब मुनि मन माहीं। मुदित भए पुनि पुनि पुलकाहीं ॥
सयनहिँ रघुपति लखनु नेवारे। प्रेम समेत निकट बैठारे ॥
बिस्वामित्र समय सुभ जानी। बोले अति सनेहमय बानी ॥
उठहु राम भंजहु भवचापा। मेटहु तात जनक परितापा ॥

सुनि गुरु बचन चरन सिरु नावा। हरषु विषादु न कछु उर आवा ॥
ठाढे भए उठि सहज सुभाएँ। ठवनि जुबा मृगराजु लजाएँ ॥

दो. उदित उदयगिरि मंच पर रघुवर बालपतंग।

विकसे संत सरोज सब हरषे लोचन भृंग ॥ २५४ ॥

नृपन्ह केरि आसा निसि नासी। बचन नखत अवली न प्रकासी ॥
मानी महिप कुमुद सकुचाने। कपटी भूप उलूक लुकाने ॥
भए बिसोक कोक मुनि देवा। बरिसहिं सुमन जनावहिं सेवा ॥
गुर पद बंदि सहित अनुरागा। राम मुनिन्ह सन आयसु मागा ॥
सहजहिं चले सकल जग स्वामी। मत्त मंजु बर कुंजर गामी ॥
चलत राम सब पुर नर नारी। पुलक पूरि तन भए सुखारी ॥
बंदि पितर सुर सुकृत सँभारे। जौं कछु पुन्य प्रभाउ हमारे ॥
तौ सिवधनु मृनाल की नाई। तोरहुँ राम गनेस गोसाई ॥

दो. रामहि प्रेम समेत लखि सखिन्ह समीप बोलाइ।

सीता मातु सनेह बस बचन कहइ बिलखाइ ॥ २५५ ॥

सखि सब कौतुक देखनिहारे। जेठ कहावत हितु हमारे ॥
कोउ न बुझाइ कहइ गुर पाहीं। ए बालक असि हठ भलि नाहीं ॥
रावन बान लुआ नहिं चापा। हारे सकल भूप करि दापा ॥
सो धनु राजकुअँर कर देहीं। बाल मराल कि मंदर लेहीं ॥
भूप सयानप सकल सिरानी। सखि बिधि गति कछु जाति न जानी ॥
बोली चतुर सखी मृदु बानी। तेजवंत लघु गनिअ न रानी ॥
कहँ कुंभज कहँ सिंधु अपारा। सोषेउ सुजसु सकल संसारा ॥
रवि मंडल देखत लघु लागा। उदयँ तासु तिभुवन तम भागा ॥

दो. मंत्र परम लघु जासु बस बिधि हरि हर सुर सर्व।

महामत्त गजराज कहँ बस कर अंकुस खर्व ॥ २५६ ॥

काम कुसुम धनु सायक लीन्हे। सकल भुवन अपने बस कीन्हे ॥
देवि तजिअ संसउ अस जानी। भंजब धनुष रामु सुनु रानी ॥
सखी बचन सुनि भै परतीती। मिटा विषादु बढी अति प्रीती ॥
तब रामहि बिलोकि बैदेही। सभय हृदयँ बिनवति जेहि तेही ॥
मनहीं मन मनाव अकुलानी। होहु प्रसन्न महेस भवानी ॥

करहु सफल आपनि सेवकाई। करि हितु हरहु चाप गरुआई ॥
गननायक बरदायक देवा। आजु लगें कीन्हिउँ तुअ सेवा ॥
बार बार बिनती सुनि मोरी। करहु चाप गुरुता अति थोरी ॥

दो. देखि देखि रघुवीर तन सुर मनाव धरि धीर ॥

भरे बिलोचन प्रेम जल पुलकावली सरीर ॥ २५७ ॥

नीकें निरखि नयन भरि सोभा। पितु पनु सुमिरि बहुरि मनु छोभा ॥
अहह तात दारुनि हठ ठानी। समुझत नहिं कछु लाभु न हानी ॥
सचिव सभय सिख देइ न कोई। बुध समाज बड अनुचित होई ॥
कहँ धनु कुलिसहु चाहि कठोरा। कहँ स्यामल मृदुगात किसोरा ॥
बिधि केहि भाँति धरौं उर धीरा। सिरस सुमन कन बेधिअ हीरा ॥
सकल सभा कै मति भै भोरी। अब मोहि संभुचाप गति तोरी ॥
निज जडता लोगन्ह पर डारी। होहि हरुअ रघुपतिहि निहारी ॥
अति परिताप सीय मन माही। लव निमेष जुग सब सय जाहीं ॥

दो. प्रभुहि चितइ पुनि चितव महि राजत लोचन लोल।

खेलत मनसिज मीन जुग जनु विधु मंडल डोल ॥ २५८ ॥

गिरा अलिनि मुख पंकज रोकी। प्रगट न लाज निसा अवलोकी ॥
लोचन जलु रह लोचन कोना। जैसे परम कृपन कर सोना ॥
सकुची व्याकुलता बडि जानी। धरि धीरजु प्रतीति उर आनी ॥
तन मन बचन मोर पनु साचा। रघुपति पद सरोज चितु राचा ॥
तौ भगवानु सकल उर बासी। करिहिं मोहि रघुवर कै दासी ॥
जेहि कें जेहि पर सत्य सनेहू। सो तेहि मिलइ न कछु संहेहू ॥
प्रभु तन चितइ प्रेम तन ठाना। कृपानिधान राम सबु जाना ॥
सियहि बिलोकि तकेउ धनु कैसे। चितव गरुरु लघु ब्यालहि जैसे ॥

दो. लखन लखेउ रघुवंसमनि ताकेउ हर कोदंडु।

पुलकि गात बोले बचन चरन चापि ब्रह्मांडु ॥ २५९ ॥

दिसकुंजरहु कमठ अहि कोला। धरहु धरनि धरि धीर न डोला ॥
रामु चहहिं संकर धनु तोरा। होहु सजग सुनि आयसु मोरा ॥
चाप सपीप रामु जब आए। नर नारिन्ह सुर सुकृत मनाए ॥
सब कर संसउ अरु अग्यानु। मंद महीपन्ह कर अभिमानू ॥

भृगुपति केरि गरब गरुआई। सुर मुनिवरन्ह केरि कदराई ॥
सिय कर सोचु जनक पछितावा। रानिन्ह कर दारुन दुख दावा ॥
संभुचाप बड बोहितु पाई। चढे जाइ सब संगु बनाई ॥
राम बाहुबल सिंधु अपारू। चहत पारु नहि कोउ कडहारू ॥

दो. राम बिलोके लोग सब चित्र लिखे से देखि।

चितई सीय कृपायतन जानी बिकल बिसेषि ॥ २६० ॥

देखी बिपुल बिकल बैदेही। निमिष बिहात कल्प सम तेही ॥
तुषित बारि बिनु जो तनु त्यागा। मुएँ करइ का सुधा तडागा ॥
का बरषा सब कृषी सुखानें। समय चुकें पुनि का पछितानें ॥
अस जियँ जानि जानकी देखी। प्रभु पुलके लखि प्रीति बिसेषी ॥
गुरहि प्रनामु मनहि मन कीन्हा। अति लाघवँ उठाइ धनु लीन्हा ॥
दमकेउ दामिनि जिमि जब लयऊ। पुनि नभ धनु मंडल सम भयऊ ॥
लेत चढावत खँचत गाढ़ें। काहुँ न लखा देख सबु ठाढ़ें ॥
तेहि छन राम मध्य धनु तोरा। भरे भुवन धुनि घोर कठोरा ॥

छं. भरे भुवन घोर कठोर रव रबि बाजि तजि मारगु चले।

चिक्करहि दिग्गज डोल महि अहि कोल कूरुम कलमले ॥

सुर असुर मुनि कर कान दीन्हें सकल बिकल बिचारहीं।

कोदंड खंडेउ राम तुलसी जयति बचन उचारही ॥

सो. संकर चापु जहाजु सागरु रघुवर बाहुबलु।

बूड सो सकल समाजु चढा जो प्रथमहिँ मोह बस ॥ २६१ ॥

प्रभु दोउ चापखंड महि डारे। देखि लोग सब भए सुखारे ॥

कोसिकरुप पयोनिधि पावन। प्रेम बारि अवगाहु सुहावन ॥

रामरूप राकेसु निहारी। बढत बीचि पुलकावलि भारी ॥

बाजे नभ गहगहे निसाना। देवबधू नाचहिँ करि गाना ॥

ब्रह्मादिक सुर सिद्ध मुनीसा। प्रभुहि प्रसंसहिँ देहिँ असीसा ॥

बरिसहिँ सुमन रंग बहु माला। गावहिँ किंनर गीत रसाला ॥

रही भुवन भरि जय जय बानी। धनुषभंग धुनि जात न जानी ॥

मुदित कहहिँ जहँ तहँ नर नारी। भंजेउ राम संभुधनु भारी ॥

दो. बंदी मागध सूतगन विरुद बदाहिँ मतिधीर।

करहिं निछावरि लोग सब हय गय धन मनि चीर ॥ २६२ ॥

झाँझि मृदंग संख सहनाई। भेरि ढोल दुंदुभी सुहाई ॥
 बाजहिं बहु बाजने सुहाए। जहँ तहँ जुबतिन्ह मंगल गाए ॥
 सखिन्ह सहित हरषी अति रानी। सूखत धान परा जनु पानी ॥
 जनक लहेउ सुखु सोचु बिहाई। पैरत थकें थाह जनु पाई ॥
 श्रीहत भए भूप धनु टूटे। जैसे दिवस दीप छवि छूटे ॥
 सीय सुखहि बरनिअ केहि भाँती। जनु चातकी पाइ जलु स्वाती ॥
 रामहि लखनु बिलोकत कैसें। ससिहि चकोर किसोरकु जैसें ॥
 सतानंद तब आयसु दीन्हा। सीताँ गमनु राम पहिं कीन्हा ॥

दो. संग सखीं सुदंर चतुर गावहिं मंगलचार।

गवनी बाल मराल गति सुषमा अंग अपार ॥ २६३ ॥

सखिन्ह मध्य सिय सोहति कैसे। छविगन मध्य महाछवि जैसें ॥
 कर सरोज जयमाल सुहाई। बिस्व बिजय सोभा जेहिं छाई ॥
 तन सकोचु मन परम उछाहू। गूढ प्रेम लखि परइ न काहू ॥
 जाइ समीप राम छवि देखी। रहि जनु कुँअरि चित्र अवरेखी ॥
 चतुर सखीं लखि कहा बुझाई। पहिरावहु जयमाल सुहाई ॥
 सुनत जुगल कर माल उठाई। प्रेम बिबस पहिराइ न जाई ॥
 सोहत जनु जुग जलज सनाला। ससिहि सभीत देत जयमाला ॥
 गावहिं छवि अवलोकि सहेली। सियँ जयमाल राम उर मेली ॥

सो. रघुवर उर जयमाल देखि देव बरिसहिं सुमन।

सकुचे सकल भुआल जनु बिलोकि रवि कुमुदगन ॥ २६४ ॥

पुर अरु ब्योम बाजने बाजे। खल भए मलिन साधु सब राजे ॥
 सुर किंनर नर नाग मुनीसा। जय जय जय कहिं देहिं असीसा ॥
 नाचहिं गावहिं बिबुध बधूटीं। बार बार कुसुमांजलि छूटीं ॥
 जहँ तहँ बिप्र बेदधुनि करहीं। बंदी बिरदावलि उच्चरहीं ॥
 महि पाताल नाक जसु ब्यापा। राम बरी सिय भंजेउ चापा ॥
 करहिं आरती पुर नर नारी। देहिं निछावरि वित्त बिसारी ॥
 सोहति सीय राम कै जौरी। छवि सिंगारु मनहुँ एक ठोरी ॥
 सखीं कहहिं प्रभुपद गहु सीता। करति न चरन परस अति भीता ॥

दो. गौतम तिय गति सुरति करि नहिं परसति पग पानि।

मन बिहसे रघुबंसमनि प्रीति अलौकिक जानि ॥ २६५ ॥

तब सिय देखि भूप अभिलाषे। कूर कपूत मूढ मन माखे ॥
उठि उठि पहिरि सनाह अभागो। जहँ तहँ गाल बजावन लागे ॥
लेहु छडाइ सीय कह कोऊ। धरि बाँधहु नृप बालक दोऊ ॥
तोरें धनुषु चाड नहिं सरई। जीवत हमहि कुअँरि को बरई ॥
जौं बिदेहु कछु करै सहाई। जीतहु समर सहित दोउ भाई ॥
साधु भूप बोले सुनि बानी। राजसमाजहि लाज लजानी ॥
बलु प्रतापु वीरता बडाई। नाक पिनाकहि संग सिधाई ॥
सोइ सूरता कि अब कहूँ पाई। असि बुधि तौ बिधि मुहँ मसि लाई ॥

दो. देखहु रामहि नयन भरि तजि इरिषा महु कोहु।

लखन रोषु पावकु प्रबल जानि सलभ जनि होहु ॥ २६६ ॥

बैनतेय बलि जिमि चह कागू। जिमि ससु चहै नाग अरि भागू ॥
जिमि चह कुसल अकारन कोही। सब संपदा चहै सिवद्रोही ॥
लोभी लोलुप कल कीरति चहई। अकलंकता कि कामी लहई ॥
हरि पद बिमुख परम गति चाहा। तस तुम्हार लालचु नरनाहा ॥
कोलाहलु सुनि सीय सकानी। सखीं लवाइ गई जहँ रानी ॥
रामु सुभायँ चले गुरु पाहीं। सिय सनेहु बरनत मन माहीं ॥
रानिन्ह सहित सोचबस सीया। अब धौं विधिहि काह करनीया ॥
भूप बचन सुनि इत उत तकहीं। लखनु राम डर बोलि न सकहीं ॥

दो. अरुन नयन भृकुटी कुटिल चितवत नृपन्ह सकोप।

मनहुँ मत्त गजगन निरखि सिंघकिसोरहि चोप ॥ २६७ ॥

खरभरु देखि विकल पुर नारीं। सब मिलि देहिं महीपन्ह गारीं ॥
तेहिं अवसर सुनि सिव धनु भंगा। आयसु भृगुकुल कमल पतंगा ॥
देखि महीप सकल सकुचाने। बाज झपट जनु लवा लुकाने ॥
गौरि सरीर भूति भल भ्राजा। भाल बिसाल त्रिपुंड विराजा ॥
सीस जटा ससिबदनु सुहावा। रिसबस कछुक अरुन होइ आवा ॥
भृकुटी कुटिल नयन रिस राते। सहजहुँ चितवत मनहुँ रिसाते ॥
वृषभ कंध उर बाहु बिसाला। चारु जनेउ माल मृगछाला ॥

कटि मुनि बसन तून दुइ बाँधें। धनु सर कर कुठारु कल काँधें ॥

दो. सांत बेषु करनी कठिन बरनि न जाइ सरुप।

धरि मुनितनु जनु वीर रसु आयउ जहँ सब भूप ॥ २६८ ॥

देखत भृगुपति बेषु कराला। उठे सकल भय विकल भुआला ॥

पितु समेत कहि कहि निज नामा। लगे करन सब दंड प्रनामा ॥

जेहि सुभायँ चितवहिँ हितु जानी। सो जानइ जनु आइ खुटानी ॥

जनक बहोरि आइ सिरु नावा। सीय बोलाइ प्रनामु करावा ॥

आसिष दीन्हि सखीं हरषानीं। निज समाज लै गई सयानीं ॥

बिस्वामित्रु मिले पुनि आई। पद सरोज मेले दोउ भाई ॥

रामु लखनु दसरथ के ढोटा। दीन्हि असीस देखि भल जोटा ॥

रामहि चितइ रहे थकि लोचन। रूप अपार मार मद मोचन ॥

दो. बहुरि बिलोकि बिदेह सन कहहु काह अति भीर ॥

पूछत जानि अजान जिमि व्यापेउ कोपु सरीर ॥ २६९ ॥

समाचार कहि जनक सुनाए। जेहि कारन महीप सब आए ॥

सुनत बचन फिरि अनत निहारे। देखे चापखंड महि डारे ॥

अति रिस बोले बचन कठोरा। कहु जड जनक धनुष कै तोरा ॥

बेगि देखवाउ मूढ न त आजू। उलटउँ महि जहँ लहि तव राजू ॥

अति डरु उतरु देत नृपु नाहीं। कुटिल भूप हरषे मन माहीं ॥

सुर मुनि नाग नगर नर नारी ॥ सोचहिँ सकल त्रास उर भारी ॥

मन पछिताति सीय महतारी। विधि अब सँवरी बात बिगारी ॥

भृगुपति कर सुभाउ सुनि सीता। अरध निमेष कल्प सम बीता ॥

दो. सभय बिलोके लोग सब जानि जानकी भीरु।

हृदयँ न हरषु विषादु कछु बोले श्रीरघुबीरु ॥ २७० ॥

मासपारायण, नवाँ विश्राम

नाथ संभुधनु भंजनिहारा। होइहि केउ एक दास तुम्हारा ॥

आयसु काह कहिअ किन मोही। सुनि रिसाइ बोले मुनि कोही ॥

सेवकु सो जो करै सेवकाई। अरि करनी करि करिअ लराई ॥

सुनहु राम जेहिँ सिवधनु तोरा। सहसबाहु सम सो रिपु मोरा ॥

सो बिलगाउ विहाइ समाजा। न त मारे जैहहिँ सब राजा ॥

सुनि मुनि बचन लखन मुसुकाने। बोले परसुधरहि अपमाने ॥
बहु धनुहीं तोरीं लरिकाई। कबहुँ न असि रिस कीन्हि गोसाई ॥
एहि धनु पर ममता केहि हेतू। सुनि रिसाइ कह भृगुकुलकेतू ॥

दो. रे नृप बालक कालवस बोलत तोहि न सँमार ॥

धनुही सम तपुरारि धनु विदित सकल संसार ॥ २७१ ॥

लखन कहा हँसि हमरें जाना। सुनहु देव सब धनुष समाना ॥
का छति लाभु जून धनु तौरें। देखा राम नयन के भोरें ॥
छुअत टूट रघुपतिहु न दोसू। मुनि विनु काज करिअ कत रोसू।
बोले चितइ परसु की ओरा। रे सठ सुनेहि सुभाउ न मोरा ॥
बालकु बोलि बधउँ नहिं तोही। केवल मुनि जड जानहि मोही ॥
बाल ब्रह्मचारी अति कोही। बिस्व विदित छत्रियकुल द्रोही ॥
भुजबल भूमि भूप विनु कीन्ही। विपुल बार महिदेवन्ह दीन्ही ॥
सहसबाहु भुज छेदनिहार। परसु बिलोकु महीपकुमारा ॥

दो. मातु पितहि जनि सोचवस करसि महीसकिसोर।

गर्भन्ह के अर्भक दलन परसु मोर अति घोर ॥ २७२ ॥

बिहसि लखनु बोले मूढु बानी। अहो मुनीसु महा भटमानी ॥
पुनि पुनि मोहि देखाव कुठारू। चहत उडावन फूँकि पहारू ॥
इहाँ कुम्हडबतिया कोउ नाही। जे तरजनी देखि मरि जाहीं ॥
देखि कुठारु सरासन बाना। मैं कछु कहा सहित अभिमाना ॥
भृगुसुत समुझि जनेउ बिलोकी। जो कछु कहहु सहउँ रिस रोकी ॥
सुर महिसुर हरिजन अरु गाई। हमरें कुल इन्ह पर न सुराई ॥
बधें पापु अपकीरति हारें। मारतहूँ पा परिअ तुम्हारें ॥
कोटि कुलिस सम बचनु तुम्हारा। व्यर्थ धरहु धनु बान कुठारा ॥

दो. जो बिलोकि अनुचित कहेउँ छमहु महामुनि धीर।

सुनि सरोष भृगुबंसमनि बोले गिरा गभीर ॥ २७३ ॥

कौसिक सुनहु मंद यहु बालकु। कुटिल कालवस निज कुल घालकु ॥
भानु बंस राकेस कलंकू। निपट निरंकुस अबुध असंकू ॥
काल कवलु होइहि छन माहीं। कहउँ पुकारि खोरि मोहि नाही ॥
तुम्ह हटकउ जौं चहहु उबारा। कहि प्रतापु बलु रोषु हमारा ॥

लखन कहेउ मुनि सुजस तुम्हारा। तुम्हहि अछत को बरनै पारा ॥
अपने मुँह तुम्ह आपनि करनी। बार अनेक भाँति बहु बरनी ॥
नहिं संतोषु त पुनि कछु कहहू। जनि रिस रोकि दुसह दुख सहहू ॥
बीरब्रती तुम्ह धीर अछोभा। गारी देत न पावहु सोभा ॥

दो. सूर समर करनी करहिं कहि न जनावहि आपु।

विद्यमान रन पाइ रिपु कायर कथहिं प्रतापु ॥ २७४ ॥

तुम्ह तौ कालु हाँक जनु लावा। बार बार मोहि लागि बोलावा ॥
सुनत लखन के बचन कठोरा। परसु सुधारि धरेउ कर घोरा ॥
अब जनि देइ दोसु मोहि लोगू। कटुबादी बालकु बधजोगू ॥
बाल बिलोकि बहुत मैं बाँचा। अब यहु मरनिहार भा साँचा ॥
कौसिक कहा छमिअ अपराधू। बाल दोष गुन गनहिं न साधू ॥
खर कुठार मैं अकरुन कोही। आगें अपराधी गुरुद्रोही ॥
उतर देत छोडउँ विनु मारें। केवल कौसिक सील तुम्हारें ॥
न त एहि काटि कुठार कठोरें। गुरहि उरिन होतेउँ श्रम थोरें ॥

दो. गाधिसूनु कह हृदयँ हँसि मुनिहि हरिअरइ सूझ।

अयमय खाँड न ऊखमय अजहुँ न बूझ अबूझ ॥ २७५ ॥

कहेउ लखन मुनि सीलु तुम्हारा। को नहि जान बिदित संसारा ॥
माता पितहि उरिन भए नीकें। गुर रिनु रहा सोचु बड जीकें ॥
सो जनु हमरेहि माथे काढा। दिन चलि गए ब्याज बड बाढा ॥
अब आनिअ व्यवहरिआ बोली। तुरत देउँ मैं थैली खोली ॥
सुनि कटु बचन कुठार सुधारा। हाय हाय सब सभा पुकारा ॥
भृगुवर परसु देखावहु मोही। विप्र विचारि बचउँ नृपद्रोही ॥
मिले न कबहुँ सुभट रन गाढे। द्विज देवता घरहि के बाढे ॥
अनुचित कहि सब लोग पुकारे। रघुपति सयनहिं लखनु नेवारे ॥

दो. लखन उतर आहुति सरिस भृगुवर कोपु कृसानु।

बढत देखि जल सम बचन बोले रघुकुलभानु ॥ २७६ ॥

नाथ करहु बालक पर छोहू। सूध दूधमुख करिअ न कोहू ॥
जौं पै प्रभु प्रभाउ कछु जाना। तौ कि बराबरि करत अयाना ॥
जौं लरिका कछु अचगारि करहीं। गुर पितु मातु मोद मन भरहीं ॥

करिअ कृपा सिसु सेवक जानी। तुम्ह सम सील धीर मुनि ग्यानी ॥
राम बचन सुनि कछुक जुडाने। कहि कछु लखनु बहुरि मुसकाने ॥
हँसत देखि नख सिख रिस ब्यापी। राम तोर भ्राता बड पापी ॥
गौर सरीर स्याम मन माहीं। कालकूटमुख पयमुख नाहीं ॥
सहज टेढ अनुहरइ न तोही। नीचु मीचु सम देख न मौहीं ॥

दो. लखन कहेउ हँसि सुनहु मुनि क्रोधु पाप कर मूल।

जेहि बस जन अनुचित करहिं चरहिं बिस्व प्रतिकूल ॥ २७७ ॥

मैं तुम्हार अनुचर मुनिराया। परिहरि कोपु करिअ अब दाया ॥
टूट चाप नहिं जुरहि रिसाने। बैठिअ होइहिं पाय पिराने ॥
जौ अति प्रिय तौ करिअ उपाई। जोरिअ कोउ बड गुनी बोलाई ॥
बोलत लखनहिं जनकु डेराहीं। मष्ट करहु अनुचित भल नाहीं ॥
थर थर कापहिं पुर नर नारी। छोट कुमार खोट बड भारी ॥
भृगुपति सुनि सुनि निरभय बानी। रिस तन जरइ होइ बल हानी ॥
बोले रामहि देइ निहोरा। बचउँ बिचारि बंधु लघु तोरा ॥
मनु मलीन तनु सुंदर कैसें। बिष रस भरा कनक घटु जैसें ॥

दो. सुनि लछिमन बिहसे बहुरि नयन तरेरे राम।

गुरु समीप गवने सकुचि परिहरि बानी वाम ॥ २७८ ॥

अति बिनीत मृदु सीतल बानी। बोले रामु जोरि जुग पानी ॥
सुनहु नाथ तुम्ह सहज सुजाना। बालक बचनु करिअ नहिं काना ॥
बररै बालक एकु सुभाऊ। इन्हहि न संत बिदूषहिं काऊ ॥
तेहिं नाहीं कछु काज बिगारा। अपराधी में नाथ तुम्हारा ॥
कृपा कोपु बधु बँधव गोसाई। मो पर करिअ दास की नाई ॥
कहिअ बेगि जेहि विधि रिस जाई। मुनिनायक सोइ करौं उपाई ॥
कह मुनि राम जाइ रिस कैसें। अजहुँ अनुज तव चितव अनैसें ॥
एहि के कंठ कुठारु न दीन्हा। तौ मैं काह कोपु करि कीन्हा ॥

दो. गर्भ स्त्रवहिं अवनिप रवनि सुनि कुठार गति घोर।

परसु अछत देखउँ जिअत बैरी भूपकिसोर ॥ २७९ ॥

बहइ न हाथु दहइ रिस छाती। भा कुठारु कुंठित नृपघाती ॥
भयउ वाम विधि फिरेउ सुभाऊ। मोरे हृदयँ कृपा कसि काऊ ॥

आजु दया दुखु दुसह सहावा। सुनि सौमित्र बिहसि सिरु नावा ॥
 बाउ कृपा मूरति अनुकूला। बोलत बचन झरत जनु फूला ॥
 जौं पै कृपाँ जरिहिं मुनि गाता। क्रोध भएँ तनु राख बिधाता ॥
 देखु जनक हठि बालक एहू। कीन्ह चहत जड जमपुर गेहू ॥
 बेगि करहु किन आँखिन्ह ओटा। देखत छोट खोट नृप ढोटा ॥
 बिहसे लखनु कहा मन माहीं। मूदें आँखि कतहुँ कोउ नाहीं ॥

दो. परसुरामु तब राम प्रति बोले उर अति क्रोधु।

संभु सरासनु तोरि सठ करसि हमार प्रबोधु ॥ २८० ॥

बंधु कहइ कटु संमत तोरें। तू छल विनय करसि कर जोरें ॥
 करु परितोषु मोर संग्रामा। नाहिं त छाड कहाउव रामा ॥
 छलु तजि करहि समरु सिवद्रोही। बंधु सहित न त मारउँ तोही ॥
 भृगुपति बकहिं कुठार उठाएँ। मन मुसकाहिं रामु सिर नाएँ ॥
 गुनह लखन कर हम पर रोषू। कतहुँ सुधाइहु ते बड दोषू ॥
 टेढ जानि सब बंदइ काहू। बक्र चंद्रमहि ग्रसइ न राहू ॥
 राम कहेउ रिस तजिअ मुनीसा। कर कुठारु आगें यह सीसा ॥
 जौंहि रिस जाइ करिअ सोइ स्वामी। मोहि जानि आपन अनुगामी ॥

दो. प्रभुहि सेवकहि समरु कस तजहु विप्रवर रोसु।

बेषु विलोकें कहेसि कछु बालकहू नहिं दोसु ॥ २८१ ॥

देखि कुठार बान धनु धारी। भै लरिकहि रिस बीरु बिचारी ॥
 नामु जान पै तुम्हहि न चीन्हा। बंस सुभायँ उतरु तौंहि दीन्हा ॥
 जौं तुम्ह औतेहु मुनि की नाई। पद रज सिर सिसु धरत गोसाई ॥
 छमहु चूक अनजानत केरी। चहिअ विप्र उर कृपा घनेरी ॥
 हमहि तुम्हहि सरिबरी कसि नाथा ॥ कहहु न कहाँ चरन कहँ माथा ॥
 राम मात्र लघु नाम हमारा। परसु सहित बड नाम तोहारा ॥
 देव एकु गुनु धनुष हमारें। नव गुन परम पुनीत तुम्हारें ॥
 सब प्रकार हम तुम्ह सन हारे। छमहु विप्र अपराध हमारे ॥

दो. बार बार मुनि विप्रवर कहा राम सन राम।

बोले भृगुपति सरुष हसि तहूँ बंधु सम बाम ॥ २८२ ॥

निपटहिं द्विज करि जानहि मोही। मैं जस विप्र सुनावउँ तोही ॥

चाप ख्रुवा सर आहुति जानू। कोप मोर अति घोर कृसानु ॥
समिधि सेन चतुरंग सुहार्द। महा महीप भए पसु आई ॥
मै एहि परसु काटि बलि दीन्है। समर जग्य जप कोटिन्ह कीन्है ॥
मोर प्रभाउ बिदित नहिँ तोरें। बोलसि निदरि विप्र के भोरें ॥
भंजेउ चापु दापु बड बाढा। अहमिति मनहुँ जीति जगु ठाढा ॥
राम कहा मुनि कहहु बिचारी। रिस अति बडि लघु चूक हमारी ॥
छुअतहिँ टूट पिनाक पुराना। मै कहि हेतु करौँ अभिमाना ॥

दो. जौँ हम निदरहिँ विप्र बदि सत्य सुनहु भृगुनाथ।

तौँ अस को जग सुभटु जेहि भय बस नावहिँ माथ ॥ २८३ ॥

देव दनुज भूपति भट नाना। समबल अधिक होउ बलवाना ॥
जौँ रन हमहि पचारै कोऊ। लरहिँ सुखेन कालु किन होऊ ॥
छत्रिय तनु धरि समर सकाना। कुल कलंकु तेहिँ पावैर आना ॥
कहउँ सुभाउ न कुलहि प्रसंसी। कालहु डरहिँ न रन रघुवंसी ॥
बिप्रवंस कै असि प्रभुताई। अभय होइ जो तुम्हहि डेराई ॥
सुनु मृदु गूढ बचन रघुपति के। उघरे पटल परसुधर मति के ॥
राम रमापति कर धनु लेहू। खैचहु मिटै मोर संदेहू ॥
देत चापु आपुहिँ चलि गयऊ। परसुराम मन बिसमय भयऊ ॥

दो. जाना राम प्रभाउ तब पुलक प्रफुल्लित गात।

जोरि पानि बोले बचन हृदयँ न प्रेमु अमात ॥ २८४ ॥

जय रघुवंस बनज बन भानू। गहन दनुज कुल दहन कृसानु ॥
जय सुर विप्र धेनु हितकारी। जय मद मोह कोह भ्रम हारी ॥
बिनय सील करुना गुन सागर। जयति बचन रचना अति नागर ॥
सेवक सुखद सुभग सब अंगा। जय सरीर छवि कोटि अनंगा ॥
करौँ काह मुख एक प्रसंसा। जय महेस मन मानस हंसा ॥
अनुचित बहुत कहेउँ अग्याता। छमहु छमामंदिर दोउ भ्राता ॥
कहि जय जय जय रघुकुलकेतू। भृगुपति गए बनहि तप हेतू ॥
अपभयँ कुटिल महीप डेराने। जहँ तहँ कायर गवँहि पारने ॥

दो. देवन्ह दीन्हीं दुंदुभीं प्रभु पर बरषहि फूल।

हरषे पुर नर नारि सब मिटी मोहमय सूल ॥ २८५ ॥

अति गहगहे बाजने बाजे। सबहिं मनोहर मंगल साजे ॥
 जूथ जूथ मिलि सुमुख सुनयनीं। करहिं गान कल कोकिलबयनी ॥
 सुखु बिदेह कर बरनि न जाई। जन्मदरिद्र मनहुँ निधि पाई ॥
 गत त्रास भइ सीय सुखारी। जनु बिधु उदयँ चकोरकुमारी ॥
 जनक कीन्ह कौसिकहि प्रनामा। प्रभु प्रसाद धनु भंजेउ रामा ॥
 मोहि कृतकृत्य कीन्ह दुहुँ भाई। अब जो उचित सो कहिअ गोसाई ॥
 कह मुनि सुनु नरनाथ प्रवीना। रहा विवाहु चाप आधीना ॥
 टूटतहीं धनु भयउ विवाहू। सुर नर नाग विदित सब काहु ॥
 दो. तदपि जाइ तुम्ह करहु अब जथा बंस व्यवहारु।

बूझि विप्र कुलवृद्ध गुर बेद विदित आचारु ॥ २८६ ॥

दूत अवधपुर पठवहु जाई। आनहिं नृप दसरथहि बोलाई ॥
 मुदित राउ कहि भलेहिं कृपाला। पठए दूत बोलि तेहि काला ॥
 बहुरि महाजन सकल बोलाए। आइ सबन्हि सादर सिर नाए ॥
 हाट बाट मंदिर सुरबासा। नगरु सँवारहु चारिहुँ पासा ॥
 हरषि चले निज निज गृह आए। पुनि परिचारक बोलि पठाए ॥
 रचहु बिचित्र बितान बनाई। सिर धरि बचन चले सचु पाई ॥
 पठए बोलि गुनी तिन्ह नाना। जे बितान बिधि कुसल सुजाना ॥
 बिधिहि बंदि तिन्ह कीन्ह अरंभा। विरचे कनक कदलि के खंभा ॥

दो. हरित मनिन्ह के पत्र फल पदुमराग के फूल।

रचना देखि बिचित्र अति मनु विरंचि कर भूल ॥ २८७ ॥

बेनि हरित मनिमय सब कीन्हे। सरल सपरब परहिं नहिं चीन्हे ॥
 कनक कलित अहिबेल बनाई। लखि नहि परइ सपरन सुहाई ॥
 तेहि के रचि पचि बंध बनाए। बिच बिच मुकता दाम सुहाए ॥
 मानिक मरकत कुलिस पिरोजा। चीरि कोरि पचि रचे सरोजा ॥
 किए भृंग बहुरंग बिहंगा। गुंजहिं कूजहिं पवन प्रसंगा ॥
 सुर प्रतिमा खंभन गढी काढी। मंगल द्रव्य लिपुँ सब ठाढी ॥
 चौकें भाँति अनेक पुराई। सिंधुर मनिमय सहज सुहाई ॥

दो. सौरभ पल्लव सुभग सुठि किए नीलमनि कोरि ॥

हेम बौर मरकत घवरि लसत पाटमय डोरि ॥ २८८ ॥

रचे रुचिर बर बंदनिबारे। मनहुँ मनोभवँ फंद सँवारे ॥
मंगल कलस अनेक बनाए। ध्वज पताक पट चमर सुहाए ॥
दीप मनोहर मनिमय नाना। जाइ न बरनि बिचित्र बिताना ॥
जेहि मंडप दुलहिनि वैदेही। सो बरनै असि मति कबि केही ॥
दूलहु रामु रूप गुन सागर। सो बितानु तिहुँ लोक उजागर ॥
जनक भवन कै सौभा जैसी। गृह गृह प्रति पुर देखिअ तैसी ॥
जेहि तेरहुति तेहि समय निहारी। तेहि लघु लगहिँ भुवन दस चारी ॥
जो संपदा नीच गृह सोहा। सो बिलोकि सुरनायक मोहा ॥

दो. बसइ नगर जेहि लच्छ करि कपट नारि बर बेषु ॥
तेहि पुर कै सोभा कहत सकुचहिँ सारद सेषु ॥ २८९ ॥

पहुँचे दूत राम पुर पावन। हरषे नगर बिलोकि सुहावन ॥
भूप द्वार तिन्ह खबरि जनाई। दसरथ नृप सुनि लिए बोलाई ॥
करि प्रनामु तिन्ह पाती दीन्ही। मुदित महीप आपु उठि लीन्ही ॥
बारि बिलोचन बाचत पाँती। पुलक गात आई भरि छाती ॥
रामु लखनु उर कर बर चीठी। रहि गए कहत न खाटी मीठी ॥
पुनि धरि धीर पत्रिका बाँची। हरषी सभा बात सुनि साँची ॥
खेलत रहे तहाँ सुधि पाई। आए भरतु सहित हित भाई ॥
पूछत अति सनेहँ सकुचाई। तात कहाँ तें पाती आई ॥

दो. कुसल प्रानप्रिय बंधु दोउ अहहिँ कहहु केहिँ देस।
सुनि सनेह साने बचन बाची बहुरि नरेस ॥ २९० ॥

सुनि पाती पुलके दोउ भ्राता। अधिक सनेहु समात न गाता ॥
प्रीति पुनीत भरत कै देखी। सकल सभाँ सुखु लहेउ बिसेषी ॥
तब नृप दूत निकट बैठारे। मधुर मनोहर बचन उचारे ॥
भैया कहहु कुसल दोउ वारे। तुम्ह नीकें निज नयन निहारे ॥
स्यामल गौर धरें धनु भाथा। बय किसोर कौसिक मुनि साथ्वा ॥
पहिचानहु तुम्ह कहहु सुभाऊ। प्रेम बिबस पुनि पुनि कह राऊ ॥
जा दिन तें मुनि गए लवाई। तब तें आजु साँचि सुधि पाई ॥
कहहु बिदेह कवन बिधि जाने। सुनि प्रिय बचन दूत मुसकाने ॥

दो. सुनहु महीपति मुकुट मनि तुम्ह सम धन्य न कोउ।

रामु लखनु जिन्ह के तनय बिस्व बिभूषन दोउ ॥ २९१ ॥

पूछन जोगु न तनय तुम्हारे। पुरुषसिंघ तिहु पुर उजिआरे ॥
जिन्ह के जस प्रताप के आगे। ससि मलीन रवि सीतल लागे ॥
तिन्ह कहँ कहिअ नाथ किमि चीन्हे। देखिअ रवि कि दीप कर लीन्हे ॥
सीय स्वयंबर भूप अनेका। समिटे सुभट एक तें एका ॥
संभु सरासनु काहुँ न टारा। हारे सकल बीर बरिआरा ॥
तीनि लोक महुँ जे भटमानी। सभ कै सकति संभु धनु भानी ॥
सकइ उठाइ सरासुर मेरू। सोउ हियँ हारि गयउ करि फेरू ॥
जेहि कौतुक सिवसैलु उठावा। सोउ तेहि सभाँ पराभउ पावा ॥

दो. तहाँ राम रघुवंस मनि सुनिअ महा महिपाल।

भंजेउ चाप प्रयास विनु जिमि गज पंकज नाल ॥ २९२ ॥

सुनि सरोष भृगुनायकु आए। बहुत भाँति तिन्ह आँखि देखाए ॥
देखि राम बलु निज धनु दीन्हा। करि बहु बिनय गवनु बन कीन्हा ॥
राजन रामु अतुलबल जैसेँ। तेज निधान लखनु पुनि तैसेँ ॥
कंपहि भूप बिलोकत जाकेँ। जिमि गज हरि किसोर के ताकेँ ॥
देव देखि तव बालक दोऊ। अब न आँखि तर आवत कोऊ ॥
दूत बचन रचना प्रिय लागी। प्रेम प्रताप बीर रस पागी ॥
सभा समेत राउ अनुरागे। दूतन्ह देन निछावरि लागे ॥
कहि अनीति ते मूढ़हि काना। धरमु बिचारि सबहिँ सुख माना ॥

दो. तब उठि भूप बसिष्ठ कहँ दीन्हि पत्रिका जाइ।

कथा सुनाई गुरहि सब सादर दूत बोलाइ ॥ २९३ ॥

सुनि बोले गुर अति सुखु पाई। पुन्य पुरुष कहँ महि सुख छाई ॥
जिमि सरिता सागर महुँ जाहीं। जद्यपि ताहि कामना नाहीं ॥
तिमि सुख संपति बिनहिँ बोलाएँ। धरमसील पहिँ जाहिँ सुभाएँ ॥
तुम्ह गुर बिप्र धेनु सुर सेबी। तसि पुनीत कौसल्या देबी ॥
सुकृती तुम्ह समान जग माहीं। भयउ न है कोउ होनेउ नाहीं ॥
तुम्ह ते अधिक पुन्य बड काकेँ। राजन राम सरिस सुत जाकेँ ॥
बीर बनीत धरम ब्रत धारी। गुन सागर बर बालक चारी ॥
तुम्ह कहँ सर्व काल कल्याना। सजहु बरात बजाइ निसाना ॥

दो. चलहु बेगि सुनि गुर बचन भलेहिं नाथ सिरु नाइ।

भूपति गवने भवन तब दूतन्ह बासु देवाइ ॥ २९४ ॥

राजा सबु रनिवास बोलाई। जनक पत्रिका बाचि सुनाई ॥
सुनि संदेसु सकल हरषानीं। अपर कथा सब भूप बखानीं ॥
प्रेम प्रफुल्लित राजहिं रानी। मनहुँ सिखिनि सुनि बारिद बनी ॥
मुदित असीस देहिं गुरु नारीं। अति आनंद मगन महतारीं ॥
लेहिं परस्पर अति प्रिय पाती। हृदयँ लगाइ जुडावहिं छाती ॥
राम लखन कै कीरति करनी। बारहिं बार भूपवर बरनी ॥
मुनि प्रसादु कहि द्वार सिधाए। रानिन्ह तब महिदेव बोलाए ॥
दिए दान आनंद समेता। चले विप्रवर आसिष देता ॥

सो. जाचक लिए हँकारि दीन्हि निछावरि कोटि विधि।

चिरु जीवहुँ सुत चारि चक्रवर्ति दसरत्थ के ॥ २९५ ॥

कहत चले पहिरें पट नाना। हरषि हने गहगहे निसाना ॥
समाचार सब लोगन्ह पाए। लागे घर घर होने बधाए ॥
भुवन चारि दस भरा उछाहू। जनकसुता रघुबीर विआहू ॥
सुनि सुभ कथा लोग अनुरागे। मग गृह गलीं सँवारन लागे ॥
जद्यपि अवध सदैव सुहावनि। राम पुरी मंगलमय पावनि ॥
तदपि प्रीति कै प्रीति सुहाई। मंगल रचना रची बनाई ॥
ध्वज पताक पट चामर चारु। छावा परम बिचित्र बजारू ॥
कनक कलस तोरन मनि जाला। हरद दूब दधि अच्छत माला ॥

दो. मंगलमय निज निज भवन लोगन्ह रचे बनाइ।

बीथीं सीचीं चतुरसम चौकें चारु पुराइ ॥ २९६ ॥

जहँ तहँ जूथ जूथ मिलि भामिनि। सजि नव सप्त सकल दुति दामिनि ॥
बिधुबदनीं मृग सावक लोचनि। निज सरुप रति मानु बिमोचनि ॥
गावहिं मंगल मंजुल बानीं। सुनिकल रव कलकंठि लजानीं ॥
भूप भवन किमि जाइ बखाना। बिस्व बिमोहन रचेउ बिताना ॥
मंगल द्रब्य मनोहर नाना। राजत बाजत विपुल निसाना ॥
कतहुँ विरिद बंदी उच्चरहीं। कतहुँ वेद धुनि भूसुर करहीं ॥
गावहिं सुंदरि मंगल गीता। लै लै नामु रामु अरु सीता ॥

बहुत उछाहु भवनु अति थोरा। मानहुँ उमगि चला चहु ओरा ॥

दो. सोभा दसरथ भवन कइ को कबि बरनै पार।

जहाँ सकल सुर सीस मनि राम लीन्ह अवतार ॥ २९७ ॥

भूप भरत पुनि लिए बोलाई। हय गय स्यंदन साजहु जाई ॥
चलहु बेगि रघुबीर बराता। सुनत पुलक पूरे दोउ आता ॥
भरत सकल साहनी बोलाए। आयसु दीन्ह मुदित उठि धाए ॥
रचि रुचि जीन तुरग तिन्ह साजे। बरन बरन बर बाजि बिराजे ॥
सुभग सकल सुठि चंचल करनी। अय इव जरत धरत पग धरनी ॥
नाना जाति न जाहिं बखाने। निदरि पवनु जनु चहत उडाने ॥
तिन्ह सब छयल भए असवारा। भरत सरिस बय राजकुमारा ॥
सब सुंदर सब भूषनधारी। कर सर चाप तून कटि भारी ॥

दो. छरे छबीले छयल सब सूर सुजान नबीन।

जुग पदचर असवार प्रति जे असिकला प्रवीन ॥ २९८ ॥

बाँधे बिरद बीर रन गाढे। निकसि भए पुर बाहेर ठाढे ॥
फेरहिं चतुर तुरग गति नाना। हरषहिं सुनि सुनि पवन निसाना ॥
रथ सारथिन्ह बिचित्र बनाए। ध्वज पताक मनि भूषन लाए ॥
चवैर चारु किंकिन धुनि करही। भानु जान सोभा अपहरही ॥
सावँकरन अगनित हय होते। ते तिन्ह रथन्ह सारथिन्ह जोते ॥
सुंदर सकल अलंकृत सोहे। जिन्हहि बिलोकत मुनि मन मोहे ॥
जे जल चलहिं थलहि की नाई। टाप न बूड बेग अधिकाई ॥
अस्त्र सस्त्र सबु साजु बनाई। रथी सारथिन्ह लिए बोलाई ॥

दो. चढि चढि रथ बाहेर नगर लागी जुरन बरात।

होत सगुन सुन्दर सबहि जो जेहि कारज जात ॥ २९९ ॥

कलित करिबरन्ह परीं अँबारीं। कहि न जाहि जेहि भाँति सँवारीं ॥
चले मत्तगज घंट बिराजी। मनहुँ सुभग सावन घन राजी ॥
बाहन अपर अनेक बिधाना। सिबिका सुभग सुखासन जाना ॥
तिन्ह चढि चले बिप्रवर बृन्दा। जनु तनु धरें सकल श्रुति छंदा ॥
मागध सूत बंदि गुनगायक। चले जान चढि जो जेहि लायक ॥
बेसर ऊँट वृषभ बहु जाती। चले बस्तु भरि अगनित भाँती ॥

कोटिन्ह काँवरि चले कहारा। विविध वस्तु को बरनै पारा ॥
चले सकल सेवक समुदाई। निज निज साजु समाजु बनाई ॥

दो. सब कैं उर निर्भर हरषु पूरित पुलक सरीर।

कबहिं देखिबे नयन भरि रामु लखनू दोउ बीर ॥ ३०० ॥

गरजहिं गज घंटा धुनि घोरा। रथ रव बाजि हिंस चहु ओरा ॥
निदरि घनहि घुर्मरहि निसाना। निज पराइ कछु सुनिअ न काना ॥
महा भीर भूपति के द्वारैं। रज होइ जाइ पषान पवारैं ॥
चढी अटारिन्ह देखहिं नारीं। लिँएँ आरती मंगल थारी ॥
गावहिं गीत मनोहर नाना। अति आनंदु न जाइ बखाना ॥
तब सुमंत्र दुइ स्पंदन साजी। जोते रवि हय निंदक बाजी ॥
दोउ रथ रुचिर भूप पहिं आने। नहिं सारद पहिं जाहिं बखाने ॥
राज समाजु एक रथ साजा। दूसर तेज पुंज अति भ्राजा ॥

दो. तेहिं रथ रुचिर बसिष्ठ कहुँ हरषि चढाइ नरेसु।

आपु चढेउ स्पंदन सुमिरि हर गुर गौरि गनेसु ॥ ३०१ ॥

सहित बसिष्ठ सोह नृप कैसैं। सुर गुर संग पुरंदर जैसैं ॥
करि कुल रीति बेद विधि राऊ। देखि सबहि सब भाँति बनाऊ ॥
सुमिरि रामु गुर आयसु पाई। चले महीपति संख बजाई ॥
हरषे विबुध बिलोकि बराता। बरषहिं सुमन सुमंगल दाता ॥
भयउ कोलाहल हय गय गाजे। ब्योम बरात बाजने बाजे ॥
सुर नर नारि सुमंगल गाई। सरस राग बाजहिं सहनाई ॥
घंट घंटी धुनि बरनि न जाहीं। सरव करहिं पाइक फहराहीं ॥
करहिं बिदूषक कौतुक नाना। हास कुसल कल गान सुजाना ॥

दो. तुरग नचावहिं कुँअर बर अकनि मृदंग निसान ॥

नागर नट चितवहिं चकित डगहिं न ताल बैधान ॥ ३०२ ॥

बनइ न बरनत बनी बराता। होहिं सगुन सुंदर सुभदाता ॥
चारा चाषु बाम दिसि लेई। मनहुँ सकल मंगल कहि देई ॥
दाहिन काग सुखेत सुहावा। नकुल दरसु सब काहुँ पावा ॥
सानुकूल बह त्रिविध बयारी। सघट सवाल आव बर नारी ॥
लोवा फिरि फिरि दरसु देखावा। सुरभी सनमुख सिसुहि पिआवा ॥

मृगमाला फिरि दाहिनि आई। मंगल गन जनु दीन्हि देखआई ॥
छेमकरी कह छेम बिसेषी। स्यामा बाम सुतरु पर देखी ॥
सनमुख आयउ दधि अरु मीना। कर पुस्तक दुइ बिप्र प्रबीना ॥

दो. मंगलमय कल्याणमय अभिमत फल दातार।

जनु सब साचे होन हित भए सगुन एक बार ॥ ३०३ ॥

मंगल सगुन सुगम सब ताकें। सगुन ब्रह्म सुंदर सुत जाकें ॥
राम सरिस बरु दुलहिनि सीता। समधी दसरथु जनकु पुनीता ॥
सुनि अस ब्याहु सगुन सब नाचे। अब कीन्हे बिरंचि हम साँचे ॥
एहि विधि कीन्ह बरात पयाना। हय गय गाजहिं हने निसाना ॥
आवत जानि भानुकुल केतू। सरितन्हि जनक बँधाए सेतू ॥
बीच बीच बर बास बनाए। सुरपुर सरिस संपदा छाए ॥
असन सयन बर बसन सुहाए। पावहिं सब निज निज मन भाए ॥
नित नूतन सुख लखि अनुकूले। सकल बरातिन्ह मंदिर भूले ॥

दो. आवत जानि बरात बर सुनि गहगहे निसान।

सजि गज रथ पदचर तुरग लेन चले अगवान ॥ ३०४ ॥

मासपारायण,दसवाँ विश्राम

कनक कलस भरि कोपर थारा। भाजन ललित अनेक प्रकारा ॥
भरे सुधासम सब पकवाने। नाना भाँति न जाहिं बखाने ॥
फल अनेक बर बस्तु सुहाई। हरषि भेंट हित भूप पठाई ॥
भूषन बसन महामनि नाना। खग मृग हय गय बहुविधि जाना ॥
मंगल सगुन सुगंध सुहाए। बहुत भाँति महिपाल पठाए ॥
दधि चिउरा उपहार अपारा। भरि भरि काँवरि चले कहारा ॥
अगवानन्ह जब दीखि बराता। उर आनंदु पुलक भर गाता ॥
देखि बनाव सहित अगवाना। मुदित बरातिन्ह हने निसाना ॥

दो. हरषि परसपर मिलन हित कछुक चले बगमेल।

जनु आनंद समुद्र दुइ मिलत बिहाइ सुबेल ॥ ३०५ ॥

बरषि सुमन सुर सुंदरि गावहिं। मुदित देव दुंदुभी बजावहिं ॥
बस्तु सकल राखीं नृप आगें। बिनय कीन्ह तिन्ह अति अनुरागें ॥
प्रेम समेत रायँ सबु लीन्हा। भै बकसीस जाचकन्हि दीन्हा ॥

करि पूजा मान्यता बडाई। जनवासे कहूँ चले लवाई ॥
बसन बिचित्र पाँवड़े परहीं। देखि धनहु धन महु परिहरहीं ॥
अति सुंदर दीन्हेउ जनवासा। जहँ सब कहूँ सब भौँति सुपासा ॥
जानी सियँ बरात पुर आई। कछु निज महिमा प्रगटि जनाई ॥
हृदयँ सुमिरि सब सिद्धि बोलाई। भूप पहुनई करन पठाई ॥

दो. सिधि सब सिय आयसु अकनि गई जहाँ जनवास।
लिपैँ संपदा सकल सुख सुरपुर भोग बिलास ॥ ३०६ ॥

निज निज बास बिलोकि बराती। सुर सुख सकल सुलभ सब भौँती ॥
बिभव भेद कछु कोउ न जाना। सकल जनक कर करहि बखाना ॥
सिय महिमा रघुनायक जानी। हरषे हृदयँ हेतु पहिचानी ॥
पितु आगमनु सुनत दोउ भाई। हृदयँ न अति आनंदु अमाई ॥
सकुचन्ह कहि न सकत गुरु पाहीं। पितु दरसन लालचु मन माहीं ॥
बिस्वामित्र बिनय बडि देखी। उपजा उर संतोषु बिसेषी ॥
हरषि बंधु दोउ हृदयँ लगाए। पुलक अंग अंबक जल छाए ॥
चले जहाँ दसरथु जनवासे। मनहुँ सरोबर तकेउ पिआसे ॥

दो. भूप बिलोके जबहिं मुनि आवत सुतन्ह समेत।
उठे हरषि सुखसिंधु महुँ चले थाह सी लेत ॥ ३०७ ॥

मुनिहि दंडवत कीन्ह महीसा। बार बार पद रज धरि सीसा ॥
कौसिक राउ लिये उर लाई। कहि असीस पूछी कुसलाई ॥
पुनि दंडवत करत दोउ भाई। देखि नृपति उर सुखु न समाई ॥
सुत हियँ लाइ दुसह दुख मेटे। मृतक सरीर प्रान जनु भैटे ॥
पुनि बसिष्ठ पद सिर तिन्ह नाए। प्रेम मुदित मुनिबर उर लाए ॥
बिप्र बृंद बंदे दुहुँ भाई। मन भावती असीसैं पाई ॥
भरत सहानुज कीन्ह प्रनामा। लिए उठाइ लाइ उर रामा ॥
हरषे लखन देखि दोउ भ्राता। मिले प्रेम परिपूरित गाता ॥

दो. पुरजन परिजन जातिजन जाचक मंत्री मीत।
मिले जथाविधि सबहि प्रभु परम कृपाल विनीत ॥ ३०८ ॥

रामहि देखि बरात जुडानी। प्रीति कि रीति न जाति बखानी ॥
नृप समीप सोहहिं सुत चारी। जनु धन धरमादिक तनुधारी ॥

सुतन्ह समेत दसरथहि देखी। मुदित नगर नर नारि विसेषी ॥
सुमन बरिसि सुर हनहिं निसाना। नाकनटीं नाचहिं करि गाना ॥
सतानंद अरु बिप्र सचिव गन। मागध सूत बिदुष बंदीजन ॥
सहित बरात राउ सनमाना। आयसु मागि फिरे अगवाना ॥
प्रथम बरात लगन तें आई। तातें पुर प्रमोदु अधिकारी ॥
ब्रह्मानंदु लोग सब लहहीं। बढ्हुं दिवस निसि विधि सन कहहीं ॥

दो. रामु सीय सोभा अवधि सुकृत अवधि दोउ राज।

जहँ जहँ पुरजन कहहिं अस मिलि नर नारि समाज ॥ ३०९ ॥

जनक सुकृत मूरति बैदेही। दसरथ सुकृत रामु धरें देही ॥
इन्ह सम काँहु न सिव अवराधे। काहिं न इन्ह समान फल लाधे ॥
इन्ह सम कोउ न भयउ जग माहीं। है नहिं कतहूँ होनेउ नाहीं ॥
हम सब सकल सुकृत कै रासी। भए जग जनमि जनकपुर बासी ॥
जिन्ह जानकी राम छवि देखी। को सुकृती हम सरिस विसेषी ॥
पुनि देखब रघुवीर विआहू। लेब भली विधि लोचन लाहू ॥
कहहिं परसपर कोकिलबयनीं। एहि विआहँ बड लाभु सुनयनीं ॥
बडें भाग विधि बात बनाई। नयन अतिथि होइहहिं दोउ भाई ॥

दो. बारहिं बार सनेह बस जनक बोलाउब सीय।

लेन आइहहिं बंधु दोउ कोटि काम कमनीय ॥ ३१० ॥

बिबिध भाँति होइहि पहुनाई। प्रिय न काहि अस सासुर माई ॥
तब तब राम लखनहि निहारी। होइहहिं सब पुर लोग सुखारी ॥
सखि जस राम लखनकर जोटा। तैसेइ भूप संग दुइ ढोटा ॥
स्याम गौर सब अंग सुहाए। ते सब कहहिं देखि जे आए ॥
कहा एक मै आजु निहारे। जनु बिरंचि निज हाथ सँवारे ॥
भरतु रामही की अनुहारी। सहसा लखि न सकहिं नर नारी ॥
लखनु सत्रुसूदनु एकरूपा। नख सिख ते सब अंग अनूपा ॥
मन भावहिं मुख बरनि न जाहीं। उपमा कहूँ त्रिभुवन कोउ नाहीं ॥

छं. उपमा न कोउ कह दास तुलसी कतहूँ कवि कोबिद कहैं।

बल बिनय बिद्या सील सोभा सिंधु इन्ह से एइ अहैं ॥

पुर नारि सकल पसारि अंचल विधिहि बचन सुनावहीं ॥

व्याहिअहुँ चारिउ भाइ एहि पुर हम सुमंगल गावहीं ॥

सो. कहहि परस्पर नारि बारि बिलोचन पुलक तन।

सखि सबु करब पुरारि पुन्य पयोनिधि भूप दोउ ॥ ३११ ॥

एहि बिधि सकल मनोरथ करहीं। आनँद उमगि उमगि उर भरहीं ॥

जे नृप सीय स्वयंबर आए। देखि बंधु सब तिन्ह सुख पाए ॥

कहत राम जसु बिसद बिसाला। निज निज भवन गए महिपाला ॥

गए बीति कुछ दिन एहि भाँती। प्रमुदित पुरजन सकल बराती ॥

मंगल मूल लगन दिनु आवा। हिम रितु अगहनु मासु सुहावा ॥

ग्रह तिथि नखतु जोगु बर बारू। लगन सोधि बिधि कीन्ह बिचारू ॥

पठै दीन्हि नारद सन सोई। गनी जनक के गनकन्ह जोई ॥

सुनी सकल लोगन्ह यह बाता। कहहिं जोतिषी आहिं बिधाता ॥

दो. धेनुधूरि बेला बिमल सकल सुमंगल मूल।

बिप्रन्ह कहेउ बिदेह सन जानि सगुन अनुकुल ॥ ३१२ ॥

उपरोहितहि कहेउ नरनाहा। अब बिलंब कर कारनु काहा ॥

सतानंद तब सचिव बोलाए। मंगल सकल साजि सब ल्याए ॥

संख निसान पनव बहु बाजे। मंगल कलस सगुन सुभ साजे ॥

सुभग सुआसिनि गावहिं गीता। करहिं बेद धुनि बिप्र पुनीता ॥

लेन चले सादर एहि भाँती। गए जहाँ जनवास बराती ॥

कोसलपति कर देखि समाजू। अति लघु लाग तिन्हहि सुरराजू ॥

भयउ समउ अब धारिअ पाऊ। यह सुनि परा निसानहिं घाऊ ॥

गुरहि पूछि करि कुल बिधि राजा। चले संग मुनि साधु समाजा ॥

दो. भाग्य बिभव अवधेस कर देखि देव ब्रह्मादि।

लगे सराहन सहस मुख जानि जनम निज वादि ॥ ३१३ ॥

सुरन्ह सुमंगल अवसरु जाना। बरषहिं सुमन बजाइ निसाना ॥

सिव ब्रह्मादिक बिबुध बरूथा। चढे बिमानन्हि नाना जूथा ॥

प्रेम पुलक तन हृदयँ उछाहू। चले बिलोकन राम बिआहू ॥

देखि जनकपुरु सुर अनुरागे। निज निज लोक सबहिं लघु लागे ॥

चित्तवहिं चकित बिचित्र बिताना। रचना सकल अलौकिक नाना ॥

नगर नारि नर रूप निधाना। सुघर सुधरम सुसील सुजाना ॥

तिन्हहि देखि सब सुर सुरनारीं। भए नखत जनु विधु उजिआरीं ॥
विधिहि भयह आचरजु बिसेषी। निज करनी कछु कतहुँ न देखी ॥

दो. सिवँ समुझाए देव सब जनि आचरज भुलाहु।
हृदयँ बिचारहु धीर धरि सिय रघुबीर बिआहु ॥ ३१४ ॥

जिन्ह कर नामु लेत जग माहीं। सकल अमंगल मूल नसाहीं ॥
करतल होहि पदारथ चारी। तेइ सिय रामु कहेउ कामारी ॥
एहि विधि संभु सुरन्ह समुझावा। पुनि आगें बर बसह चलावा ॥
देवन्ह देखे दसरथु जाता। महामोद मन पुलकित गाता ॥
साधु समाज संग महिदेवा। जनु तनु धरें करहि सुख सेवा ॥
सोहत साथ सुभग सुत चारी। जनु अपबरग सकल तनुधारी ॥
मरकत कनक बरन बर जोरी। देखि सुरन्ह भै प्रीति न थोरी ॥
पुनि रामहि बिलोकि हियँ हरषे। नृपहि सराहि सुमन तिन्ह बरषे ॥

दो. राम रूपु नख सिख सुभग बारहि बार निहारि।
पुलक गात लोचन सजल उमा समेत पुरारि ॥ ३१५ ॥

केकि कंठ दुति स्यामल अंगा। तडित विनिंदक बसन सुरंग्गा ॥
ब्याह बिभूषन बिबिध बनाए। मंगल सब सब भाँति सुहाए ॥
सरद विमल विधु बदन सुहावन। नयन नवल राजीव लजावन ॥
सकल अलौकिक सुंदरताई। कहि न जाइ मनहीं मन भाई ॥
बंधु मनोहर सोहहि संग्गा। जात नचावत चपल तुरंग्गा ॥
राजकुअँर बर बाजि देखावहिं। बंस प्रसंसक बिरिद सुनावहिं ॥
जेहि तुरंग पर रामु बिराजे। गति बिलोकि खगनायकु लाजे ॥
कहि न जाइ सब भाँति सुहावा। बाजि बेषु जनु काम बनावा ॥

छं. जनु बाजि बेषु बनाइ मनसिजु राम हित अति सोहई।
आपनें बय बल रूप गुन गति सकल भुवन बिमोहई ॥
जगमगत जीनु जराव जोति सुमोति मनि मानिक लगे।
किंकिनि ललाम लगामु ललित बिलोकि सुर नर मुनि ठगे ॥

दो. प्रभु मनसहिं लयलीन मनु चलत बाजि छवि पाव।
भूषित उडगन तडित घनु जनु बर बरहि नचाव ॥ ३१६ ॥

जेहि बर बाजि रामु असवारा। तेहि सारदउ न बरनै पारा ॥

संकरु राम रूप अनुरागे। नयन पंचदस अति प्रिय लागे ॥
हरि हित सहित रामु जब जोहे। रमा समेत रमापति मोहे ॥
निरखि राम छवि विधि हरषाने। आठइ नयन जानि पछिताने ॥
सुर सेनप उर बहुत उछाहू। विधि ते डेवढ लोचन लाहू ॥
रामहि चितव सुरेस सुजाना। गौतम श्रापु परम हित माना ॥
देव सकल सुरपतिहि सिहाहीं। आजु पुरंदर सम कोउ नाही ॥
मुदित देवगन रामहि देखी। नृपसमाज दुहुँ हरषु विसेषी ॥

छं. अति हरषु राजसमाज दुहु दिसि दुंदुभीं बाजहिं घनी।
बरषहिं सुमन सुर हरषि कहि जय जयति जय रघुकुलमनी ॥
एहि भाँति जानि बरात आवत बाजने बहु बाजहीं।
रानि सुआसिनि बोलि परिछनि हेतु मंगल साजहीं ॥

दो. सजि आरती अनेक विधि मंगल सकल सँवारि।
चलीं मुदित परिछनि करन गजगामिनि बर नारि ॥ ३१७ ॥

विधुबदनीं सब सब मृगलोचनि। सब निज तन छवि रति महु मोचनि ॥
पहिरें बरन बरन बर चीरा। सकल विभूषन सजें सरीरा ॥
सकल सुमंगल अंग बनाएँ। करहिं गान कलकंठि लजाएँ ॥
कंकन किंकिनि नूपुर बाजहिं। चालि बिलोकि काम गज लाजहिं ॥
बाजहिं बाजने विविध प्रकारा। नभ अरु नगर सुमंगलचारा ॥
सची सारदा रमा भवानी। जे सुरतिय सुचि सहज सयानी ॥
कपट नारि बर बेष बनाई। मिलीं सकल रनिवासहिं जाई ॥
करहिं गान कल मंगल बानीं। हरष विवस सब काहुँ न जानी ॥

छं. को जान केहि आनंद बस सब ब्रह्मु बर परिछन चली।
कल गान मधुर निसान बरषहिं सुमन सुर सोभा भली ॥
आनंदकंदु बिलोकि दूलहु सकल हियँ हरषित भई ॥
अंभोज अंबक अंबु उमगि सुअंग पुलकावलि छई ॥

दो. जो सुख भा सिय मातु मन देखि राम बर बेषु।
सो न सकहिं कहि कलप सत सहस सारदा सेषु ॥ ३१८ ॥

नयन नीरु हटि मंगल जानी। परिछनि करहिं मुदित मन रानी ॥
बेद बिहित अरु कुल आचारू। कीन्ह भली विधि सब व्यवहारू ॥

पंच सबद धुनि मंगल गाना। पट पाँवडे परहिं विधि नाना ॥
 करि आरती अरघु तिन्ह दीन्हा। राम गमनु मंडप तब कीन्हा ॥
 दसरथु सहित समाज बिराजे। विभव बिलोकि लोकपति लाजे ॥
 समयँ समयँ सुर बरषहिं फूला। सांति पढहिं महिसुर अनुकूला ॥
 नभ अरु नगर कोलाहल होई। आपनि पर कछु सुनइ न कोई ॥
 एहि विधि रामु मंडपहिं आए। अरघु देइ आसन बैठाए ॥

छं. बैठारि आसन आरती करि निरखि बरु सुखु पावहीं ॥
 मनि बसन भूषन भूरि वारहिं नारि मंगल गावहीं ॥
 ब्रह्मादि सुरवर विप्र बेष बनाइ कौतुक देखहीं।
 अवलोकि रघुकुल कमल रवि छवि सुफल जीवन लेखहीं ॥

दो. नाऊ बारी भाट नट राम निछावरि पाइ।

मुदित असीसहिं नाइ सिर हरषु न हृदयँ समाइ ॥ ३१९ ॥

मिले जनकु दसरथु अति प्रीतीं। करि बैदिक लौकिक सब रीतीं ॥
 मिलत महा दोउ राज बिराजे। उपमा खोजि खोजि कवि लाजे ॥
 लही न कतहुँ हारि हियँ मानी। इन्ह सम एइ उपमा उर आनी ॥
 सामध देखि देव अनुरागे। सुमन बरषि जसु गावन लागे ॥
 जगु बिरंचि उपजावा जब तें। देखे सुने ब्याह बहु तब तें ॥
 सकल भाँति सम साजु समाजू। सम समधी देखे हम आजू ॥
 देव गिरा सुनि सुंदर साँची। प्रीति अलौकिक दुहु दिसि माची ॥
 देत पाँवडे अरघु सुहाए। सादर जनकु मंडपहिं ल्याए ॥

छं. मंडपु बिलोकि विचीत्र रचनाँ रुचिरताँ मुनि मन हरे ॥
 निज पानि जनक सुजान सब कहूँ आनि सिंघासन धरे ॥
 कुल इष्ट सरिस बसिष्ट पूजे विनय करि आसिष लही।
 कौसिकहि पूजत परम प्रीति कि रीति तौ न परै कही ॥

दो. वामदेव आदिक रिषय पूजे मुदित महीस।

दिए दिव्य आसन सबहि सब सन लही असीस ॥ ३२० ॥

बहुरि कीन्ह कोसलपति पूजा। जानि ईस सम भाउ न दूजा ॥
 कीन्ह जोरि कर विनय बडाई। कहि निज भाग्य विभव बहुताई ॥
 पूजे भूपति सकल बराती। समधि सम सादर सब भाँती ॥

आसन उचित दिए सब काहू। कहौं काह मूख एक उछाहू ॥
सकल बरात जनक सनमानी। दान मान बिनती बर बानी ॥
बिधि हरि हरु दिसिपति दिनराऊ। जे जानहिं रघुबीर प्रभाऊ ॥
कपट विप्र बर बेष बनाएँ। कौतुक देखहिं अति सचु पाएँ ॥
पूजे जनक देव सम जानें। दिए सुआसन बिनु पहिचानें ॥

छं. पहिचान को केहि जान सबहिं अपान सुधि भोरी भई।
आनंद कंदु बिलोकि दूलहु उभय दिसि आनंद मई ॥
सुर लखे राम सुजान पूजे मानसिक आसन दए।
अवलोकिकि सीलु सुभाउ प्रभु को विबुध मन प्रमुदित भए ॥

दो. रामचंद्र मुख चंद्र छवि लोचन चारु चकोर।
करत पान सादर सकल प्रेमु प्रमोदु न थोर ॥ ३२१ ॥

समउ बिलोकि बसिष्ठ बोलाए। सादर सतानंदु सुनि आए ॥
बेगि कुअँरि अब आनहु जाई। चले मुदित मुनि आयसु पाई ॥
रानी सुनि उपरोहित बानी। प्रमुदित सखिन्ह समेत सयानी ॥
विप्र बधू कुलवृद्ध बोलाई। करि कुल रीति सुमंगल गाई ॥
नारि बेष जे सुर बर बामा। सकल सुभायँ सुंदरी स्यामा ॥
तिन्हहि देखि सुखु पावहिं नारीं। बिनु पहिचानि प्रानहु ते प्यारीं ॥
बार बार सनमानहिं रानी। उमा रमा सारद सम जानी ॥
सीय सँवारि समाजु बनाई। मुदित मंडपहिं चलीं लवाई ॥

छं. चलि ल्याइ सीतहि सरखीं सादर सजि सुमंगल भामिनीं।
नवसप्त साजें सुंदरी सब मत्त कुंजर गामिनीं ॥
कल गान सुनि मुनि ध्यान त्यागहिं काम कोकिल लाजहीं।
मंजीर नूपुर कलित कंकन ताल गती बर बाजहीं ॥

दो. सोहति बनिता बृंद महुँ सहज सुहावनि सीय।
छवि ललना गन मध्य जनु सुषमा तिय कमनीय ॥ ३२२ ॥

सिय सुंदरता बरनि न जाई। लघु मति बहुत मनोहरताई ॥
आवत दीखि बरातिन्ह सीता ॥ रूप रासि सब भाँति पुनीता ॥
सबहि मनहिं मन किए प्रनामा। देखि राम भए पूरनकामा ॥
हरषे दसरथ सुतन्ह समेता। कहि न जाइ उर आनंदु जेता ॥

सुर प्रनामु करि बरसहिं फूला। मुनि असीस धुनि मंगल मूला ॥
गान निसान कोलाहलु भारी। प्रेम प्रमोद मगन नर नारी ॥
एहि बिधि सीय मंडपहिं आई। प्रमुदित सांति पढहिं मुनिराई ॥
तेहि अवसर कर बिधि व्यवहारू। दुहुँ कुलगुर सब कीन्ह अचारू ॥

छं. आचारु करि गुर गौरि गनपति मुदित बिप्र पुजावहीं।
सुर प्रगटि पूजा लेहिं देहिं असीस अति सुखु पावहीं ॥
मधुपर्क मंगल द्रव्य जो जेहि समय मुनि मन महुँ चहैं।
भरे कनक कोपर कलस सो सब लिएहिं परिचारक रहैं ॥ १ ॥

कुल रीति प्रीति समेत रबि कहि देत सबु सादर कियो।
एहि भाँति देव पुजाइ सीतहि सुभग सिंघासनु दियो ॥
सिय राम अवलोकनि परसपर प्रेम काहु न लखि परै ॥
मन बुद्धि बर बानी अगोचर प्रगट कबि कैसेँ करै ॥ २ ॥

दो. होम समय तनु धरि अनलु अति सुख आहुति लेहिं।
बिप्र बेष धरि बेद सब कहि बिबाह बिधि देहिं ॥ ३२३ ॥

जनक पाटमहिषी जग जानी। सीय मातु किमि जाइ बखानी ॥
सुजसु सुकृत सुख सुदंरताई। सब समेटि बिधि रची बनाई ॥
समउ जानि मुनिबरन्ह बोलाई। सुनत सुआसिनि सादर ल्याई ॥
जनक बाम दिसि सोह सुनयना। हिमगिरि संग बनि जनु मयना ॥
कनक कलस मनि कोपर रूरे। सुचि सुंगध मंगल जल पूरे ॥
निज कर मुदित रायँ अरु रानी। धरे राम के आगें आनी ॥
पढहिं बेद मुनि मंगल बानी। गगन सुमन झरि अवसर जानी ॥
बरु बिलोकि दंपति अनुरागे। पाय पुनीत पखारन लागे ॥

छं. लागे पखारन पाय पंकज प्रेम तन पुलकावली।
नभ नगर गान निसान जय धुनि उमगि जनु चहुँ दिसि चली ॥
जे पद सरोज मनोज अरि उर सर सदैव बिराजहीं।
जे सकृत सुमिरत बिमलता मन सकल कलि मल भाजहीं ॥ १ ॥
जे परसि मुनिबनिता लही गति रही जो पातकमई।
मकरंदु जिन्ह को संभु सिर सुचिता अवधि सुर बरनई ॥

करि मधुप मन मुनि जोगिजन जे सेइ अभिमत गति लहै।
ते पद पखारत भाग्यभाजनु जनकु जय जय सब कहै ॥ २ ॥

बर कुअँरि करतल जोरि साखोचारु दोउ कुलगुर करै।
भयो पानिगहनु बिलोकि विधि सुर मनुज मुनि आँनद भरै ॥
सुखमूल दूलहु देखि दंपति पुलक तन हुलस्यो हियो।
करि लोक बेद विधानु कन्यादानु नृपभूषन कियो ॥ ३ ॥

हिमवंत जिमि गिरिजा महेसहि हरिहि श्री सागर दई।
तिमि जनक रामहि सिय समरपी बिस्व कल कीरति नई ॥
क्यों करै बिनय विदेहु कियो विदेहु मूरति सावँरी।
करि होम विधिवत गाँठि जोरी होन लागी भावँरी ॥ ४ ॥

दो. जय धुनि बंदी बेद धुनि मंगल गान निसान।

सुनि हरषहि बरषहि बिबुध सुरतरु सुमन सुजान ॥ ३२४ ॥

कुअँरु कुअँरि कल भावँरि देहीं ॥ नयन लाभु सब सादर लेहीं ॥
जाइ न बरनि मनोहर जोरी। जो उपमा कछु कहौं सो थोरी ॥
राम सीय सुंदर प्रतिछाहीं। जगमगात मनि खंभन माहीं ।
मनहुँ मदन रति धरि बहु रूपा। देखत राम बिआहु अनूपा ॥
दरस लालसा सकुच न थोरी। प्रगटत दुरत बहोरि बहोरी ॥
भए मगन सब देखनिहारे। जनक समान अपान बिसारे ॥
प्रमुदित मुनिन्ह भावँरी फेरी। नेगसहित सब रीति निबेरीं ॥
राम सीय सिर सेंदुर देहीं। सोभा कहि न जाति विधि केहीं ॥
अरुन पराग जलजु भरि नीकें। ससिहि भूष अहि लोभ अमी कें ॥
बहुरि बसिष्ठ दीन्ह अनुसासन। बरु दुलहिनि बैठे एक आसन ॥

छं. बैठे बरासन रामु जानकि मुदित मन दसरथु भए।

तनु पुलक पुनि पुनि देखि अपनें सुकृत सुरतरु फल नए ॥

भरि भुवन रहा उछाहु राम बिबाहु भा सबहीं कहा।

केहि भाँति बरनि सिरात रसना एक यहु मंगलु महा ॥ १ ॥

तब जनक पाइ बसिष्ठ आयसु ब्याह साज सँवारि कै।

माँडवी श्रुतिकीरति उरमिला कुअँरि लई हँकारि के ॥

कुसकेतु कन्या प्रथम जो गुन सील सुख सोभामई।

सब रीति प्रीति समेत करि सो ब्याहि नृप भरतहि दर्ई ॥ २ ॥

जानकी लघु भगिनी सकल सुंदरि सिरोमनि जानि कै।
सो तनय दीन्ही ब्याहि लखनहि सकल विधि सनमानि कै ॥
जेहि नामु श्रुतकीरति सुलोचनि सुमुखि सब गुन आगरी।
सो दर्ई रिपुसूदनहि भूपति रूप सील उजागरी ॥ ३ ॥

अनुरुप बर दुलहिनि परस्पर लखि सकुच हियँ हरषहीं।
सब मुदित सुंदरता सराहहिँ सुमन सुर गन बरषहीं ॥
सुंदरी सुंदर बरन्ह सह सब एक मंडप राजहीं।
जनु जीव उर चारिउ अवस्था बिमुन सहित विराजहीं ॥ ४ ॥

दो. मुदित अवधपति सकल सुत बधुन्ह समेत निहारि।
जनु पार महिपाल मनि क्रियन्ह सहित फल चारि ॥ ३२५ ॥

जसि रघुवीर ब्याह विधि बरनी। सकल कुअँर ब्याहे तेहिँ करनी ॥
कहि न जाइ कछु दाइज भूरी। रहा कनक मनि मंडपु पूरी ॥
कंबल बसन बिचित्र पटोरे। भाँति भाँति बहु मोल न थोरे ॥
गज रथ तुरग दास अरु दासी। धेनु अलंकृत कामदुहा सी ॥
बस्तु अनेक करिअ किमि लेखा। कहि न जाइ जानहिँ जिन्ह देखा ॥
लोकपाल अवलोकि सिहाने। लीन्ह अवधपति सब सुखु माने ॥
दीन्ह जाचकन्हि जो जेहि भावा। उबरा सो जनवासेहिँ आवा ॥
तब कर जोरि जनकु मृदु बानी। बोले सब बरात सनमानी ॥

छं. सनमानि सकल बरात आदर दान विनय बडाइ कै।
प्रमुदित महा मुनि बृंद बंदे पूजि प्रेम लडाइ कै ॥
सिरु नाइ देव मनाइ सब सन कहत कर संपुट किँएँ।
सुर साधु चाहत भाउ सिंधु कि तोष जल अंजलि दिँएँ ॥ १ ॥

कर जोरि जनकु बहोरि बंधु समेत कोसलराय सों।
बोले मनोहर बयन सानि सनेह सील सुभाय सों ॥
संबंध राजन रावरें हम बडे अब सब विधि भए।
एहि राज साज समेत सेवक जानिबे विनु गथ लए ॥ २ ॥

ए दारिका परिचारिका करि पालिबीं करुना नई।
अपराधु छमिबो बोलि पठए बहुत हौं ढीट्यो कई ॥

पुनि भानुकुलभूषन सकल सनमान निधि समधी किए।
कहि जाति नहिं बिनती परस्पर प्रेम परिपूरन हिए ॥ ३ ॥

वृंदारका गन सुमन बरिसहिं राउ जनवासेहि चले।
दुंदुभी जय धुनि बेद धुनि नभ नगर कौतूहल भले ॥
तब सखीं मंगल गान करत मुनीस आयसु पाइ कै।
दूलह दुलहिनिन्ह सहित सुंदरि चलीं कोहबर ल्याइ कै ॥ ४ ॥

दो. पुनि पुनि रामहि चितव सिय सकुचति मनु सकुचै न।
हरत मनोहर मीन छवि प्रेम पिआसे नैन ॥ ३२६ ॥

मासपारायण, ग्यारहवाँ विश्राम

स्याम सरीरु सुभायँ सुहावन। सोभा कोटि मनोज लजावन ॥
जावक जुत पद कमल सुहाए। मुनि मन मधुप रहत जिन्ह छाए ॥
पीत पुनीत मनोहर धोती। हरति बाल रवि दामिनि जोती ॥
कल किंकिनि कटि सूत्र मनोहर। बाहु बिसाल बिभूषन सुंदर ॥
पीत जनेउ महाछवि देई। कर मुद्रिका चोरि चितु लेई ॥
सोहत ब्याह साज सब साजे। उर आयत उरभूषन राजे ॥
पिअर उपरना काखासोती। दुहुँ आँचरन्हि लगे मनि मोती ॥
नयन कमल कल कुंडल काना। बदनु सकल सौंदर्ज निधाना ॥
सुंदर भृकुटि मनोहर नासा। भाल तिलकु रुचिरता निवासा ॥
सोहत मौरु मनोहर माथे। मंगलमय मुकुता मनि गाथे ॥

छं. गाथे महामनि मौर मंजुल अंग सब चित चोरहीं।
पुर नारि सुर सुंदरीं बरहि बिलोकि सब तिन तोरहीं ॥
मनि बसन भूषन वारि आरति करहिं मंगल गावहिं।
सुर सुमन बरिसहिं सूत मागध बंदि सुजसु सुनावहीं ॥ १ ॥
कोहबरहिं आने कुँअर कुँअरि सुआसिनिन्ह सुख पाइ कै।
अति प्रीति लौकिक रीति लागीं करन मंगल गाइ कै ॥
लहकौरि गौरि सिखाव रामहि सीय सन सारद कहैं।
रनिवासु हास विलास रस बस जन्म को फलु सब लहैं ॥ २ ॥
निज पानि मनि महुँ देखिअति मूरति सुरूपनिधान की।
चालति न भुजबल्ली बिलोकनि बिरह भय बस जानकी ॥

कौतुक विनोद प्रमोदु प्रेमु न जाइ कहि जानहिं अलीं।
बर कुअँरि सुंदर सकल सखीं लवाइ जनवासेहि चलीं ॥ ३ ॥

तेहि समय सुनिअ असीस जहँ तहँ नगर नभ आनँदु महा।
चिरु जिअहुँ जोरीं चारु चारयो मुदित मन सबहीं कहा ॥
जोगीन्द्र सिद्ध मुनीस देव बिलोकि प्रभु दुंदुभि हनी।
चले हरषि बरषि प्रसून निज निज लोक जय जय जय भनी ॥ ४ ॥

दो. सहित बधूटिन्ह कुअँर सब तब आए पितु पास।
सोभा मंगल मोद भरि उमगेउ जनु जनवास ॥ ३२७ ॥

पुनि जेवनार भई बहु भाँती। पठए जनक बोलाइ बराती ॥
परत पाँवडे बसन अनूपा। सुतन्ह समेत गवन कियो भूपा ॥
सादर सबके पाय पखारे। जथाजोगु पीढन्ह बैठारे ॥
धोए जनक अवधपति चरना। सीलु सनेहु जाइ नहिं बरना ॥
बहुरि राम पद पंकज धोए। जे हर हृदय कमल महुँ गोए ॥
तीनिउ भाई राम सम जानी। धोए चरन जनक निज पानी ॥
आसन उचित सबहि नृप दीन्हे। बोलि सूपकारी सब लीन्हे ॥
सादर लगे परन पनवारे। कनक कील मनि पान सँवारे ॥

दो. सूपोदन सुरभी सरपि सुंदर स्वादु पुनीत।
छन महुँ सब कें परुसि गे चतुर सुआर विनीत ॥ ३२८ ॥

पंच कवल करि जेवन लागे। गारि गान सुनि अति अनुरागे ॥
भाँति अनेक परे पकवाने। सुधा सरिस नहिं जाहिं बखाने ॥
परुसन लगे सुआर सुजाना। बिंजन विविध नाम को जाना ॥
चारि भाँति भोजन विधि गाई। एक एक विधि बरनि न जाई ॥
छरस रुचिर बिंजन बहु जाती। एक एक रस अगनित भाँती ॥
जेवँत देहिं मधुर धुनि गारी। लै लै नाम पुरुष अरु नारी ॥
समय सुहावनि गारि बिराजा। हँसत राउ सुनि सहित समाजा ॥
एहि विधि सबहीं भौजनु कीन्हा। आदर सहित आचमनु दीन्हा ॥

दो. देइ पान पूजे जनक दसरथु सहित समाज।
जनवासेहि गवने मुदित सकल भूप सिरताज ॥ ३२९ ॥

नित नूतन मंगल पुर माहीं। निमिष सरिस दिन जाभिनि जाहीं ॥

बड़े भोर भूपतिमनि जागे। जाचक गुन गन गावन लागे ॥
देखि कुअँर बर बधुन्ह समेता। किमि कहि जात मोदु मन जेता ॥
प्रातक्रिया करि गे गुरु पाहीं। महाप्रमोदु प्रेमु मन माहीं ॥
करि प्रनाम पूजा कर जोरी। बोले गिरा अमिअँ जनु बोरी ॥
तुम्हरी कृपाँ सुनहु मुनिराजा। भयउँ आजु मैँ पूरनकाजा ॥
अब सब विप्र बोलाइ गोसाईँ। देहु धेनु सब भाँति बनाई ॥
सुनि गुर करि महिपाल बडाई। पुनि पठए मुनि बृंद बोलाई ॥

दो. बामदेउ अरु देवरिषि बालमीकि जाबालि।

आए मुनिबर निकर तब कौसिकादि तपसालि ॥ ३३० ॥

दंड प्रनाम सबहि नृप कीन्हे। पूजि सप्रेम बरासन दीन्हे ॥
चारि लच्छ बर धेनु मगाई। कामसुरभि सम सील सुहाई ॥
सब विधि सकल अलंकृत कीन्हीं। मुदित महिप महिदेवन्ह दीन्हीं ॥
करत बिनय बहु विधि नरनाहू। लहेउँ आजु जग जीवन लाहू ॥
पाइ असीस महीसु अनंदा। लिए बोलि पुनि जाचक बृंदा ॥
कनक बसन मनि हय गय स्यंदन। दिए बूझि रुचि रविकुलनंदन ॥
चले पढत गावत गुन गाथा। जय जय जय दिनकर कुल नाथा ॥
एहि विधि राम बिआह उछाहू। सकइ न बरनि सहस मुख जाहू ॥

दो. बार बार कौसिक चरन सीसु नाइ कह राउ।

यह सबु सुखु मुनिराज तव कृपा कटाच्छ पसाउ ॥ ३३१ ॥

जनक सनेहु सीलु करतूती। नृपु सब भाँति सराह बिभूती ॥
दिन उठि बिदा अवधपति मागा। राखहिँ जनकु सहित अनुरागा ॥
नित नूतन आदरु अधिकार्ई। दिन प्रति सहस भाँति पहुनाई ॥
नित नव नगर अनंद उछाहू। दसरथ गवनु सोहाइ न काहू ॥
बहुत दिवस बीते एहि भाँती। जनु सनेह रजु बँधे बराती ॥
कौसिक सतानंद तब जाई। कहा बिदेह नृपहि समुझाई ॥
अब दसरथ कहँ आयसु देहू। जद्यपि छाडि न सकहु सनेहू ॥
भलेहिँ नाथ कहि सचिव बोलाए। कहि जय जीव सीस तिन्ह नाए ॥

दो. अवधनाथु चाहत चलन भीतर करहु जनाउ।

भए प्रेमबस सचिव सुनि विप्र सभासद राउ ॥ ३३२ ॥

पुरवासी सुनि चलिहि बराता। बूझत विकल परस्पर बाता ॥
 सत्य गवनु सुनि सब बिलखाने। मनहुँ साँझ सरसिज सकुचाने ॥
 जहँ जहँ आवत बसे बराती। तहँ तहँ सिद्ध चला बहु भाँती ॥
 बिबिध भाँति मेवा पकवाना। भोजन साजु न जाइ बखाना ॥
 भरि भरि बसहँ अपार कहारा। पठई जनक अनेक सुसारा ॥
 तुरग लाख रथ सहस पचीसा। सकल सँवारे नख अरु सीसा ॥
 मत्त सहस दस सिंधुर साजे। जिन्हहि देखि दिसिकुंजर लाजे ॥
 कनक बसन मनि भरि भरि जाना। महिषीं धेनु बस्तु विधि नाना ॥
 दो. दाइज अमित न सकिअ कहि दीन्ह विदेहँ बहोरि।

जो अवलोकत लोकपति लोक संपदा थोरि ॥ ३३३ ॥

सबु समाजु एहि भाँति बनाई। जनक अवधपुर दीन्ह पठाई ॥
 चलिहि बरात सुनत सब रानीं। विकल मीनगन जनु लघु पानीं ॥
 पुनि पुनि सीय गोद करि लेहीं। देइ असीस सिखावनु देहीं ॥
 होएहु संतत पियहि पिआरी। चिरु अहिबात असीस हमारी ॥
 सासु ससुर गुर सेवा करेहू। पति रुख लखि आयसु अनुसरेहू ॥
 अति सनेह बस सखीं सयानी। नारि धरम सिखवाहिं मृदु बानी ॥
 सादर सकल कुअँरि समुझाई। रानिन्ह बार बार उर लाई ॥
 बहुरि बहुरि भेटहिं महतारीं। कहहिं विरंचि रचीं कत नारीं ॥

दो. तेहि अवसर भाइन्ह सहित रामु भानु कुल केतु।

चले जनक मंदिर मुदित बिदा करावन हेतु ॥ ३३४ ॥

चारिअ भाइ सुभायँ सुहाए। नगर नारि नर देखन घाए ॥
 कोउ कह चलन चहत हहिं आजू। कीन्ह विदेह बिदा कर साजू ॥
 लेहु नयन भरि रूप निहारी। प्रिय पाहुने भूप सुत चारी ॥
 को जानै केहि सुकृत सयानी। नयन अतिथि कीन्हे विधि आनी ॥
 मरनसीलु जिमि पाव पिऊषा। सुरतरु लहै जनम कर भूखा ॥
 पाव नारकी हरिपदु जैसें। इन्ह कर दरसनु हम कहँ तैसे ॥
 निरखि राम सोभा उर धरहू। निज मन फनि मूरति मनि करहू ॥
 एहि विधि सबहि नयन फलु देता। गए कुअँर सब राज निकेता ॥

दो. रूप सिंधु सब बंधु लखि हरषि उठा रनिवासु।

करहि निछावरि आरती महा मुदित मन सासु ॥ ३३५ ॥

देखि राम छवि अति अनुरागीं। प्रेमबिबस पुनि पुनि पद लागीं ॥
रही न लाज प्रीति उर छाई। सहज सनेहु बरनि किमि जाई ॥
भाइन्ह सहित उबटि अन्हवाए। छरस असन अति हेतु जेवाँए ॥
बोले रामु सुअवसरु जानी। सील सनेह सकुचमय बानी ॥
राउ अवधपुर चहत सिधाए। विदा होन हम इहाँ पठाए ॥
मातु मुदित मन आयसु देहू। बालक जानि करब नित नेहू ॥
सुनत बचन बिलखेउ रनिवासू। बोलि न सकहिं प्रेमबस सासू ॥
हृदयँ लगाइ कुअँरि सब लीन्ही। पतिन्ह सौँपि बिनती अति कीन्ही ॥

छं. करि बिनय सिय रामहि समरपी जोरि कर पुनि पुनि कहै।
बलि जाँउ तात सुजान तुम्ह कहँ बिदित गति सब की अहै ॥
परिवार पुरजन मोहि राजहि प्रानप्रिय सिय जानिबी।
तुलसीस सीलु सनेहु लखि निज किंकरी करि मानिबी ॥

सो. तुम्ह परिपूरन काम जान सिरोमनि भावप्रिय।

जन गुन गाहक राम दोष दलन करुनायतन ॥ ३३६ ॥

अस कहि रही चरन गहि रानी। प्रेम पंक जनु गिरा समानी ॥
सुनि सनेहसानी बर बानी। बहुविधि राम सासु सनमानी ॥
राम विदा मागत कर जोरी। कीन्ह प्रनामु बहोरि बहोरी ॥
पाइ असीस बहुरि सिरु नाई। भाइन्ह सहित चले रघुराई ॥
मंजु मधुर मूरति उर आनी। भई सनेह सिथिल सब रानी ॥
पुनि धीरजु धरि कुअँरि हँकारी। बार बार भेटहिं महतारीं ॥
पहुँचावहिं फिरि मिलहिं बहोरी। बढी परस्पर प्रीति न थोरी ॥
पुनि पुनि मिलत सखिन्ह बिलगाई। बाल बच्छ जिमि धेनु लवाई ॥

दो. प्रेमबिबस नर नारि सब सखिन्ह सहित रनिवासु।

मानहुँ कीन्ह बिदेहपुर करुनाँ बिरहँ निवासु ॥ ३३७ ॥

सुक सारिका जानकी ज्याए। कनक पिंजरन्ह राखि पढाए ॥
ब्याकुल कहहिं कहाँ बैदेही। सुनि धीरजु परिहरइ न केही ॥
भए बिकल खग मृग एहि भाँति। मनुज दसा कैसें कहि जाती ॥
बंधु समेत जनकु तब आए। प्रेम उमगि लोचन जल छाए ॥

सीय बिलोकि धीरता भागी। रहे कहावत परम विरागी ॥
लीन्हि राँय उर लाइ जानकी। मिटी महामरजाद ग्यान की ॥
समुझावत सब सचिव सयाने। कीन्ह बिचारु न अवसर जाने ॥
बारहिं बार सुता उर लाई। सजि सुंदर पालकीं मगाई ॥

दो. प्रेमबिबस परिवारु सबु जानि सुलगन नरेस।

कुँअरि चढाई पालकिन्ह सुमिरे सिद्धि गनेस ॥ ३३८ ॥

बहुविधि भूप सुता समुझाई। नारिधरमु कुलरीति सिखाई ॥
दासीं दास दिए बहुतेरे। सुचि सेवक जे प्रिय सिय केरे ॥
सीय चलत ब्याकुल पुरबासी। होहिं सगुन सुभ मंगल रासी ॥
भूसुर सचिव समेत समाजा। संग चले पहुँचावन राजा ॥
समय बिलोकि बाजने बाजे। रथ गज बाजि बरातिन्ह साजे ॥
दसरथ विप्र बोलि सब लीन्हे। दान मान परिपूरन कीन्हे ॥
चरन सरोज धूरि धरि सीसा। मुदित महीपति पाइ असीसा ॥
सुमिरि गजाननु कीन्ह पयाना। मंगलमूल सगुन भए नाना ॥

दो. सुर प्रसून बरषहिं हरषि करहिं अपछरा गान।

चले अवधपति अवधपुर मुदित बजाइ निसान ॥ ३३९ ॥

नृप करि बिनय महाजन फेरे। सादर सकल मागने टेरे ॥
भूषन बसन बाजि गज दीन्हे। प्रेम पोषि ठाढे सब कीन्हे ॥
बार बार बिरिदावलि भाषी। फिरे सकल रामहि उर राखी ॥
बहुरि बहुरि कोसलपति कहहीं। जनकु प्रेमबस फिरै न चहहीं ॥
पुनि कह भूपति बचन सुहाए। फिरिअ महीस दूरि बडि आए ॥
राउ बहोरि उतरि भए ठाढे। प्रेम प्रवाह बिलोचन बाढे ॥
तब बिदेह बोले कर जोरी। बचन सनेह सुधाँ जनु बोरी ॥
करौ कवन विधि बिनय बनाई। महाराज मोहि दीन्हि बडाई ॥

दो. कोसलपति समधी सजन सनमाने सब भौंति।

मिलनि परसपर बिनय अति प्रीति न हृदयँ समाति ॥ ३४० ॥

मुनि मंडलिहि जनक सिरु नावा। आसिरबादु सबहि सन पावा ॥
सादर पुनि भेंटै जामाता। रूप सील गुन निधि सब भ्राता ॥
जोरि पंकरुह पानि सुहाए। बोले बचन प्रेम जनु जाए ॥

राम करौ केहि भाँति प्रसंसा। मुनि महेस मन मानस हंसा ॥
करहिं जोग जोगी जेहि लागी। कोहु मोहु ममता महु त्यागी ॥
व्यापकु ब्रह्म अलखु अबिनासी। चिदानंदु निरगुन गुनरासी ॥
मन समेत जेहि जान न बानी। तरकि न सकहिं सकल अनुमानी ॥
महिमा निगमु नेति कहि कहई। जो तिहुँ काल एकरस रहई ॥

दो. नयन विषय मो कहुँ भयउ सो समस्त सुख मूल।

सबइ लाभु जग जीव कहँ भएँ ईसु अनुकुल ॥ ३४१ ॥

सबहि भाँति मोहि दीन्हि बडाई। निज जन जानि लीन्ह अपनाई ॥
होहिं सहस दस सारद सेवा। करहिं कल्प कोटिक भरि लेखा ॥
मोर भाग्य राउर गुन गाथा। कहि न सिराहिं सुनहु रघुनाथा ॥
मै कछु कहउँ एक बल मोरें। तुम्ह रीझहु सनेह सुठि थोरें ॥
बार बार मागउँ कर जोरें। मनु परिहरै चरन जनि भोरें ॥
सुनि बर बचन प्रेम जनु पोषे। पूरनकाम रामु परितोषे ॥
करि बर बिनय ससुर सनमाने। पितु कौसिक बसिष्ठ सम जाने ॥
बिनती बहुरि भरत सन कीन्ही। मिलि सप्रेमु पुनि आसिष दीन्ही ॥

दो. मिले लखन रिपुसूदनहि दीन्हि असीस महीस।

भए परस्पर प्रेमबस फिरि फिरि नावहिं सीस ॥ ३४२ ॥

बार बार करि बिनय बडाई। रघुपति चले संग सब भाई ॥
जनक गहे कौसिक पद जाई। चरन रेनु सिर नयनन्ह लाई ॥
सुनु मुनीस बर दरसन तोरें। अगमु न कछु प्रतीति मन मोरें ॥
जो सुखु सुजसु लोकपति चहहीं। करत मनोरथ सकुचत अहहीं ॥
सो सुखु सुजसु सुलभ मोहि स्वामी। सब सिधि तव दरसन अनुगामी ॥
कीन्हि बिनय पुनि पुनि सिरु नाई। फिरे महीसु आसिषा पाई ॥
चली बरात निसान बजाई। मुदित छोट बड सब समुदाई ॥
रामहि निरखि ग्राम नर नारी। पाइ नयन फलु होहिं सुखारी ॥

दो. बीच बीच बर वास करि मग लोगन्ह सुख देत।

अवध समीप पुनीत दिन पहुँची आइ जनेत ॥ ३४३ ॥ ॐ

हने निसान पनव बर बाजे। भेरि संख धुनि हय गय गाजे ॥
झाँझि विरव डिंडमीं सुहाई। सरस राग बाजहिं सहनाई ॥

पुर जन आवत अकनि बराता। मुदित सकल पुलकावलि गाता ॥
 निज निज सुंदर सदन सँवारे। हाट बाट चौहट पुर द्वारे ॥
 गलीं सकल अरगजाँ सिंचाई। जहँ तहँ चौकें चारु पुराई ॥
 बना बजारु न जाइ बखाना। तोरन केतु पताक बिताना ॥
 सफल पूगफल कदलि रसाला। रोपे बकुल कदंब तमाला ॥
 लगे सुभग तरु परसत धरनी। मनिमय आलवाल कल करनी ॥

दो. विविध भाँति मंगल कलस गृह गृह रचे सँवारि।

सुर ब्रह्मादि सिहाहिं सब रघुवर पुरी निहारि ॥ ३४४ ॥

भूप भवन तेहि अवसर सोहा। रचना देखि मदन मनु मोहा ॥
 मंगल सगुन मनोहरताई। रिधि सिधि सुख संपदा सुहाई ॥
 जनु उछाह सब सहज सुहाए। तनु धरि धरि दसरथ दसरथ गृहँ छाए ॥
 देखन हेतु राम बैदेही। कहहु लालसा होहि न केही ॥
 जुथ जूथ मिलि चलीं सुआसिनि। निज छवि निदरहिं मदन विलासनि ॥
 सकल सुमंगल सजें आरती। गावहिं जनु बहु वेष भारती ॥
 भूपति भवन कोलाहलु होई। जाइ न बरनि समउ सुखु सोई ॥
 कौसल्यादि राम महतारीं। प्रेम विबस तन दसा बिसारीं ॥

दो. दिए दान बिप्रन्ह विपुल पूजि गनेस पुरारी।

प्रमुदित परम दरिद्र जनु पाइ पदारथ चारि ॥ ३४५ ॥

मोद प्रमोद विबस सब माता। चलहिं न चरन सिथिल भए गाता ॥
 राम दरस हित अति अनुरागीं। परिछनि साजु सजन सब लागीं ॥
 विविध विधान बाजने बाजे। मंगल मुदित सुमित्राँ साजे ॥
 हरद दूब दधि पल्लव फूला। पान पूगफल मंगल मूला ॥
 अच्छत अंकुर लोचन लाजा। मंजुल मंजरि तुलसि बिराजा ॥
 छुहे पुरट घट सहज सुहाए। मदन सकुन जनु नीड बनाए ॥
 सगुन सुंगध न जाहिं बखानी। मंगल सकल सजहिं सब रानी ॥
 रचीं आरतीं बहुत विधाना। मुदित करहिं कल मंगल गाना ॥

दो. कनक थार भरि मंगलन्हि कमल करन्हि लिएँ मात।

चलीं मुदित परिछनि करन पुलक पल्लवित गात ॥ ३४६ ॥

धूप धूम नभु मेचक भयऊ। सावन घन घमंडु जनु ठयऊ ॥

सुरतरु सुमन माल सुर बरषहिं। मनहुँ बलाक अवलि मनु करषहिं ॥
मंजुल मनिमय बंदनिवारे। मनहुँ पाकरिपु चाप सँवारे ॥
प्रगटहिं दुरहिं अटन्ह पर भामिनि। चारु चपल जनु दमकहिं दामिनि ॥
दुंदुभि धुनि घन गरजनि घोरा। जाचक चातक दादुर मोरा ॥
सुर सुगन्ध सुचि बरषहिं बारी। सुखी सकल ससि पुर नर नारी ॥
समउ जानी गुर आयसु दीन्हा। पुर प्रबेसु रघुकुलमनि कीन्हा ॥
सुमिरि संभु गिरजा गनराजा। मुदित महीपति सहित समाजा ॥

दो. होहिं सगुन बरषहिं सुमन सुर दुंदुभी बजाइ।

बिबुध बधू नाचहिं मुदित मंजुल मंगल गाइ ॥ ३४७ ॥

मागध सूत बंदि नट नागर। गावहिं जसु तिहु लोक उजागर ॥
जय धुनि बिमल बेद बर बानी। दस दिसि सुनिअ सुमंगल सानी ॥
बिपुल बाजने बाजन लागे। नभ सुर नगर लोग अनुरागे ॥
बने बराती बरनि न जाहीं। महा मुदित मन सुख न समाहीं ॥
पुरबासिन्ह तब राय जोहारे। देखत रामहि भए सुखारे ॥
करहिं निछावरि मनिगन चीरा। बारि बिलोचन पुलक सरीरा ॥
आरति करहिं मुदित पुर नारी। हरषहिं निरखि कुँअर बर चारी ॥
सिबिका सुभग ओहार उघारी। देखि दुलहिनिन्ह होहिं सुखारी ॥

दो. एहि विधि सबही देत सुखु आए राजदुआर।

मुदित मातु परुछनि करहिं बधुन्ह समेत कुमार ॥ ३४८ ॥

करहिं आरती बारहिं बारा। प्रेमु प्रमोदु कहै को पारा ॥
भूषन मनि पट नाना जाती ॥ करही निछावरि अगनित भाँती ॥
बधुन्ह समेत देखि सुत चारी। परमानंद मगन महतारी ॥
पुनि पुनि सीय राम छवि देखी ॥ मुदित सफल जग जीवन लेखी ॥
सखीं सीय मुख पुनि पुनि चाही। गान करहिं निज सुकृत सराही ॥
बरषहिं सुमन छनहिं छन देवा। नाचहिं गावहिं लावहिं सेवा ॥
देखि मनोहर चारिउ जोरीं। सारद उपमा सकल हँढोरीं ॥
देत न बनहिं निपट लघु लागी। एकटक रहीं रूप अनुरागीं ॥

दो. निगम नीति कुल रीति करि अरघ पाँवडे देत।

बधुन्ह सहित सुत परिछि सब चलीं लवाइ निकेत ॥ ३४९ ॥

चारि सिंघासन सहज सुहाए। जनु मनोज निज हाथ बनाए ॥
 तिन्ह पर कुअँरि कुअँर बैठारे। सादर पाय पुनित पखारे ॥
 धूप दीप नैवेद बेद बिधि। पूजे बर दुलहिनि मंगलनिधि ॥
 बारहिं बार आरती करहीं। व्यजन चारु चामर सिर ढरहीं ॥
 बस्तु अनेक निछावर होहीं। भरीं प्रमोद मातु सब सोहीं ॥
 पावा परम तत्व जनु जोगीं। अमृत लहेउ जनु संतत रोगीं ॥
 जनम रंक जनु पारस पावा। अंधहि लोचन लाभु सुहावा ॥
 मूक बदन जनु सारद छाई। मानहुँ समर सूर जय पाई ॥

दो. एहि सुख ते सत कोटि गुन पावहिं मातु अनंदु ॥

भाइन्ह सहित बिआहि घर आए रघुकुलचंदु ॥ ३५०(क) ॥

लोक रीत जननी करहिं बर दुलहिनि सकुचाहिं।

मोदु विनोदु विलोकि बड रामु मनहिं मुसकाहिं ॥ ३५०(ख) ॥

देव पितर पूजे बिधि नीकी। पूजीं सकल बासना जी की ॥
 सबहिं बंदि मागहिं बरदाना। भाइन्ह सहित राम कल्याना ॥
 अंतरहित सुर आसिष देहीं। मुदित मातु अंचल भरि लेंहीं ॥
 भूपति बोलि बराती लीन्हे। जान बसन मनि भूषन दीन्हे ॥
 आयसु पाइ राखि उर रामहि। मुदित गए सब निज निज धामहि ॥
 पुर नर नारि सकल पहिराए। घर घर बाजन लगे बधाए ॥
 जाचक जन जाचहि जोइ जोई। प्रमुदित राउ देहिं सोइ सोई ॥
 सेवक सकल बजनिआ नाना। पूरन किए दान सनमाना ॥

दो. देहिं असीस जोहारि सब गावहिं गुन गन गाथ।

तब गुर भूसुर सहित गृहँ गवनु कीन्ह नरनाथ ॥ ३५१ ॥

जो बसिष्ठ अनुसासन दीन्ही। लोक बेद बिधि सादर कीन्ही ॥
 भूसुर भीर देखि सब रानी। सादर उठीं भाग्य बड जानी ॥
 पाय पखारि सकल अन्हवाए। पूजि भली बिधि भूप जेवाँए ॥
 आदर दान प्रेम परिपोषे। देत असीस चले मन तोषे ॥
 बहु बिधि कीन्हि गाधिसुत पूजा। नाथ मोहि सम धन्य न दूजा ॥
 कीन्हि प्रसंसा भूपति भूरी। रानिन्ह सहित लीन्हि पग धूरी ॥
 भीतर भवन दीन्ह बर बासु। मन जोगवत रह नृप रनिवासू ॥

पूजे गुर पद कमल बहोरी। कीन्हि बिनय उर प्रीति न थोरी ॥

दो. बधुन्ह समेत कुमार सब रानिन्ह सहित महीसु।

पुनि पुनि बंदत गुर चरन देत असीस मुनीसु ॥ ३५२ ॥

बिनय कीन्हि उर अति अनुरागें। सुत संपदा राखि सब आगें ॥

नेगु मागि मुनिनायक लीन्ह। आसिरबादु बहुत बिधि दीन्ह ॥

उर धरि रामहि सीय समेता। हरषि कीन्ह गुर गवनु निकेता ॥

बिप्रबधू सब भूप बोलाई। चैल चारु भूषन पहिराई ॥

बहुरि बोलाइ सुआसिनि लीन्हीं। रुचि बिचारि पहिरावनि दीन्हीं ॥

नेगी नेग जोग सब लेहीं। रुचि अनुरूप भूपमनि देहीं ॥

प्रिय पाहुने पूज्य जे जाने। भूपति भली भाँति सनमाने ॥

देव देखि रघुवीर बिबाहू। बरषि प्रसून प्रसंसि उछाहू ॥

दो. चले निसान बजाइ सुर निज निज पुर सुख पाइ।

कहत परसपर राम जसु प्रेम न हृदयँ समाइ ॥ ३५३ ॥

सब बिधि सबहि समदि नरनाहू। रहा हृदयँ भरि पूरि उछाहू ॥

जहँ रनिवासु तहाँ पगु धारे। सहित बहूटिन्ह कुअँर निहारे ॥

लिए गोद करि मोद समेता। को कहि सकइ भयउ सुखु जेता ॥

बधू सप्रेम गोद बैठारीं। बार बार हियँ हरषि दुलारीं ॥

देखि समाजु मुदित रनिवासू। सब कें उर अनंद कियो बासू ॥

कहेउ भूप जिमि भयउ बिबाहू। सुनि हरषु होत सब काहू ॥

जनक राज गुन सीलु बडाई। प्रीति रीति संपदा सुहाई ॥

बहुबिधि भूप भाट जिमि बरनी। रानीं सब प्रमुदित सुनि करनी ॥

दो. सुतन्ह समेत नहाइ नृप बोलि बिप्र गुर ग्याति।

भोजन कीन्ह अनेक बिधि घरी पंच गइ राति ॥ ३५४ ॥

मंगलगान करहि बर भामिनि। भै सुखमूल मनोहर जामिनि ॥

अँचइ पान सब काहँ पाए। स्रग सुगंध भूषित छवि छाए ॥

रामहि देखि रजायसु पाई। निज निज भवन चले सिर नाई ॥

प्रेम प्रमोद बिनोदु बढाई। समउ समाजु मनोहरताई ॥

कहि न सकहि सत सारद सेसू। बेद बिरंचि महेस गनेसू ॥

सो मै कहौ कवन बिधि बरनी। भूमिनागु सिर धरइ कि धरनी ॥

नृप सब भाँति सबहि सनमानी। कहि मृदु बचन बोलाई रानी ॥
बधू लरिकनीं पर घर आई। राखेहु नयन पलक की नाई ॥

दो. लरिका श्रमित उनीद बस सयन करावहु जाइ।

अस कहि गो विश्रामगृहँ राम चरन चितु लाइ ॥ ३५५ ॥

भूप बचन सुनि सहज सुहाए। जरित कनक मनि पलँग डसाए ॥
सुभग सुरभि पय फेन समाना। कोमल कलित सुपेतीं नाना ॥
उपबरहन बर बरनि न जाहीं। स्त्रग सुगंध मनिमंदिर माहीं ॥
रतनदीप सुठि चारु चँदोवा। कहत न बनइ जान जेहिं जोवा ॥
सेज रुचिर रचि रामु उठाए। प्रेम समेत पलँग पौढाए ॥
अग्या पुनि पुनि भाइन्ह दीन्ही। निज निज सेज सयन तिन्ह कीन्ही ॥
देखि स्याम मृदु मंजुल गाता। कहहि सप्रेम बचन सब माता ॥
मारग जात भयावनि भारी। केहि बिधि तात ताडका मारी ॥

दो. घोर निसाचर बिकट भट समर गनहिं नहिं काहु ॥

मारे सहित सहाय किमि खल मारीच सुबाहु ॥ ३५६ ॥

मुनि प्रसाद बलि तात तुम्हारी। ईस अनेक करवरें टारी ॥
मख रखवारी करि दुहुँ भाई। गुरु प्रसाद सब बिद्या पाई ॥
मुनितय तरी लगत पग धूरी। कीरति रही भुवन भरि पूरी ॥
कमठ पीठि पवि कूट कठोरा। नृप समाज महुँ सिव धनु तोरा ॥
बिस्व बिजय जसु जानकि पाई। आए भवन ब्याहि सब भाई ॥
सकल अमानुष करम तुम्हारे। केवल कौसिक कृपाँ सुधारे ॥
आजु सुफल जग जनमु हमारा। देखि तात बिधुबदन तुम्हारा ॥
जे दिन गए तुम्हहि बिनु देखें। ते बिरचि जनि पारहिं लेखें ॥

दो. राम प्रतोषीं मातु सब कहि विनीत बर बैन।

सुमिरि संभु गुर बिप्र पद किए नीदवस नैन ॥ ३५७ ॥

नीदुँ बदन सोह सुठि लोना। मनहुँ साँझ सरसीरुह सोना ॥
घर घर करहि जागरन नारीं। देहिं परसपर मंगल गारीं ॥
पुरी बिराजति राजति रजनी। रानीं कहहि बिलोकहु सजनी ॥
सुंदर बधुन्ह सासु लै सोई। फनिकन्ह जनु सिरमनि उर गोई ॥
प्रात पुनीत काल प्रभु जागे। अरुनचूड बर बोलन लागे ॥

बंदि मागधन्हि गुनगन गाए। पुरजन द्वार जोहारन आए ॥
बंदि बिप्र सुर गुर पितु माता। पाइ असीस मुदित सब भ्राता ॥
जननिन्ह सादर बदन निहारे। भूपति संग द्वार पगु धारे ॥

दो. कीन्ह सौच सब सहज सुचि सरित पुनीत नहाइ।
प्रातक्रिया करि तात पहि आए चारिउ भाइ ॥ ३५८ ॥

नवान्हपारायण, तीसरा विश्राम

भूप बिलोकि लिए उर लाई। बैठै हरषि रजायसु पाई ॥
देखि रामु सब सभा जुडानी। लोचन लाभ अवधि अनुमानी ॥
पुनि बसिष्ट मुनि कौसिक आए। सुभग आसनन्हि मुनि बैठाए ॥
सुतन्ह समेत पूजि पद लागे। निरखि रामु दोउ गुर अनुरागे ॥
कहहिं बसिष्ट धरम इतिहासा। सुनहिं महीसु सहित रनिवासा ॥
मुनि मन अगम गाधिसुत करनी। मुदित बसिष्ट विपुल विधि बरनी ॥
बोले बामदेउ सब साँची। कीरति कलित लोक तिहुँ माची ॥
सुनि आनंदु भयउ सब काहू। राम लखन उर अधिक उछाहू ॥

दो. मंगल मोद उछाह नित जाहि दिवस एहि भाँति।

उमगी अवध अनंद भरि अधिक अधिक अधिकाति ॥ ३५९ ॥

सुदिन सोधि कल कंकन छौरै। मंगल मोद बिनोद न थोरै ॥
नित नव सुखु सुर देखि सिहाहीं। अवध जन्म जाचहिं विधि पाहीं ॥
बिस्वामित्रु चलन नित चहहीं। राम सप्रेम बिनय बस रहहीं ॥
दिन दिन सयगुन भूपति भाऊ। देखि सराह महामुनिराऊ ॥
मागत बिदा राउ अनुरागे। सुतन्ह समेत ठाढ़ भे आगे ॥
नाथ सकल संपदा तुम्हारी। मैं सेवकु समेत सुत नारी ॥
करब सदा लरिकनः पर छोहू। दरसन देत रहब मुनि मोहू ॥
अस कहि राउ सहित सुत रानी। परेउ चरन मुख आव न बानी ॥
दीन्ह असीस बिप्र बहु भाँती। चले न प्रीति रीति कहि जाती ॥
रामु सप्रेम संग सब भाई। आयसु पाइ फिरे पहुँचाई ॥

दो. राम रूपु भूपति भगति ब्याहु उछाहु अनंदु।

जात सराहत मनहिं मन मुदित गाधिकुलचंदु ॥ ३६० ॥

बामदेव रघुकुल गुर ग्यानी। बहुरि गाधिसुत कथा बखानी ॥

सुनि मुनि सुजसु मनहिं मन राऊ। बरनत आपन पुन्य प्रभाऊ ॥
बहुरे लोग रजायसु भयऊ। सुतन्ह समेत नृपति गृहँ गयऊ ॥
जहँ तहँ राम ब्याहु सबु गावा। सुजसु पुनीत लोक तिहँ छावा ॥
आए ब्याहि रामु घर जब तैं। बसइ अनंद अवध सब तब तैं ॥
प्रभु बिबाहँ जस भयउ उछाहू। सकहिं न बरनि गिरा अहिनाहू ॥
कबिकुल जीवनु पावन जानी ॥ राम सीय जसु मंगल खानी ॥
तेहि ते मैँ कछु कहा बखानी। करन पुनीत हेतु निज बानी ॥

छं. निज गिरा पावनि करन कारन राम जसु तुलसी कह्यो।
रघुबीर चरित अपार बारिधि पारु कवि कौनेँ लह्यो ॥
उपवीत ब्याह उछाह मंगल सुनि जे सादर गावहीं।
बैदेहि राम प्रसाद ते जन सर्वदा सुखु पावहीं ॥

सो. सिय रघुबीर बिबाहु जे सप्रेम गावहिं सुनहिं।
तिन्ह कहँ सदा उछाहु मंगलायतन राम जसु ॥ ३६१ ॥

मासपारायण, बारहवाँ विश्राम
इति श्रीमद्रामचरितमानसे सकलकलिकलुषविध्वंसने
प्रथमः सोपानः समाप्तः।
(बालकाण्ड समाप्त)

.. Shri Ram Charit Manas ..

was typeset on August 12, 2016

Please send corrections to sanskrit@cheerful.com

